तारीख़-ए-टोंक

लेखक

मोहम्मद एजाज़ खाँ

अनुवादक

डॉ. मोहम्मद रियाज़ुद्दीन खाँ

गवेषक

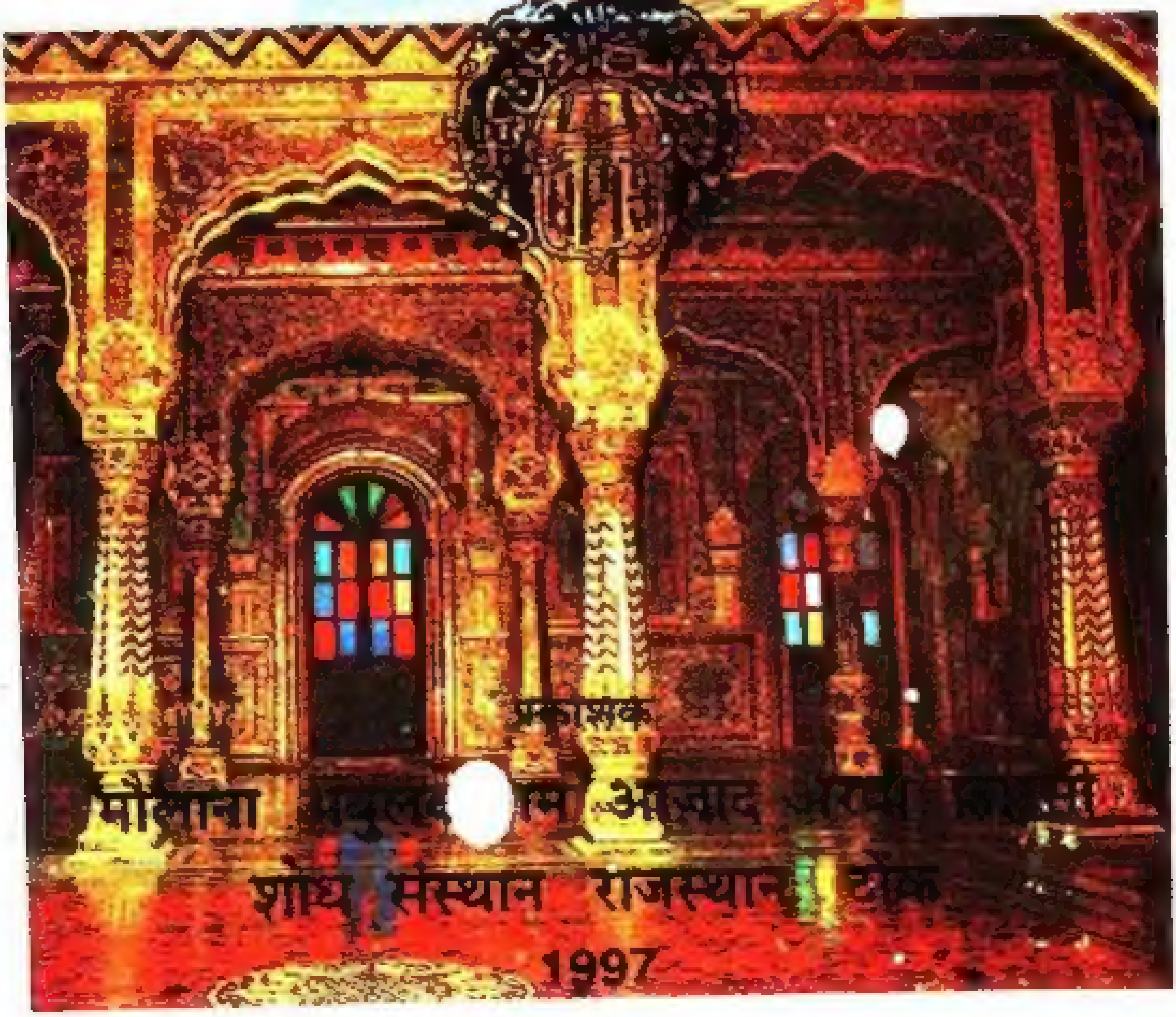

प्रकाशक

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद अरबी फ़ारसी

शोध संस्थान राजस्थान टोंक

1997

तारीख़-ए-टोंक

लेखक

मोहम्मद एजाज़ खाँ

अनुवादक

डॉ. मोहम्मद रियाज़ुद्दीन खाँ
गवेषक

प्रकाशक

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद
अरबी फ़ारसी शोध संस्थान
राजस्थान, टोंक

1997

मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान राजस्थान, टोंक

सर्वाधिकार सुरक्षित

© प्रथम संस्करण 1997

मूल्य 116/-

प्रकाशक

प्रकाशन अनुभाग
मौलाना अबुल कलाम आजाद
अरबी फारसी शोध संस्थान
राजस्थान, टोंक

कम्पोजिंग और लेसर-सेटिंग — सूर्य-गंगा कम्प्यूटर्स, सिविल-लाईन्स, टोंक

मुद्रक — एम. अमीन बुक बाईन्डिंग एण्ड प्रिन्टिंग वर्क्स अमीरगंज, टोंक के लिए कोटावाला ऑफसेट जयपुर में छपा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	अनुक्रमणिका	III
2.	दो शब्द	V
3.	प्रस्तावना	VI
4.	आभार	VIII
5.	भूमिका	IX
6.	नवाब मोहम्मद अमीर खाँ के पूर्व भारत	1
7.	नवाब मोहम्मद अमीर खाँ सन 1767 से 1834 ई०	5
8.	संघर्षमय जीवन	6
9.	मालवा में प्रारम्भिक कारनामे	9
10.	सरदार राव से युद्ध	11
11.	बाला राव से युद्ध	13
12.	जसवंत राव होल्कर से मिलना	14
13.	सागर शहर पर आक्रमण	15
14.	दुर्ग [illegible] की विजय और मोहम्मद अमीर खाँ का जसवंत राव होल्कर को सिंहासनारूढ़ करवाना	16
15.	सिरोंज पर मोहम्मद अमीर खाँ का शासकीय कब्ज़ा	16
16.	भोपाल राज्य का प्रशासनिक नियंत्रण करना	17
17.	होल्कर और नवाब का अलग होना	19
18.	अजमेर में युद्ध	19
19.	नवाब के भाई करमदीन खाँ की मृत्यु	22
20.	नवाब की योजना	23
21.	होल्कर और नवाब का सिंधिया से युद्ध और उज्जैन विजय	24
22.	पूना पर विजय	29
23.	अंग्रेज़ एवं निज़ाम की संयुक्त सेनाओं से नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का मुकाबला	32
24.	हिन्दुस्तानी सेनाओं का अंग्रेज़ों के विरुद्ध समझौता	34
25.	राजपूताना के नेतृत्व पर अंग्रेज़ों एवं होल्कर का युद्ध	35
26.	अंग्रेज़ों के अधिकार क्षेत्रों पर आक्रमण	37
27.	महाराजा सिन्धिया का अंग्रेज़ों का साथ देना	38
28.	नवाब अमीर खाँ का काबुल का लक्ष्य	38
29.	महाराजा होल्कर का अंग्रेज़ों से मिल जाना और अमीर खाँ के साथ धोखा करना	39
30.	राजपूताने में नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का दबदबा	41
31.	नागपुर का युद्ध	42

32.	अफ़ग़ानिस्तान में नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ का प्रभाव	43
33.	नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ का अन्तिम संघर्ष अभियान	43
34.	संधि-पत्र	45
35.	रईसाना जीवन (1817 – 1834 ई.)	47
36.	नवाब मोहम्मद अमीर ख़ां की विशेषताएं	48
37.	अमीर आज़म नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ का हिन्दुस्तान के इतिहास में स्थान	50
38.	नवाब अमीरुद्दौला बहादुर के नवाबी शासनकाल के प्रसिद्ध व्यक्तित्व	53
39.	वज़ीरुद्दौला अमीरुल-मुल्क नवाब मोहम्मद वज़ीर ख़ाँ बहादुर नुसरत जंग (1834 से 1865 ई.)	57
40.	नवाब वज़ीरुद्दौला बहादुर पर एक दृष्टि	61
41.	नवाब अमीरुद्दौला बहादुर के काल के प्रसिद्ध व्यक्तित्व	63
42.	यमीनुद्दौला वज़ीरुल-मुल्क नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ बहादुर सौलते जंग (1865 – 1867 ई.)	67
43.	नवाब यमीनुद्दौला बहादुर के काल के प्रसिद्ध व्यक्तित्व	70
44.	अमीनुद्दौला वज़ीरुलमुल्क नवाब हाफिज़ इब्राहीम अली ख़ाँ बहादुर सौलते जंग (1867 से 1930 ई.)	74
45.	प्रथम संवैधानिक काल के सदस्य	74
46.	द्वितीय संवैधानिक काल के सदस्य	77
47.	नवाब अमीरुद्दौला बाहदुर के शासनकाल के अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व	85
48.	सईदुद्दौला वज़ीरुल-मुल्क नवाब हाफ़िज़ सर सआदत अली ख़ाँ बहादुर (1930 – 1947 ई.)	92
49.	सईदुद्दौला बहादुर की अभिरूचियां	100
50.	नवाब सईदुद्दौला बहादुर के दौर के प्रसिद्ध व्यक्ति	105
51.	मुम्ताज़ुद्दौला वज़ीरुल-मुल्क नवाब मोहम्मद फारूक़ अली ख़ाँ, बहादुर सौलते जंग (1947 – 1948 ई.)	150
52.	हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता और जातीय विभाजन के फलस्वरूप शरणार्थियों का आगमन	154
53.	देहली में घिरे हुए टोंक के नागरिकों को सुरक्षापूर्वक टोंक लाना	154
54.	अज़ीज़ुद्दौला वज़ीरुल-मुल्क नवाब मोहम्मद इस्माईल अली ख़ाँ सौलते जंग (1948 ई.)	157
55.	फॉरमर राजस्थान की स्थापना और उस से रियासतों का एफिलिएशन	१६०
56.	अज़ीज़ुद्दौला के काल के प्रसिद्ध एवं विख्यात व्यक्तित्व	167
57.	कायस्तों की स्वर्णिम सेवाएं	167

दो शब्द

वर्ष 1986 में तत्कालीन महामहिम् राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह संस्थान में पधारे थे और उन्होंने यहां के ग्रंथों को राष्ट्रीय भाषा में अनुवाद करवाने पर बल दिया था। उनकी प्रेरणा से संस्थान ने यह कार्य आरम्भ किया और इस क्रम का यह चौथा अनुवाद स्वतंत्रता की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर संस्थान इस आशय के साथ प्रकाशित कर रहा है कि पाठकगण इस से लाभान्वित होंगे।

यह कार्य डॉ. मोहम्मद रियाज़ुद्दीन खाँ, गवेषक ने किया है, जो धन्यवाद के पात्र हैं।

(अब्दुल मोईद खाँ)
निदेशक
मौलाना अबुलकलाम आज़ाद
अरबी फ़ारसी शोध संस्थान
टोंक (राज.)

■ □ ■

प्रस्तावना

सर्व प्रथम मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह की स्तुति करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह उसके पैगम्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे-वसल्लम, उनके घरवालों साथियों और अनुसरण करने वालों पर अपनी असीम कृपा के फूल न्योछावर करता रहे। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह का शुक्र अदा करता हूं कि उसने मुझे "तारीख़-ए-टोंक" लेखक, मोहम्मद रज़ाक़ खाँ, की उर्दू पुस्तक को हिन्दी में अनुवाद करने की शक्ति प्रदान की।

लेखक ने इस पुस्तक में नवाब मोहम्मद अमीर खाँ से पूर्व के हिन्दुस्तान, टोंक रियासत की स्थापना, टोंक के सात नवाबों यथा संस्थापक नवाब मोहम्मद अमीर खाँ, नवाब वज़ीरुद्दौला, नवाब मोहम्मद अली खाँ, नवाब इब्राहीम अली खाँ, नवाब सआदत अली खाँ, नवाब मोहम्मद फारूक़ अली खाँ और नवाब मोहम्मद इस्माईल अली खाँ के जीवन, उनकी शासन व्यवस्था एवम् उनके शासन-काल के प्रमुख व्यक्तित्वों के विषय में अंकित किया है।

इसके अतिरिक्त रियासत टोंक की स्थापना से समापन तक के काल में मुस्लिम हज़रात के साथ-साथ जिन गैर-मुस्लिम हज़रात ने शासन, साहित्य, कला तथा संस्कृति में अमूल्य योगदान किया, उनका भी वर्णन है।

पुस्तक का एक तिहाई भाग से अधिक भाग रियासत टोंक के संस्थापक नवाब मोहम्मद अमीर खाँ के रोमांचक संघर्ष, वीरतापूर्ण कारनामों से भरा है जिसे पढ़कर टोंकवासियों में आत्म-सम्मान जागृत होता है। वास्तव में नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध संघर्ष, दक्षिण भारत के टीपू सुल्तान की याद दिलाता है।

नवाब अमीर खाँ द्वारा स्थापित रियासत टोंक तो कालान्तर में समाप्त होकर इतिहास के पन्नों में सिमट गयी किन्तु माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान श्री भैरों सिंह जी ने टोंक में एक "इल्मी रियासत" मौलाना अबुल कलाम आज़ाद अरबी फारसी शोध संस्थान, स्थापित करवाकर रियासत के मूल्यों को पुनः जीवित किया है। वह रियासत समाप्त हो गई किन्तु यह इल्मी रियासत सदैव जीवित रहने वाली है। जिससे विश्व के विद्वान लाभान्वित होते रहेंगे। इस संस्थान का ही कारनामा है कि उर्दू पुस्तक "तारीख़-ए-टोंक" पढ़कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि इस उर्दू पुस्तक का राष्ट्रीय भाषा में अनुवाद कर दिया जाए तो इससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा, दूसरी ओर इतिहासकारों को टोंक के इतिहास के बारे में कुछ न कुछ जानकारी अवश्य उपलब्ध होगी। मैंने जब अपने प्रस्ताव के विषय में निदेशक संस्थान से निवेदन किया कि मैं

यह कार्य करना चाहता हूँ तो इन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। फिर मैंने अल्लाह का नाम लेकर यह कार्य शुरू कर दिया और उसी की असीम कृपा से मैं यह कार्य पूर्ण भी कर सका।

मैंने अनुवाद में शुद्ध भाषा के प्रयोग के स्थान पर सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें प्रचलित उर्दू शब्दों को भी स्थान दिया है ताकि हिन्दी और उर्दू भाषा दोनों की सेवा हो सके।

संस्थान द्वारा मूल पुस्तक के विषय में किसी भी आपत्ति के दृष्टिगत संशोधन करने हेतु मुझे सलाह दी गई थी। इस क्रम में स्थानीय विद्वानों और संस्थान के मेरे अकादेमिक साथियों से लिखित एवं व्यक्तिगत सम्पर्क करने पश्चात् भी मेरे सम्मुख कोई ऐतराज प्रकट नहीं किया गया।

मैंने अपने स्तर से मूल पुस्तक में किताबत, भावार्थ, स्थानों के नाम, ऐतिहासिक चरित्रों के नाम, घटनाओं, वृतान्तों एवं व्याकरण आदि की त्रुटियों को ऐतिहासिक पुस्तकों यथा अमीरनामा (फारसी) हस्तलिखित ग्रन्थ, लेखक मुन्शी वृन्दावन लाल "शादां", इफ्तेखारुत्तवारीख (उर्दू अनुवाद एवं व्याख्या अमीरनामा) लेखक मुन्शी देवी प्रसाद "बश्शाश", टोंक का इतिहास (हिन्दी), लेखक हनुमान प्रसाद सिंहल आदि पुस्तकों से सहायता लेकर सही करने का भरसक प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त जहाँ आवश्यक हुआ मैंने अपने स्तर पर टिप्पणी/ व्याख्या भी अंकित कर दी है। मूल पुस्तक के प्रकाशन के बाद जिन व्यक्तियों का देहान्त हो गया उनमें से अधिकतम के बारे में नोट अंकित कर दिया है।

अन्त में, मैं, निदेशक का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस अनुवाद कार्य को करने की अनुमति प्रदान की। साथ ही साथ मैं सर्वश्री अमीर अहमद 'सुमन' सय्यद मन्ज़ूरुल हसन बरकाती, मोहम्मद उमर खाँ, शोध सहायक, अमजद अली खाँ, अनुवादक, जफर रज़ा खाँ, कैलीग्राफिस्ट समस्त साथीगण, मेरी पत्नी श्रीमती लतीफुन्नीसा 'निगार' और पुत्र समान प्रिय शिष्य उमेश चौधरी का आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग से मैं यह अनुवाद कार्य पूर्ण कर पाया।

स्वतन्त्रता की स्वर्णिम जयन्ति के शुभ अवसर पर संस्थान के प्रकाशन का एक और अनुवाद पाठकों को भेंट स्वरूप प्रस्तुत है। उनसे आग्रह है कि वे अपने विचार मेरे इस तीसरे प्रयास के विषय में प्रेषित करने का कष्ट करें।

डॉ. मोहम्मद रियाज़ुद्दीन खाँ

इन्तिसाब

मैं अपनी यह रचना "तारीख़-ए-टोंक" स्वतन्त्रता सेनानी और रियासत टोंक के संस्थापक अमीरुद्दौला अमीरुल-मुल्क नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ बहादुर शमशीर-जंग के नाम समर्पित करते हुए गौरव महसूस करता हूँ। जिनसे न केवल 'टोंक का इतिहास' जाना जाता है वरन् वह स्वयं 'भारतीय इतिहास' का एक ज्वलंत शीर्षक हैं।

मोहम्मद ऐजाज़ ख़ाँ

मुक़द्दमा

टोंक का इतिहास जितना रोचक है उतना ही पैचिदा और पहुँच से दूर है। पैचिदा इसलिए क्योंकि असंख्य संग्राहलय, प्रपत्र, प्रमाण-पत्र और हस्तलिखित ग्रन्थों के रूप में विद्या, इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों को छिपाए हुए गुमनामी में पड़े हुए हैं, और पहुँच से बाहर इसलिए कि किसी इतिहासकार, साहित्यिकार अथवा रचनाकार ने कोई प्रयास एवम् परिश्रम नहीं किया कि वह ऐसी ऐतिहासिक सामग्री को एकत्रित करके कोई परिणाम निकालता, इतिहास को इतिहास के प्रकाश में पढ़ता, समझता एवं अहले-नज़र[1] के सामने पेश करता। यहाँ तक कि रियासत के स्वामियों ने भी इस ओर कोई प्रयत्न नहीं किया और न ही यहाँ के बुद्धिमान् व्यक्तियों अथवा बुद्धिजीवियों ने इस रोचक अध्याय को खोला।

यदि सर्वप्रथम इस ओर ध्यान दिया है तो मुन्शी बसावन लाल 'शांदा' नायिब मीर मुन्शी नवाब अमीरूदौला बहादुर ने, जिसने "अमीर नामा" फ़ारसी में लिखकर केवल अमीर ख़ाँ के हालात एवम् वाक़ेआत (घटनाओं) एवम् कारनामों पर लाभकारी चर्चा की है। यह जीवनी है, इतिहास नहीं। एक सूरमा जियाले सुपुत्र, स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी की कथा है। किसी जाति, क्षेत्र एवम् प्रान्त का इतिहास नहीं।

इसके पश्चात् दीवान शमसुद्दीन द्वारा रचित ग्रन्थ "हफ़तादेह साला अमीर व बिस्त साला वज़ीर" टोंक के दो शासकों के शासन-काल के हालात पर आधारित है।

इसी प्रकार "महामिद-इलेया", मौलाना सैयद अहमद अली "सीमाब" की एक ऐतिहासिक पुस्तक है, जो टोंक के तीसरे शासक नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ बहादुर के संक्षिप्त स्वर्णिम युग की यादगार है।

यही हाल मौलाना सीमाब साहिब के बड़े पुत्र हकीम सैयद सईद अहमद "असद" के उर्दू अनुवाद अमीरनामे और पण्डित देवी प्रसाद "बरशाश" की "इफतेख़ारूत-तवारीख़" का है जो अमीर नामे के अनुवाद हैं जिनमें नवाब अमीर ख़ाँ के पश्चात् की ऐतिहासिक घटनाओं का भी सिंहावलोकन है।

नवाब इब्राहीम अली ख़ाँ के अन्तिम शासनकाल में गुरू अज़गर अली "आबरू" ने तारीख़े टोंक, सम्पादित की, जो इतिहास तो नहीं कही जा सकती परन्तु वर्णनात्मक

[1] पारखी।

[illegible] है यह प्रथम बार प्रकाशित [illegible] (Voluminous) [illegible] पर आधारित है। [illegible] इस प्रकार इसमें [illegible] यह [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] आवश्यकताओं के [illegible] में [illegible] [illegible][1] [illegible] है।

[illegible] [illegible][2] [illegible][3] [illegible]

[illegible] इस [illegible] अभाव [illegible] इस ओर कोई [illegible] हुई [illegible] है की कस्र इल्म, अरबी [illegible] कि मैं इस संस्थान में इस महत्वपूर्ण [illegible][4]

[I] जन साधारण तक पहुँच।
[II] तलवार के बल।
[III] प्रवाह।
[IV] यह पुस्तक [illegible] 1983 में [illegible] प्रकाशित करवा चुका है।

सन 1938 ई. टोंक के इतिहास ने [illegible]

1817 जब टोंक के इतिहास ने [illegible]

आई तब राजनैतिक इतिहास [illegible]

एक विशद और वर्णनात्मक [illegible]

एक कौन सी [illegible] विद्वान [illegible]

भी जमाती है [illegible] संक्षिप्त इतिहास [illegible]

युगों का इतिहास [illegible]

है यह इतिहास [illegible]

सम्मिलित [illegible] है [illegible]

प्रयास [illegible] है और [illegible] है और यह [illegible]

रहा है [illegible]

संस्थाओं [illegible] और [illegible]

और [illegible]

[illegible]

चलता रहेगा।

इसी संस्था ने [illegible]

का प्रकाशन करके एक [illegible]

[illegible] की आवश्यकताओं के [illegible]

ईं कार अज़ तू आयद व मरदाँ चुनीं कुनन्द।

این کار از تو آید و مرداں چنیں کنند

अर्थ—यह कार्य जो तूने किया है वह विरले ही करते हैं।

[illegible]

केवल मात्र इतिहासकार श्री [illegible]

और यह [illegible]

सन 19[illegible] ई. से अब तक सैंकड़ों [illegible]

वाले या ऐसे ही कार्यों के [illegible]

विषय में जानकारी हेतु सम्पर्क करते रहे हैं और [illegible]

कम सम्पूर्ण नहीं तो संक्षिप्त इतिहास टोंक का प्रकाशन [illegible] ताकि एक

साधारण व्यक्ति की दृष्टि में एक अध्ययन एक अवलोकन और ऐतिहासिक स्वरूप

सामने आ सके।

इस उद्देश्य के लिए मेरे गुरु श्री मोहम्मद ऐजाज़ खाँ साहिब मूरी द्वारा संकलित "तारीख़-ए-टोंक" उपरोक्त अंकित उद्देश्य को पूर्ण करती है।

यह एक विहंगम अध्ययन है लाभकारी शोध आलेख नहीं। एक प्रारम्भ है, अन्त नहीं। एक अनुकरणीय प्रयत्न है एक योजना नहीं। न ही यह मूल स्रोतों एवम् सन्दर्भों का एक विशाल भण्डार है सरल भाषा मे वास्तविक, सच्चा और सादा इतिहास है, जो वास्तविकताओं, साक्ष्यों और घटनाओं पर आधारित एक संगठित और विशाल ऐतिहासिक अवलोकन है। 131 वर्षीय टोंक के इतिहास को, शासन-कालों के अनुसार नवाब अमीर खां से अन्तिम नवाब मोहम्मद इस्माईल अली खां "ताज" तक की घटनाओ एवम् वृत्तान्तों को परिसीमन किया गया है जिसमे अधिकतम घटनाएँ फ़ारसी के ऐतिहासिक मख़तूतात से ली गई हैं और कुछ घटनाएं मुद्रित इतिहास की पुस्तकों, अमीरनामा लेखक अकबर शाह खाँ नजीबाबादी, तज़करा-ए-टोंक लेखक साहिबज़ादा अब्दुल-तव्वाब खाँ साहिब एवं "तारीख-ए-टोंक" उस्ताद आबरू से लिए गए हैं।

नवाब सआदत अली खाँ साहिब से नवाब इस्माईल अली खाँ साहिब तक का इतिहास, आँखों देखे हालात एवं घटनाओं पर आधारित हैं।

रियासत टोंक का इतिहास वैसे तो अत्यन्त प्राचीन है जो बैराठ की सभ्यता से सम्बद्ध है। वर्तमान दौर की बनास नदी की खुदाई से ज्ञात हुआ है कि इस क्षेत्र का इतिहास सहस्रों वर्ष पुराना है। बनास नदी न जाने कब से इठलाती, बल खाती, तूफ़ान उठाती, तूफ़ानों को शरण देती चली आ रही है। इसने न जाने कितने मुज़फ्फर (विजेता) व मन्सूर (त्यागी) योद्धाओं को पार उतारा है, कितने ही पराजित लश्करों को बहाया, डोबा निकाला और उतारा है और हर ज़माने में तत्कालीन ज़माने के मूल्यों और दृष्टिकोणों का दर्पण लिए इतिहास का गुलदस्ता बनी हुई है।

यहाँ मालवाओं, परमारों, मनोची राजपूतों, सिसोदियों, चौहानों और कच्छावों का आधिपत्य रहा है। टोंक अगर एक ओर मुग़ल साम्राज्य की शानो-इमारत[1] का केन्द्र रहा है तो दूसरी ओर मराठा और पठानों की जोलानगाह[2] और आमाजगाह[3] भी रहा है। यहाँ विजय और सफलता की योजनाएँ बनी हैं, स्वतन्त्रता आन्दोलन के दल भी गुज़रे हैं, सभ्यता व संस्कृति के विभिन्न रंगों के पुष्प भी खिले हैं, और इतिहास, सभ्यता, संस्कृति के आधार एवं चिह्न भी विभिन्न सभ्यताओं में दृष्टिगोचर हुए हैं।

---

[1] सरदारी।
[II] घुड़ दौड़ का स्थान।
[III] निशाना।

एक ओर अल्तमश, बलबन और अलाई लश्कर (अलाउद्दीन ख़िलजी) बादशाही शानोशौकत से गुज़रे हैं तो दूसरी ओर ग़ज़नी, ग़ौरी और आलमगीरी तथा जहांगीरी रायात (ध्वज) व सफर आयात (क़ाफ़ले) भी गुज़रे हैं। आधुनिक काल में अमीरी लश्करों ने इस भू-भाग को जहाँ स्थायित्व दिया है, वहाँ सभ्यता और विद्या के विभिन्न रंग भी भरे हैं जो किसी इतिहास की शोभा किसी हस्तलिखित ग्रन्थ का दबदबा व शौकत और किसी अभिलेख की लेखन शैली द्वारा बिखेरे गए पुष्पों से दृष्टिगोचर होता है। जिसकी कहानी इस संस्थान की ज़ुबानी, कही, पढी और समझी जा सकती है, जहाँ हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ असख्य पन्नों में इतिहास और विद्या की सम्पत्ति को समेटे हुए एक स्थान का इतिहास नहीं एक आलम का इतिहास सुरक्षित किए हुए हैं।

इस तारीखे एजाज़ी में प्राचीन इतिहास के ध्वज व आधार से चर्चा नहीं की गई है। केवल टोंक की 131 वर्षीय रियासत के इतिहास का एक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें शासकों के शासनकालों और उनकी ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमानुसार संकलित किया गया है। सन् 1817 ई में नवाब अमीर ख़ाँ स्वतन्त्रता सेनानी ने किस प्रकार टोंक की रियासत को स्थापित किया और किस प्रकार उनके उत्तराधिकारी नवाब वज़ीरूद्दौला ने रियासत को शक्तिशाली बनाया। दौरे वज़ीरी, विद्या, निर्माण, सभ्यता और रियासतदारी के उच्चतम मूल्यों की यादगार था। इसी अध्याय में नवाब अमीर ख़ाँ के प्रारम्भिक हालात, संघर्ष और आक्रमण, अंग्रेज़ों से युद्ध, मराठों और सिक्खों से सन्धियाँ और प्रथम बार हिन्दु मुस्लिम एकता का चित्र प्रस्तुत करती हैं।

योग्य इतिहासकार ने अत्यन्त दिल छूने वाले अन्दाज में ऐतिहासिक घटनाओं का सरल अध्याय की भांति वर्णन किया है।

इसके पश्चात् नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ के सक्षिप्त दौर[1] का शासनकाल आता है जिसमें विकास के नक़्शे जमते देखाई देते हैं। एक सियासी बिसात (बिछावन) उलटती और दूसरी विद्या की बिसात बिछती नज़र आती है। टोंक विद्वानों, बुद्धिजीवियों, फुकोहा[2] और प्रसिद्ध हकीमों का केन्द्र बनता नज़र आता है। चिन्तनों का स्कूल, विद्या तथा कलाओं का स्रोत इसी बनास नदी में फूटता, फैलता और लाभान्वित करता दृष्टिगोचर होता है। अरबी, फ़ारसी का यह बहुमूल्य खज़ाना या संग्रहालय इसी दौरे सईद[3] की यादगार है और आज भी टोंक ही को भूतकालीन शानो शौकत को ही

[I] काल।
[II] इस्लामी शरीअत के कानून के विद्वान्।
[III] नवाब सआदत अली ख़ाँ का शासन काल (1931 1946)।

न केवल थामे हुए है वरन् इस्लामी और अन्तराष्ट्रीय अमूल्य धरोहर का पूर्णरूपेण केन्द्र की हैसियत रखता है

नवाब मोहम्मद अली खाँ के दौर के पश्चात् सन् 18[illegible] ई में गुलिस्तान अमीरी के पुष्प नवाब इब्राहीम अली खाँ साहिब सिंहासन पर बैठते हैं। जैसे गुलज़ारे इब्राहीम मे विभिन्न [illegible] के नये नये पुष्प खिल गए हो या सभ्यता की बिसात पर विभिन्न [illegible] के [illegible] बिछ गए हो [illegible] नगर बने पाठशा[illegible], सभ्यता से सभ्यता [illegible] सम्मेलनों [illegible] मुशा[illegible] बाज़ो और सम्मेलनों के स्रोत उबल पड़े। [illegible] इतिहास में [illegible] दीर्घकालीन शासनकाल कहीं और किसी इतिहास मे नहीं मिलता सम्पूर्ण इतिहास [illegible] का [illegible] इतिहास नवाब इब्राहीम अली खाँ बहादुर [illegible] के [illegible] के [illegible] को समेटे हुए है।

[illegible] मौलाद [illegible][1] [illegible] सप्ताह तक चलने वाली सभा का आयोजन [illegible] जामा मस्जिद [illegible] के प्रदर्शनी भवनों एवम् [illegible] का निर्माण सभ्यता पर संस्कृति की गुल-अफ़शानियां[2] और दस्तरख़्वान[illegible] शानो शौकत आदि सब कुछ इसी दौर की यादगार हैं। एक दीर्घकालीन शाहजहानी स्वर्णिम दौर की [illegible] के इतिहास को बन गया और ओझल हो गया।

सन 1[illegible] ई मे दौर सईद का प्रारम्भ होता है। नवाब सआदत अली खाँ [illegible] [illegible] रियासत के सिंहासन पर आसीन होते हैं [illegible] आन्दोलन [illegible] खानदान [illegible] और अन्जुमन [illegible] प्रदर्शी सर्वधर्म [illegible] जनता के आन्दोलन, शिक्षा [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] का दौर [illegible][3] [illegible] लेखक ने अत्यन्त अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है [illegible] पद हैडमास्टरी से एडीशनल इन्स्पे[illegible] आफ स्कूल्स तक [illegible] उल्लिखित [illegible] प्रमाण [illegible] है। कुछ हालात तथा घटनाएँ स्वयं लेखक के देखे हुए [illegible] और कुछ घटनाएं उनसे सम्बन्धित है [illegible] इतिहास के [illegible]

सन् 194[illegible] ई मे नवाब फारुक अली [illegible] के इतिहास का संक्षिप्त दौर था जिसमे अत्यन्त सुदृढ़ विकास [illegible] ऐतिहासिक कारनामे हुए। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान इसी दौर मे बने। रियासतों का एकीकरण भी इसी दौर में हुआ। आपसी टकराव एवम् भेद-भाव में रख-रखाव और विकास भी इसी दौर

[I] मोहम्मद साहिब (स. अ. व.) के जन्म दिन पर विशेष कार्यक्रम
[II] पुष्प बिखेरना।
[III] अच्छे कार्य।

की यादगार है। फारूकी न्याय, जनता परवरी, दयालुता [illegible], सहानुभूति एवम् सद्व्यवहार इस [illegible] शासनकाल को जीवित [illegible] है।

सन् 1948 ई. में नवाब इस्माइल अली खाँ [illegible] और गुलशने इब्राहिमी (नवाब इब्राहीम अली खाँ का बाग) में [illegible] बरसने लगीं। हजरत[1] "नाज़" का सबसे बड़ा कारनामा यह था कि [illegible] इण्डियन यूनियन में सम्मिलित करके अपने [illegible] आन्दोलन के रंगीन स्वप्न को मूर्त रूप दिया।

मीलाद शरीफ़ सभाओं का [illegible] ऐकेडेमी की स्थापना, अखिल भारतीय [illegible] सीलन[2] और [illegible] समारोहों का आयोजन तारीख़-ए-टोंक की [illegible] भांति जीवित रहेगा।

सन् 1974 ई. में [illegible] टोंक के इतिहास की तमाम शानो शौकत [illegible] गए। जिस शानो शौकत [illegible] एक सूर्य अस्त हो गया और [illegible] नवाबों की शानो शौकत [illegible] हृदयों पर इसका प्रभाव [illegible] बड़ी तथा प्रसिद्ध व्यक्तियों ने [illegible] छोड़ा। नवाब इस्माईल [illegible] अमीरिया परम्पराओं के [illegible] निशाने अमारी और निशाने [illegible] है[3] [illegible] टोंक से अब भी जुड़े हुए हैं।

तारीख़-ए-टोंक [illegible] एक लम्बी दास्तान नहीं कि [illegible] एक स्थानीय इतिहास होते हुए भी [illegible] विभिन्न दौरों से सम्बद्ध [illegible] है। विद्या, साहित्य और धार्मिक [illegible] में प्राथमिकता का दर्जा [illegible][4] [illegible] पाठशालाओं की स्थापना [illegible] दरबारदारी, [illegible] टोंक को प्राथमिकता तथा विशिष्टता प्रदान की थी।

[I] श्रीमान्।
[II] सीलन दिवस।
[III] इन का देहान्त 19 अगस्त 1983 को हो चुका है।
[IV] इस्लामिक नियमों पर आधारित न्यायपालिका।

हमारे गुरू ने इस इतिहास को इन रंगीन पन्नों में फिर से जीवित कर दिया। उन्होंने न केवल टोंक के नवाबों की कारगुजारियों और कारनामों को ही लेखनीबद्ध किया है, वरन् प्रत्येक नवाब के शासनकाल के प्रसिद्ध व्यक्तित्वों विद्वानों, साहित्यकारों और कवियों को भी टोंक के नवाबों के साथ जीवित कर दिया है। हैडमास्टर साहिब अपने इस मूल्यवान कार्यक्रम पर न केवल बधाई के पात्र हैं वरन् अपनी इस कल्याणकारी भावना पर आदर व सम्मान के भी अधिकारी है। उनकी यह रचना एक ऐतिहासिक सम्पदा का पुनः सकलन व सम्पदान ही नहीं है वरन् एक मूल्यवान कोष की वापसी की हैसियत रखती है। उन्होंने तारीख-ए-टोंक लिखकर उसी प्रकार का कारनामा किया है, जिस प्रकार कि नवाब अमीर खाँ और उनके पूर्वजों ने विभिन्न दिशाओं में कारनामें अन्जाम दिए हैं। उन्होंने कारनामें किए और हमने कारनामे भुला दिए, एजाज़ साहिब ने कारनामें जीवित कर दिए और उन कारनामों को जीवित करने का श्रेय राजस्थान सरकार को जाता है जिसने अरबी फ़ारसी शोध संस्थान स्थापित करके विद्वानों, चिन्तकों तथा दूरदर्शिता रखने वालों के लिए एक इल्मी रियासत पुन स्थापित करने का ऐतिहासिक कारनामा किया है जहाँ रचना सकलन, शोध व गहन अध्ययन तहज़ीब व क्रमांकन का मूल्यवान कार्य हो रहा है उसी महत्त्वपूर्ण शोध क्षेत्र के क्रम में तारीख़-ए-टोंक भी सामने आ रही है। आशा है विशेष तथा जन साधारण इसे पसन्द करेंगे और पढ़ेंगे। यह एक गहन प्रयास और महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कारनामा है, जिसको अकेले मास्टर साहिब ने अन्जाम दिया है। अल्लाह तआला, उनको दीर्घ आयु[1] प्रदान करें—इसलिए कि उन्होंने न जाने कितने ऐसे व्यक्ति, योग्य, विद्वान, चरित्रवान शिष्य बना दिए जो विभिन्न क्षेत्रों में विद्या, साहित्य तथा राजनैतिक कार्य कर रहे हैं और अपने गुरू का नाम रौशन कर रहे है।

मेरे लिए भी यह गर्व की बात है कि मैं श्री मोहम्मद ऐजाज़ साहिब का शिष्य हूँ और आपने अहक़र[2] को इस तारीख़ को प्रकाशित कराने का दायित्व सौंपा, जिसकी वजह से टोंक का शानदार इतिहास गुमनामी के गहरे गढ्ढे में समाप्त होने के बजाय पुनः जीवित हो गया।

शौकत अली खाँ,[3]
निदेशक
अरबी-फ़ारसी शोध संस्थान, टोंक (राज.)

■ □ ■

[1] चूंकि श्री मोहम्मद एजाज़ खाँ का देहान्त 6 मार्च, 1994 को हो चुका है, अतः अल्लाह-तआला उनको स्वर्ग में स्थान दें।
[II] विनम्रतापूर्वक स्वय को कम दर्जे का कहना शिष्टता के नाते।
[II] श्री शौकत अली खाँ दिनांक 30/7/1994 को सेवा निवृत हो चुके हैं।

नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ के पूर्व भारत

17वीं शताब्दी को भारत में मुसलमानों को प्रतिष्ठा की अन्तिम शताब्दी कहा जा सकता है। 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुसलमानों के पराभव के चिह्न स्वयं शहनशाह औरंगज़ेब आलमगीर ने महसूस कर लिए थे।

अत सन् 1707 ई में आलमगीर के देहान्त पर मुग़ल साम्राज्य के पराभव का प्रारम्भ तीव्रगति से होने लगा। यहाँ तक कि 18वीं शताब्दी की समाप्ति पर मुग़ल साम्राज्य समाप्त हो गया क्योंकि इस शताब्दी में से तमाम शक्तियाँ जन्म ले चुकीं थी जिनके हृदय में भारतीय साम्राज्य की शहन्शाहियत की अभिलाषा पल रही थी। उदाहरणत अंग्रेज़ और फ्रांसीसी व्यापारी से सत्ताधारी या शासक बनने के लिए प्रतिद्वन्द्वतापूर्ण प्रयास कर रहे थे। दक्षिण भारत में नवाब कर्नाटक, सुल्तान मैसूर, नवाब हैदराबाद और मराठा सरदार आपस में प्रतिस्पर्द्धा करने लगे थे। निज़ाम हैदराबाद ने अंग्रेज़ों का साथ देकर अपनी प्रतिष्ठा को सुरक्षित कर लिया था।

सुल्तान मैसूर चतुर शत्रु को न पहचान कर अपने स्वाभिमान पर मर मिटे। मराठा माहराजाओं में सिन्धिया, होल्कर, भौंसला, गायकवाड़ और पेशवा अग्रणीय थे परन्तु इनमें एकता न थी। इसलिए इस समय की सबसे शक्तिशाली जाति अपनी संयुक्त शक्ति का प्रदर्शन नहीं कर सकी और सन् 1761 ई में पानीपत के ऐतिहासिक मैदान पर यदि कुछ किया भी तो भाग्य, भौगोलिक सिद्धान्त पर प्रभावी न हो सका। राजपूताने के राजपूत इस शताब्दी में कुछ ऐसे बुझे से रहे कि बस अपनी-अपनी रियासतों को संभाले बैठे रहे।

उत्तरी हिन्दुस्तान में सिक्खों की एक शक्तिशाली सल्तनत[1] स्थापित हो चुकी थी, जो एक ओर तो उत्तरी आक्रमणकारियों को रोके हुए थी और दूसरी ओर मराठा दल से टकराना चाहती थी। दिल्ली के सिंहासन पर मुग़ल बादशाह आसीन अवश्य थे, परन्तु शहशाहियत दम तोड़ रही थी। यहाँ तक कि सन् 1830 ई में उसने अपने अस्तित्व का अन्तिम सांस लिया और सल्तनत की बागडोर अंग्रेज़ों को सुपुर्द करके स्वयं को उनका पेंशनधारी बना लिया।

मुसलमानों में रोहेला पठानों की एक मुट्ठी भर जाति थी जिसे मुर्दा नहीं कहा जा सकता था। इस जाति के मनचले जवान गिरोह बांधकर कभी सिपाहियाना

---

[1] राज्य।

ज़िन्दगी में बढ़ कर भाग्य आज़माने निकल पड़ते थे। यह जाति अधिकतर रूहेलखण्ड में आबाद थी और तराई के क्षेत्र में कृषि किया करती थी। कहीं कहीं यह मराठा जाति की सेनाओं में सम्मिलित होकर बड़ी-बड़ी मोहिमों[1] में सफलता अर्जित करते थे। अर्थात अठाहरवीं शताब्दी, समस्त अव्यवस्था, अराजकता और युद्ध व हत्या आदि से पूर्ण है। यहाँ तक कि सन् 1813 ई. के हिन्दुस्तान के वृतान्त वर्णित करते हुए सर माल्कम हैल लिखते हैं कि

"डाकू और पिन्डारी सारे देश में गारतगरी[2] करते फिरते थे। और हुकूमत का कहीं पता न था जो प्रबन्ध करती।"

पिन्डारियों का सर्वप्रथम वर्णन औरंगज़ेब और शिवाजी की पारस्परिक लड़ाईयों में आता है और कहीं-कहीं नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ के युद्धों में भी पढ़ा जाएगा। परन्तु नवाब की इस समूह में गणना, जो पिंडारियों के नाम से उन्नीसवीं शताब्दी में कुख्यात था, एक भूल है। नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ के साथ साधारणत रोहैला पठान थे जो एक स्थान पर जमकर हुकूमत स्थापित न करते थे वरन् मालवा और राजपूताना के माहराजाओं के मध्य झगडों में पडकर युद्ध कला के जौहर दिखलाते थे। यह कहना नितान्त गलत है कि वह निर्दोष बस्तियों को जलाकर उन के निवासियों को लूट लेते थे। उनकी आय का स्रोत केवल सिपाहिगरी[3] की कला थी। जिसके फलस्वरूप उनमें इतनी शक्ति आ गयी थी कि उनकी सहायता के प्रति आकर्षण या रुची रखने वाले, होल्कर जैसे शक्तिशाली मराठा सरदार हुए। इन का लोहा निज़ाम दक्कन और राजपूताना के माहराजाओं ने भी माना और माहराजा रणजीत सिंह शासक पंजाब ने भी इन से भ्रातृत्व पर आधारित मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए। अंग्रेज़ तो इन से इस सीमा तक आतंकित हो गए थे कि इन को परास्त करना आवश्यक जानकर, बड़ी से बड़ी सेना जो उस समय उपलब्ध हो सकती थीं, इनको घेरे में लेने के लिए उन्होंने एकत्रित की क्योंकि उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पठान सरदार ही राजपूताना और मालवा के डिकटेटर बने हुए थे।

अठाहरवीं शताब्दी की समाप्ति पर उत्तरी हिन्द में सतलज दरिया से पैशावर तक सिक्खों की एक ज़बरदस्त सल्तनत माहराजा रणजीत सिंह ने स्थापित कर ली थी। जिस का अनुमान इस बात से लगाया जाता है कि अंग्रेज़ों ने सर चार्लिस मेटकॉफ़

---

[1] अभियानों। [2] लूटमार। [3] युद्ध-कौशल।

को रणजीत सिंह के दरबार में भेजकर अत्यन्त प्रयासों के पश्चात सन् 1809 ई. में लाहौर का सन्धि-पत्र तैयार कराया गया था तब ही से अंग्रेज़ों के रणजीतसिंह से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो सके थे इस प्रकार रणजीतसिंह की शक्ति को गंगा की घाटी में बढ़ने से रोका गया और रूस के आक्रमण से स्तब्ध होकर सिक्खों को बीच में रखा गया ताकि रूसी आक्रमण होने पर सिक्ख पहले उसे रोकें।

हिमालय पर्वत के मध्य आंचल में गोरखों की एक सल्तनत नेपाल में स्थापित थी। अंग्रेज़ों का अहस्तक्षेप या शान्तिप्रिय नीति को देखकर कुछ अर्वाधि से इन पर्वतीय युद्ध-प्रिय जातियों ने अंग्रेज़ो क्षेत्र पर छापे मारना प्रारम्भ कर दिये थे। अतएव बड़ी कठिनाइयों के पश्चात् गोरखों को परास्त किया गया और 1816 ई में सगौली का सुलह-नामा[1] अमल[2] में आया इसके अन्तर्गत तराई का बहुत-सा क्षेत्र गढ़वाल एवं कुमायूं के ज़िले अंग्रेज़ों के सुपुर्द किए गए। इस ज़माने[3] के प्रसिद्ध पर्वतीय नगर यथा शिमला, नैनीताल, मसूरी, अलमोड़ा इत्यादि उनही के ज़िलों में शामिल है।

दक्षिण में मराठा सरदारों का प्रभाव पानीपत का तीसरा युद्ध हो जाने के बाद भी काफी[4] था। विशेषत होल्कर को अंग्रेज अधीन न कर सके थे। निज़ाम हैदराबाद तटस्थ थे और उन्होंने अपनी सल्तनत को मित्रता करके यथावत रखा था। रियासत मैसूर में सुल्तान टीपू के परिवार की सत्ता समाप्त हो चुकी थी और मैसूर की हुकूमत कदीम[5] माहराजाओं की सन्तान को दे दी गई थी। मद्रास और कर्नाटक के क्षेत्र अंग्रेज़ी सल्तनत में शामिल थे। क्षेत्र बम्बई (अब मुम्बई) में सूरत सालसेट और बसीन अंग्रेज़ी अमलदारी[6] में आ चुके थे। शेष ईलाका मराठों के कब्ज़े में था। मशरिक (पूर्व) में बंगाल और बिहार तो पहले से ही अंग्रेज़ों की अमलदारी में आ चुके थे। अब गंगा और जमना की वादी[7] भी अंग्रेज़ी सल्तनत[8] में सम्मिलित कर ली गई थी। पश्चिम में काठियावाड़ की रियासतें, मध्य हिन्द और राजपूताना की रियासतें राजा होल्कर के प्रभाव में थी। हिन्दुस्तान की प्राचीन राजधानी देहली पर पहले तो माहराजा सिन्धिया का अधिकार था परन्तु 1803 में अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया था और

---

[1] संधि-पत्र। [2] अस्तित्व। [3] काल। [4] अधिक।
[5] पूर्व अथवा प्राचीन। [6] अधीन। [7] घाटी। [8] साम्राज्य।

मुग़ल ख़ानदान के नाम मात्र बादशाह को पेंशनधारी बनाकर देहली के दुर्ग में रहने दिया गया था। लार्ड डलहौज़ी की युद्धयुक्त विजय नीति 1798-1805 ई. तक जारी रही फलस्वरूप दक्षिण के बड़े ईलाके[1] अंग्रेज़ी साम्राज्य में शामिल कर लिए गए परन्तु इन इलाकों में अमन व अमान[2] और प्रबन्ध व्यवस्था स्थापित करने का इस ज़बरदस्त मुदब्बर[3] को अवसर न मिल सका और शीघ्र ही उसे इंग्लिस्तान बुला लिया गया। इसके बाद सर जार्ज बारलो और लार्ड मिन्टो के आठ वर्षीय काल में अदम मदाख़ेलत[4] और सुलह पसन्दगी[5] की नीति ने व्यवस्था के हालात बिगाड़ दिए। डाकुओं और पिण्डारियों के दलों ने रोकथाम से निडर होकर कत्लोगारत[6] का बाज़ार गरम कर दिया था, उन जराईम पैशा[7] लोगों में बहुत से पठान सरदार यथा करीम खाँ, चीतू खाँ, भी अपने दलों के साथ शामिल थे। परन्तु नवाब अमीर खाँ साहिब का उनसे कोई सम्बन्ध न था। वह अपने पठान मित्रों की सेनाओं को लिए हुए मालवा और राजपूताना में घूमा करते थे और बड़ी सल्तनतों यथा निज़ाम मराठा राजपूत राजाओं से वीरता की प्रशंसा प्राप्त करते थे और राजाओं के बीच झगड़ों में भाग लेकर अपनी सहायता का मूल्य पहले तय कर लिया करते थे। फिर दोनों पक्षों में से किसी एक के पक्ष में होकर अपनी सहायता के दायित्व का निर्वाह करते थे और मालवा तथा राजपूताना के राजाओं से सुरक्षा व शान्ति प्रदान करने का कर अर्थात आय का चौथा भाग वार्षिक (चौथ) वसूल किया करते थे और देने वाले से तलवार के बल पर रखवा लेते थे। परन्तु शान्ति प्रिया जनता को कभी न लूटते थे। उनकी सेना 52 सरदारों के जत्थों में बंटी हुई थी उनकी कुल संख्या लगभग एक लाख थी जिनमें मराठा भी शामिल थे। उनकी सेना में अधिकतर सिपाही रोहेला जाति के थे जो एक पठान स्टेट स्थापित करने की कामना रखते थे परन्तु मराठों की संख्या व शक्ति के सामने इस विचार को दिल ही दिल में रखते थे। अवसर के मुन्तज़िर[8] थे। अंग्रेज़ों की बढ़ती हुई शक्ति से आशंकित होकर मराठों के साथ हो गए थे और उसे देशभक्ति की भावना भी समझते थे।

■ □ ■

---

[1] क्षेत्र। [2] शान्ति व सुरक्षा। [3] गम्भीर परामर्शदाता। [4] अहस्तक्षेप। [5] मैल-मिलाप। [6] मार-काट। [7] अपराध अभ्यस्त [8] प्रतीक्षा में।

अमीरुद्दौला अमीरुल मुल्क नवाब मोहम्मद अमीर खाँ साहिब "शमशीरजंग बहादुर" 1767 ई. से 1834 ई. तक

वंशावली (सिल्सिल-ए-नस्ब)

मोहम्मद अमीर खाँ पुत्र मोहम्मद हयात खाँ पुत्र ताले खाँ पुत्र मोला खाँ पुत्र अली खाँ, पुत्र फतह खाँ, पुत्र खान, पुत्र अल्लाह दाद खाँ, पुत्र युसुफ खाँ, पुत्र कडाह खाँ, पुत्र मलाह खाँ, पुत्र मालार खाँ, पुत्र इल्यास खाँ, पुत्र युसुफ खाँ, पुत्र यूसुफ खाँ कला, पुत्र मजार खाँ, पुत्र फरीशो खाँ, पुत्र मत्राह खाँ, कैस अब्दुल रशीद खाँ (अन्त में वर्णित वे हैं जो अफगानिस्तान का एक शिष्ट मण्डल लेकर आँ हज़रत सल्ललाहो अलेह वसल्लम[1] की सेवा में उपस्थित हुए, इस्लाम धर्म स्वीकार किया और जिन्होंने वापस अपने देश लौटकर अफगानिस्तान के बुद्धमत और आतिश परस्तों[2] में इस्लाम धर्म फैलाया।

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम पैगम्बर ने अफ़गाना नामक यहूदी को अपनी सेना का अधिकारी बनाया था। इसकी सन्तान ही कभी विजेता के रूप में अफगानिस्तान में आई अफ़गान कहलाई इसलिए इस देश का नाम ही अफ़गानिस्तान हो गया और सम्भवत यह नाम प्रान्त काबुल को अफगानिस्तान अंग्रेजों के दौर में कहा गया और पठानों को सुलैमानी भी कहा जाने लगा।

एक किंवदंति यह भी है कि बख्तुननसर बादशाह काबुल ने बैतुल मुक़द्दस[3] को विजय और पतन करके बनी इज़राईल, के हजारों परिवारों को वहाँ से निकाल बाहर किया था और गज़नी तथा गौर के क्षेत्रों में ला बसाया था। तब ही से इस देश का नाम वंश के बुज़ुर्ग के नाम पर अफ़ग़ानिस्तान रखा और अपनी क़ौम को बजाए बनी इज़राइल के अफ़ग़ानी कहलवाया बाद में उनके वंश अग्निपूजक हो गए और कुछ ने बाद में बुद्धमत स्वीकार कर लिया।

जन्म (पैदाईश)

नवाब मोहम्मद अमीर खाँ के पिता की गरीबी उनकी शिक्षा में रुकावट बनी वैसे भी इस जमाने में शिक्षा का चर्चा बहुत कम था और युद्ध कला (फन्ने सिपाहगिरी) के अतिरिक्त कोई दूसरा व्यवसाय कार्य न था इसलिए वह अपने हमजोली लड़कों को पंक्तिबद्ध युद्ध (सफ़े जंग) के कायदे से सुसज्जित करते थे युद्ध का आदेश देकर परस्पर छड़ियों से भिड़ाते थे स्वयं कमज़ोर पार्टी की ओर से लड़कर उसे विजयी बनाने में अत्यन्त रुचि लिया करते थे और विजयी पार्टी को कौड़िया या अनाज बाटते थे।

---

[1] मोहम्मद साहिब पैगम्बर (स. अ. व.)। [2] अग्निपूजक।

[3] इस्राइल देश की राजधानी जो मुसलमानों का प्रथम "काबा" था।

बाल्यकाल के साथियों में उनका आदर बहुत था, कभी लडके डंडो की पालकी बनाकर उन्हें उस पर बैठाते थे और कांधो पर इधर उधर लिए फिरते थे, शेष लडके अरदली के रूप में उनकी पालकी के साथ साथ चलते थे। तब इसी हालत में उन्हें सेनापति (सिपाह . सालारी), अहलकारी[1] और चौपदारी[2] के ओहदे[3] दिये जाते थे। अर्थ यह है कि बाल्यकाल में तेजस्वी लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे थे।

बाल्यकाल में एक दिन पाकबाज़ शाह नामी एक दरवेश ने ऐसे भाग्यशाली लडके को बुलाकर पूछा। दूध पिएगा। लड़के ने कहा -"जी हाँ"। बस दरवेश ने एक प्याला जिसमें शराब थी, देकर कहा "ले पी जा"। लडके ने उसे शर्बत के धोखे से मुँह लगाया तो स्वाद उसका शर्बत या दूध सा न पाया। क्रोध की हालत में प्याला धरती पर गिरा दिया तो दरवेश ने कहा "एक नासमझ यह तो तेरी मुराद[4] का शर्बत था।" अफसोस कि तूने उसे फैंक दिया। यदि सब पी जाता तो क्या जाने तेरे लिए क्या हो जाता ख़ैर फिर भी जितना तेरे भाग्य में था उतना मिलेगा।

युवा अवस्था

बाल्यकाल व्यतीत हो जाने के बाद जब युवा अवस्था की आवश्यकताओं ने तलाशे मआश[5] पर विवश किया जो जहांगर्दी[6] के शौक ने मातृभूमि से दिल उचाट कर दिया। तब अपने पिता से बाहर जाने की अनुमति मांगी किन्तु वह पिता मोह के कारण टालते रहे। परन्तु जब पिता की मर्ज़ी[7] न पाई तो एक दिन बिना अनुमति के घर से चल दिए और प्रथम बार लखनऊ आए। परन्तु असफल वापस हुए। दूसरी बार ग़ुलाम क़ादर ख़ाँ रोहैला की सेना के साथ मेरठ तक जाना हुआ परन्तु फिर भी रोज़गार न मिला और भाग्य उनके धैर्य की परीक्षा लेता रहा। तब उस होनहार नवयुवक ने यह समझकर कि पिता की सहमति न लेने पर असफलता देखनी पडती है वापस आकर इरादा किया कि जब तक पिता अनुमति न देंगे कदापि घर से बाहर न जाऊँगा।

सिपाहियाना जीवन 1788 ई. से 1817 ई. तक

फ़ारसी छंद— ज फ़जलश सिपाही सिपाहदार शुद,

अमीर व सरे फौज व सालार शुद॥

ز فضلش سپاہی سپہ دار شد امیر و سر فوج و سالار شد

अर्थ— खुदा के फ़जल से एक साधारण सिपाही सेनापति बन गया,

---

[1] मंत्रालयिक कार्यकता।
[2] राजसभा व्यवस्थापक।
[3] पद।
[4] इच्छा अथवा मनोकामना।
[5] जीविकोपार्जन।
[6] संसार यात्रा/ देशाटन।
[7] सहमति।

अमीर सरफोज और मालदार बन गया।

नौकरी की तलाश

इकबालमन्द[1] नवयुवक ने घर के शान्त जीवन से तंग आकर 20 वर्ष की आयु में पुन यात्रा का इरादा किया और अपने पिता से अनुमति मांगी पिता ने यह देखकर कि वीरता का आवेग, युवा पुत्र को पिता के संरक्षण में शांति से नहीं बैठने देगा अन्ततोगत्वा पुत्र की जुदाई गवारा कर ली और आशीष देकर ख़ुदा[2] के सुपुर्द किया

सन् 1788 ई में कुछ मित्रों के साथ जीविकोपार्जन के लिए पुन निकले। मार्ग में कुछ और नवयुवक शामिल हो गए और मज़ाक से मोहम्मद अमीर खाँ को जमादार कहने लगे। किसे मालूम था कि आगे चलकर यह शगुन शुभ होगा। यह चालीस मित्र पहले मथुरा पहुँचे वहाँ राजा सिन्धिया की ओर से दोबाई साहिब खेमाजन[3] था और भर्ती कर रहा था। इन सबने भी स्वयं को पेश किया दोबाई साहिब ने उनमें से कुछ को चयनित किया परन्तु मोहम्मद अमीर खाँ को अल्प आयु के कारण न लिया। इसलिए शेष साथी वहाँ से रवाना होकर देहली होते हुए कानोड, इलाक़ा रैवाड़ी में चले गए और युसुफ़ खाँ रिसालेदार से मिले। उनकी सिफारिश से नजफ़ कुली खाँ की सरकार में नौकर हो गए। यह नौकरी दो माह तक रही। फिर युसुफ खाँ के ज़रिए खपड़ी[4] में जाकर वहाँ के रईस बाघ सिंह की मुलाज़िमत में चार माह तक रहे फिर वहाँ से युसुफ़ खाँ के साथ नागौर चले आए, जहाँ इस्माईल बेग खाँ ने नौकर रख लिया। फिर उनके साथी नागौर से जोधपुर और वहाँ से पालनपुर इलाका गुजरात में चले गए। जब इस्माईल खाँ पालनपुर से जोधपुर वापिस हुए तो युसुफ खाँ की इच्छा अपनी पुत्री इन को देने की बात मालूम हुई जो इनको पसन्द न आयी और मोहम्मद युसुफ खाँ रिसालदार की मित्रता (रफ़ाकत) छोड़कर अपने 50 मित्रों के साथ ईडर ईलाका जोधपुर के राजा के यहाँ नौकरी कर ली। फिर वहाँ से भी नौकरी छोड़कर सूरत की ओर चले गए। परन्तु मार्ग में खर्च की कमी के कारण बहुत से साथियों ने साथ छोड़ दिया। यहाँ तक कि सूरत पहुँचने पर केवल दो सौ व्यक्ति रह गए।

उसी दिन एक पण्डित राजा गायकवाड बडौदा की ओर से अंग्रेज़ों से चौथ वसूली के लिए अरबों के चालीस पचास सवार लेकर सूरत आया हुआ था, और अपनी शक्ति बढाने की फ़िक्र में नौजवान सिपाही मुलाज़िम रख रहा था। मोहम्मद अमीर खाँ भी रात्रि के समय उससे जाकर मिले। और उसने उनको उनके दो सौ सवारों सहित नौकर रख लिया और एक माह का वेतन भी अग्रिम दे दिया। फ़िर सूरत से कूच करके 8 कोस की दूरी पर एक गढ़ी में निवास किया तब मोहम्मद अमीर खाँ ने पंडित से कहा कि तुमने हमें जिस कार्य के लिए नौकर रखा था वह बतलाओ ताकि उसे पूर्ण

---

[1] तेजस्वी। [2] ईश्वर। [3] ख़ेमा लगाकर पड़ाव डालना।

[4] सम्भवतः यह खेतड़ी है।

करने का प्रयास किया जाए। पंडित ने कहा कि अंग्रेज़ मुझे कमजोर समझकर राजा गायकवाड़ के हित की तीन वर्ष से चढ़ी हुई चौथ अदा नहीं करते हैं। बस मोहम्मद अमीर ख़ाँ ने अपनी मुट्ठी भर टुकड़ी से ही उस कार्य को कर डालने की ठानी और पंडित के एक सौ सवारों और अपने साथियों सहित पिछली रात में सूरत के परकोटा (शहर पनाह) को आ घेरा और अपने सिपाहियों को मक्का अर्थात मकई के खेत में छिपा दिया। पंडित के सवारों को नगर के बन्द दरवाज़ों पर नियत कर दिया, और निर्देश दिया कि ज्यों ही दरवाज़ा खुले और आदमी बाहर आएं तो उन में से कुछ को घायल करके शीघ्र ही हमारे साथ आ मिलें, ऐसा ही किया गया। उनके इस साहस से अंग्रेज़ समझे कि शत्रु की अधिक सेना ने हमें आ घेरा है। बस अंग्रेज़ अधिकारी दो पलटने लेकर बाहर निकला और पंडित को बुलाकर ख़ून-ख़राबे का कारण पूछा। जिसके उत्तर में पंडित ने पिछली समस्त बक़ाया चौथ वसूल की। तब अंग्रेज़ों ने समय मांगा और पंडित की सेना को रूस्तम बाग़ में ठहरने की अनुमति दी। इस मौक़े पर मोहम्मद अमीर ख़ाँ ने अंग्रेज़ों पर प्रभाव डालने के लिए, सब सिपाहियों के भालों पर झण्डे बाँध कर बाग़ की दीवारों के साथ खड़े कर दिए। यह प्रबन्ध करके आप स्वयं कुछ प्राण न्यौछावर करने वाले शुभचिन्तकों और पंडित के साथ बाग़ से बाहर अंग्रेज़ों के वकीलों से बातचीत में व्यस्त हुए। अंग्रेज़ी वकीलों ने जो बाग़ में निशानों की अधिकता देखी तो दुश्मन की अधिक सेना का गुमान किया, और विवश होकर उनकी मांग स्वीकार कर ली एवं तीन साला चौथ की चढ़ी हुई रक़म अदा कर दी। अंग्रेज़ों से वसूली करके पंडित तो बड़ौदा के लिए रवाना हुए और मोहम्मद अमीर ख़ाँ के साथियों को पुरस्कार देकर जवाब दे दिया।

तब इन सब ने कोंकण (नवाह बम्बई)[1] का रास्ता लिया। परन्तु मार्ग की तकलीफ से बहुत से साथी बिछड गए। यहाँ तक कि जब कोंकण पहुंचे तो केवल ६, शुभचिन्तक साथ थे, और वो भी उस दिन फ़ाक़े से थे अर्थात भूखे थे, तब एक साथी ने सितार, सवा रुपये का शहर में जाकर बेचा और उसके चने ख़रीद लिए और उबालकर सबने खाए। इस तरह गुज़ारा करके नासिक पहुँचे। इस शहर के रईसों ने एक सप्ताह तक सत्कार किया और वहाँ के सूबेदार पण्डित ने उन सब को फिर मुलाज़िम रख लिया। वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत की। इस अवधि में पण्डित तारा शंकर जो पेशवा की तरफ़ से लौटन पछाड़ ज़िला मालवा का सूबेदार था संयोग से वहां आ पहुंचा और उन सबको मुलाज़िम रखकर लौटन पछाड में ले आया। तब ये सब लोग एक वर्ष तक उसकी मुलाज़िमत में रहे। इस अवधि में मोहम्मद अमीर ख़ाँ के छोटे भाई करमदीन ख़ाँ जो हरम से थे और ख़ान की ख़बर लाने के लिए घर से निकले थे मालवा में उनसे आ मिले और दोनों भाई साथ जीवन व्यतीत करने लगे। परन्तु मोहम्मद अमीर ख़ाँ फिर अपने जीवन में अपने पिता से न मिल सके।

---

[1] बम्बई (अब मुम्बई) के समीप।

मालवा में प्रारम्भिक कारनामे

भोपाल में उन दिनों हालात बिगड़ रहे थे। ऐसे अवसर मनचले सूरमाओं के लिए सुनहरी समझे जाते थे। अतएव मोहम्मद अमीर खाँ 1794 ई में 300 सवारों के साथ भोपाल आए, और अमीर मोहम्मद खाँ नायब रियासत भोपाल की सरकार में मुलाज़िम हो गए। अमीर मोहम्मद खाँ को गोस मोहम्मद युवराज भोपाल से चली हुई थी बस युवराज ने कुछ ऐसी चाल चली कि नायब की अधिकतर सेना युवराज से जा मिली और नायब फतेहगढ़ दुर्ग में महसूर[1] हो गया। फिर वली-अहमद ने मोहम्मद अमीर खाँ को भी हर चन्द लालच देकर अपनी तरफ तोड़ना चाहा परन्तु इस वफ़ादार व्यक्ति ने संकट काल में अपने स्वामी का साथ न छोड़ा और वली-अहद की मुलाज़िमत स्वीकार नहीं की और कुछ समय के लिए लौटन पछाड़ वापस चले गए। जब भोपाल वापस हुए गोस मोहम्मद खाँ सिंहासनरूढ़ हो चुके थे और नयाबत के पद पर राय हिम्मत राय नियत कर दिए गए थे क्योंकि दस वर्ष से मुतवफ्फी[2] के पद पर कार्य कर रहे थे। ख़ान जब हिम्मत राय साहिब से मिले तो वह अत्यन्त मान-सम्मान से पेश आए और सिपाह सालारी का पद दिलाने के लिए नवाब से मिल[illegible] पर नवाब का मन पहले ही से साफ न था इसलिए ख़ान् को जवाब दे दिया। यह [illegible] साहिब को नागवार गुज़री, अतएव राय साहिब ने भी रियासत की सेवा से त्याग प[illegible] दिया। (यह थीं उस ज़माने की वफ़ादारियाँ और ज़िम्मेदारियाँ)

एक दिन किसी फ़कीर[3] ने ख़ान से सवाल किया, उस समय ख़ान् के पास केवल डेढ़ दरहम था। इसलिए खिदमतगार के हाथ वही फ़क़ीर को भेज दिया। फ़क़ीर ने खुश होकर खिदमतगार को तीन छड़ियाँ दीं और फ़रमाया कि ख़ुदा ने तीन तरफ़ की रियासत तेरे अमीर को दी। ये तीनों छड़ियाँ उसको दे देना। ख़िदमतगार ने जाकर ज्यों ही यह सुनाया, आधा दरहम मित्रों से लेकर उस वली के पीछे दौड़े और प्रार्थना की कि आपने चौथा भाग किसके लिए छोड़ा है। यह आधा दरहम और ले लिजिए और यह भी प्रदान कीजिए। तब "ताज-बख़्श" फकीर ने कहा कि अब दुआ के कबूल होने का समय नहीं रहा। तू इसी पर संतोष कर। इस घटना के थोड़े ही दिनों बाद, नवाब गौस मोहम्मद खाँ वालिए[4] भोपाल ने 100 अशरफ़ियाँ ख़र्च के लिए भेज दीं और नौकरी का संदेश भेजा। ख़ान् ने इस नियामत को फ़क़ीर की दुआ की बदौलत समझकर खुदा का शुक्र अदा किया। और दूसरे ही दिन रियासत भोपाल की सेवा स्वीकार कर ली।

उस समय नागपुर के राजा भौंसले की सेना ने होशिंग-आबाद का क़िला घेर रखा था और भोपाल के सरदारों पर इस क़दर रौब छाया था कि किसी को उसके मुक़ाबले का साहस न होता था। अन्त में नवाब ग़ौस मोहम्मद ने मोहम्मद अमीर खाँ

---

[1] घिरना। [2] मरे हुए/ मृतक। [3] संत। [4] स्वामी।

को, घैरा-बन्दियों की सहायता पर जाने का आदेश दिया। खाँ उसी समय 300 सवारों को लेकर रातों-रात रवाना हुए और शत्रु के समीप नर्वदा नदी से आधे कोस की दूरी पर जा पहुँचे। फ़िर खान् अपनी टुकड़ी को पीछे छोड़कर स्वयं तफ़तीश के लिए आगे बढ़े और होशियारी से मालूम कर लिया कि सब ख़्वाबे ग़फ़लत[1] में पड़े सो रहे थे। बस तुरन्त वापिस आकर हमराहियों से कहा कि दरिया के किनारे तक शत्रु का कहीं पता न पाया। बस इसी समय दरिया पार उतर जाना चाहिए यह सुनते ही सब रफ़ीक़ा[2] उठ खड़े हुए और दरिया पार आ पहुँचे जिसकी दूसरे जानिब [3] दुश्मन को बेख़बर पाया। तब ख़ान् ने कहा सोचते क्या हो तीन सफ़ों[4] में होकर बाड़ चलाओ। अर्थ यह है कि ग़नीम[5] गोलियां खाकर ख़्वाब से चौंके और असामयिक आक्रमण से घबरा कर इधर उधर भाग निकले। फ़िर ख़ान् ने स्वयं भाला सम्भाला और बहुत सो को ख़ाक पर फड़का दिया। फ़िर दरिया के तट से दुर्ग वालों को आवाज़ दी कि नाव शीघ्र इधर भेजो। तब कुछ नावें भेजी गई जिसमें ख़ान् और उनके जाँ-निसार[6] बैठकर दुर्ग में प्रविष्ट हुए। यद्यपि शत्रु की सेना ने नावों पर पीछे से गोलियां चलाई परन्तु कारगर न हुई। नवाब गौस मोहम्मद खाँ ने इस वफ़ादारी और बहादुरी के इनाम में दुर्ग फतेहगढ़ तथा पुराने दुर्गों का प्रबन्ध सुपुर्द किया। इस अवधि में रियासत का प्रबन्ध फिर बिगड़ने लगा, क्योंकि नवाब हयात मोहम्मद खाँ की बेगम ने रियासत की दशा पर क़ाबू पा लिया था। परन्तु प्रबन्ध के लिए अपने पति के भतीजे मुरीद मोहम्मद खाँ को राहतगढ़ से बुला लिया। उसने नवाब मोहम्मद खाँ ऐसे वीर, बुद्धिमान अधिकारी के होते हुए अपनी दाल गलती न देखी तो बेगम को लिख भेजा कि मोहम्मद अमीर खाँ परदेसी को जो दुर्गों पर क़ाबिज है जवाब दे दो तो आ सकता हूँ। तत्पश्चात् बेगम ने ऐसा ही किया, बस जब मुरीद खाँ भोपाल आ गए तो खाँन् ने वहाँ रहना उचित न समझा और स्वयं सिरोंज चले आए। सिरोंज से नवाब लखवा के पास गए और एक सप्ताह उम्मीदवारी की, फिर बाला राव सिन्धिया के पास पहुँचे। दस दिन पश्चात् उसने जवाब दिया कि तुम्हारा गुज़ारा यहाँ न होगा क्योंकि तुम्हारे साथ ख़र्चे बहुत हैं। तब ख़ान् ने उम्मीदवारी के काल का वेतन चाहा तो वह भी न दिया गया। इस पर एक कटार बगल में छिपाकर बॉला राव के पास दुर्ग में पहुँच गए और सरे दरबार उसकी कमर में हाथ डालकर कटार उसके सीने पर रख दी। ख़ान् की इस निर्भीकता से प्रसन्न होकर और उनके सिपाहयाना जोहरों को समझकर शैख़ कलब अली के माध्यम से नौकरी का संदेश भेजा परन्तु खान् ने उसे

---

[1] निश्चिंत। [2] साथी। [3] ओर। [4] पंक्तियों।
[5] शत्रु। [6] प्राण न्यौछावर करने वाले।

स्वीकार न किया और चार मास तक मय साथियों के बेकार बैठे रहे। इस अवधि में मुरीद मोहम्मद ख़ाँ ने रियासत भोपाल का प्रबन्ध सम्भल कर ख़ान् को कहला भेजा कि उस समय भलाई इसी में थी, कि मैंने तुम्हें विदा कराया था परन्तु अब तुम्हारी आवश्यकता है। तुम उम्मीदारी के बहाने से आकर नगर के बाहर खेमाज़न[1] हो जाओ। मैं तुमको खर्च, गुप्त रूप से भेजता रहूँगा और तुम सेना भर्ती करते रहना। तत्पश्चात् मुरीद मोहम्मद ख़ाँ ने हालात पर क़ाबू पाकर नवाब हयात मोहम्मद ख़ाँ की बेगम को जान से मार डाला और ख़ाँ को नवाब हयात मोहम्मद ख़ाँ के महल की ड्यूढ़ी पर नियत किया इस ख़िदमत को ख़ान् ने नौ मास तक अन्जाम दिया परन्तु भोपाल के सर लश्कर रहीम ख़ाँ से बिगाड़ हो जाने पर पुन सिरोंज आ गए।

लक्ष्मण राव से युद्ध

सन् 1798 ई में मराठा के साथ पिण्डारे, जिन का अब तक मोहम्मद अमीर ख़ाँ के लश्कर से कोई सम्बन्ध न था, देश में प्रत्येक ओर लूट-मार करते फिरते थे। होल्कर और सिन्धिया का मुल्क में डंका बज रहा था परन्तु राजा जयसिंह [illegible] (स्वामी) राघोगढ़ ने दौलत राव सिन्धिया का मुकाबला किया। सिन्धिया ने राघोगढ़ छीन लिया परन्तु राघोगढ़ के राजा ने सिन्धिया का क्षेत्र लूटना आरम्भ किया और सिरोंज पर कब्जा कर लिया। उस समय मोहम्मद अमीर ख़ाँ भी भोपाल से आकर राजा राघोगढ़ के साथ हो गए और दोनों ने मिलकर सिन्धिया की अमल-दारी में आफ़त बरपा[2] कर दी, और राघोगढ़ के दुर्ग को घेर लिया तब महोदपुर का हाकिम पण्डित लक्ष्मण राव जागीरदार मसोतपुर, सिन्धिया की ओर से दो हज़ार प्यादे और 25 ज़रब तोपें लेकर मुकाबले को आया। पण्डित के सिपाहियों ने जो बुलन्दी पर थे, गोले मारे। वे नशेबी[3] हिस्से के ऊपर से निकल गए। उधर मोहम्मद ख़ाँ ने शत्रुओं पर दूसरी ओर से चढ़ाई की। यहाँ तक की युद्ध दस्त-बदस्त होने की नौबत आ गई। ख़ाँन् के एक अफ़ग़ान सिपाही इनायत ख़ाँ ने लक्ष्मण राव का वध कर दिया। तब उसकी सेना भाग खड़ी हुई और ख़ान् के हाथ बहुत लूट का माल (माले गनीमत) आया। जिसमें डैरा तोपख़ाना, पालकी वर्णन योग्य हैं। यह पहली जंगी लूट थी जो नवाब के हाथ आई और प्रथम "पालकी नशीनी" थी जो तलवार के ज़ोर पर नसीब हुई

---

[1] ख़ैमा गाड़ कर पड़ाव डालना। [2] उत्पात मचाना।

[3] ढलान अथवा ढलवाँ भू-भाग।

इसके बाद मोहम्मद अमीर खाँ फिर सिरोंज लौट आए और राघोगढ़ के राजा की निरन्तर रफ़ाकत[1] करते रहे। उसी अवधि में खान घोड़े से गिर पड़े और पाँव में बन्दूक की गोली का ऐसा घाव लगा था कि सवार नहीं हो सकते थे। उसी दशा में एक दिन अपने डेरे से जो सिरोंज शहर के बाहर था पालकी में बैठकर दरगाह मुर्तुज़ा अली की जियारत को गए। यहाँ केवल पन्जे का पत्थर पर निशान है जिसको हज़रत अली (र. अ.) से सम्बद्ध किया जाता है। यह वह ही ज़ियारत है जिसे अब मौला अली के नाम से पुकारा जाता है। वापसी में राजा विजय सिंह स्वामी, राघोगढ़ ने खान की कमज़ोरी देखकर किसी कारणवश दगा की और अपने आदमियों से पालकी पर पत्थर बरसवाए। तब ख़ान् के हमराहियों[2] ने अपने ढालों से पालकी की रक्षा की और ख़ान् के भाई करीम दीन खाँ ने तलवार सूंत कर राजा के बढ़ते हुए आदमियों को रोका, फिर भी ज़ख्मी पाँव पर पत्थरों के कई घाव लगे। इस हाल का समाचार पाकर ख़ान् के शस्त्रधारी सिपाही घटना स्थल पर आ पहुँचे और राजा ने अपना उपाय असफल देखकर क्षमा चाही, परन्तु ख़ान् ने उस राजा की रफ़ाकत[3] से अपना दिल हटा लिया।

घावों की उपचार अवधि में एक दिन घोड़े पर सवार होकर ख़ान् शाह ज़हूरूल्लाह की ज़ियारत को गए। योगी (मजज़ूब) बाहर एक कोने में बैठकर यादे ईलाही[4] में व्यस्त थे और किसी से बात न करते थे। न वहाँ से उठकर कहीं जाते थे, न कोई सामान रखते थे, केवल एक काला कम्बल ओढ़े रहते थे। उन बुज़ुर्ग के सेवक ने जब ख़ान् के आगमन की खबर सुनी तो इत्तेला की, तब बुलाया और कहा बैठ जाओ। फिर फ़कीर ने पूछा—क्यों आए हो ? हमारे लिए क्या लाए हो ? खान ने निवेदन किया कि मेरा हाल आपको स्वयं ही ज्ञात है। फिर फ़कीर ने कहा हमको कुछ दे। उस समय ख़र्च की तकलीफ़ थी। ख़ान् के पास कुछ न था। बस दुपट्टा अपनी कमर से खोला और फ़कीर को उढ़ा दिया। तब फ़कीर ने कहा अपना दुपट्टा अपनी कमर से बांध ले, कुछ आग्रह के बाद दुपट्टा खान ने ले लिया। फिर दरवेश ने कहा तू साहिबे मुल्को हशम[5] होगा। और संसार में बहुत कुछ सुख-दुख उठाएगा। इस तीसरी भविष्यवाणी से ख़ान् ने फ़िर कमर, हिम्मत बांधी और भविष्य में उनको अपना स्तर (मुकाम) शानदार दृष्टिगोचर होने लगा।

---

[1] सहयोग। [2] साथियों। [3] मित्रता। [4] ईश्वर पूजा।
[5] सल्तन और सेवकों का स्वामी।

बालाराव से युद्ध

स्वस्थ होने के बाद सिरोंज से कूच करके ख़ान शुजालपुर पहुँचे। उन दिनों सिन्धिया का एक सरदार बालाराव उस ईलाक़े[1] पर आक्रमण करने वाला था। इसलिए शुजालपुर के हाकिम ने ख़ाँन् को मुलाज़िमत का संदेश भेजा। जिसे ख़ान् ने स्वीकार न किया परन्तु युद्ध की सारी ज़िम्मेदारी 10,000 रुपये में ठहराई।

इसी अवधि में बालाराव के 6,000 सवार और पियादे, एक पंडित और अज़ीज़ ख़ाँ नामी अफ़गान के नेतृत्व में शुजालपुर आ पहुँचे। उस सेना में मुनव्वर ख़ाँ और उमर ख़ाँ दो रूहेले सरदार भी थे। मोहम्मद अमीर ख़ाँ ने उन्हें कहला भेजा कि तुम दोनो मेरे सहजाति हो। मैंने यहाँ की लडाई का ठेका 10,000 रुपये में लिया है। यदि तुम मेरे रफ़ीक़[2] हो जाओ तो मैं तुम्हें आधा रुपया दे दूँगा। परन्तु उन्होंने उत्तर दिया कि यह बात हमारी जातीय प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है, बस ख़ान् ने दिल मज़बूत करके अपने हमराहियो से कहा कि मुझे घोड़े पर चढाकर मेरे पाँव के ज़ख्मों को रूमाल से बाध दो और शत्रु के समीप पहुँच कर उस पर एक बारगी बन्दूकों की बाढ़ मारो। अतएव ऐसा ही किया गया। मोहम्मद अमीर ख़ाँ के सिपाही तो शत्रु की पलटन पर हमलावर हुए और छा गए। ख़ान् दस, बारह सवारों के साथ लाईनों को चीरते हुए अन्दर घुस गये और अज़ीज़ ख़ाँ से आमने-सामने लोहा लिया उसे घोड़े से मार गिराया और भीड़ को चीर कर सेना के कमाण्डर पंडित को भी भाले पर उठा लिया। उनके मरते ही सारी सेना भाग निकली।

उसके तीन दिन बाद ही बालाराव ने शुजालपुर का घैराव कर लिया और ख़ान् से कहला भेजा कि हमारी नौकरी करो तो आ जाओ। परन्तु ख़ान् ने उत्तर दिया कि इस समय शत्रु की नौकरी करना वीरता और वफ़ादारी के विरुद्ध है। परन्तु यहाँ से हट जाने के पश्चात् फिर कोई आपत्ती नहीं। ख़ान् ने बीच में पडकर दोनों पक्षों में सुलह करा दी। हाकिम शुजालपुर को वहाँ से निकालकर अपने ज़ाब्ते के साथ नागपुर पहुँचा दिया। बालाराव का हस्तक्षेप जब शुजालपुर में हो गया तब बालाराव ने ख़ान को बुलाकर अपने पास मुलाज़िम रख लिया और चार पियादे और 10 रुपये सवार की दर नियत करके ख़ान के साथियों को भी मुलाज़िम रख लिया तथा ख़ान् को मए उनके साथियों के थाना, बैठाना (सिरोंज) अमलदारी हेतु भेजा। वहाँ करमदीन ख़ाँ जो सेना भर्ती के लिए भोपाल गये हुए थे, भाई से आ मिले।

---

[1] क्षेत्र। [2] मित्र या साथी।

जसवंत राव होल्कर से मित्रता

उस वक्त भोपाल का प्रबन्ध फिर बिगड़ गया था। पिण्डारें और मराठे निरन्तर आक्रमण कर रहे थे और आय वसूली छिन्न-भिन्न हो रही थी। उस समय नवाब हयात मोहम्मद खाँ ने राजस्व एकत्रित करने का कार्य ख़ान् के सुपुर्द किया। ख़ान् ने उस काम को आठ मास तक करते हुए अपने सहयोगियों हमराहीयों की संख्या 1000 से अधिक कर ली, और जब तक नवाब भोपाल इस सेना का व्यय वहन करते रहे, ख़ान् भी अपने कर्तव्य निभाते रहे। परन्तु भीतरी षडयन्त्रों से तंग आकर अन्ततः त्याग-पत्र दे दिया। चलते समय हयात मोहम्मद खाँ ने चार तोपें और एक हाथी बतौर इनाम देना चाहा परन्तु, ख़ान् ने अपने स्वाभिमान् के कारण उन्हें अस्वीकार कर दिया।

अभी ख़ान् भोपाल से किसी दिशा में रवाना भी न हो पाए थे कि महाराजा जसवन्त राव होल्कर का सन्देश बाबत सहायता चाहने, आपके पास आया। जसवन्त राव इन्दौर के राजा थे और अपने समय के एक प्रसिद्ध और दिलेर राजा गुज़रे है। उनका एक सेवक कभी ख़ान् के पास भोपाल में रह चुका था। जब उसने राजा होल्कर को राज्य की उधेड़ बुन में देखा तो राजा से आकर कहा कि यदि आप उत्साहवर्धन करें तो अमीर खाँ रूहेला को जो वीरता एवं तुरई में अपना जवाब नहीं रखता अपने साथ मिला लेना चाहिए। उनकी कार्य शैली एव तेज से आपकी आशाए पूर्ण होंगी। राजा ने इस स्वर्णिम परामर्श का स्वागत् किया और उस सेवक को ख़ान के पास भेजा। जब उसने यह सब हाल ख़ान् से बयान किया तो ख़ाँन् ने कहा कि होल्कर एक बडे मराठा सरदार का पुत्र है। वह यदि अपना कोई विश्वास पात्र भेजता तो उत्तम होता। यह सुनकर वह तो लौट गया और जो उत्तर ख़ान से सुना था राजा से जाकर निवेदन कर दिया। तब राजा ने अपने दो विश्वासपात्र मराठों को रवाना किया। उन्होंने आकर अपने राजा की बहुत कुछ प्रशसायें कीं, उस पर ख़ान् ने गुलामी ख़ान् अफ़गान को होल्कर का हाल मालूम करने के लिए भेजा।

वापस आकर उसने कहा कि राजा के पास यद्यपि किसी भी शक्ति का साजो सामान नज़र नहीं आता है परन्तु एक माने हुए मराठा सरदार मल्हारराव होल्कर का पोत्र है। इसलिए सम्भव है कि उसकी मित्रता से बड़े-बड़े कार्य पूर्ण हो जाए। फलस्वरूप श्री ख़ान ने राजा को अपनी मुलाक़ात का शुभ समाचार भेजा।

ख़ान् भोपाल से कूच करके शुजालपुर आए। उस समय होल्कर जो छोटे छोटे गांव लूटते फिरते थे उन्हें शुजालपुर के गाँव वालों ने घेर लिया था। जब यह समाचार ख़ान् को मिला तो खाँन् ने शीघ्र ही उस गाँव का घेराव कर लिया और राजा को छुड़ा लिया। फिर शुजालपुर में दोनों सरदारों की भेंट, सन् 1214 हि/ 1798 ई में हुई। जसवन्त राव होल्कर की उस समय की पोज़िशन नोट करने के क़ाबिल है। उसके बाद उन्होंने जिस कदर भी उन्नति की वह मोहम्मद अमीर ख़ाँ की मित्रता का परिणाम है.

हण्डिया शहर पर आक्रमण

होल्कर वहाँ से कूच करके आशना[1] की चौथ लेते हुए महेन्द्रपुर को रवाना हो गए और फिर वहाँ से चलकर नर्वदा तट पर डेरे डाले। नर्वदा के दूसरे किनारे पर हण्डिया शहर के समीप माहराजा सिंधिया की सेना पडी थी और नदी पार करने योग्य (पायाब) न थी।

ख़ान् ने पिछली रात्री को अपने भाना करमदीन खाँ से कहा कि तुम एक सौ बन्दूक़ची लेकर अभी जाओ और उस पायाब[2] तरफ से दरिया को पार करके शत्रु की सेना पर इस प्रकार से बाड़ मारो कि वह प्रत्येक ओर से बेख़बर हो जाए। तब हम इस उथले-घाट से उतरकर उन पर आ पड़ेगें और काम तमाम कर देगें। अन्तत ऐसा ही किया गया जिससे वे घबरा कर नगर की ओर भागे। तब इसी अवसर पर होल्कर और ख़ान् ने उथले घाट से उतरकर सारी सेना को मार भगाया। फिर शहर हण्डिया को लूटकर बहुत से शत्रुओं का माल इस लडाई में प्राप्त किया।

हण्डिया में एक दिन रहकर और खण्डहर तथा नेहगन ग्रामों की ज़ब्ती लेते हुए ख़ैराउद से घाट पर पहुंचे। वहाँ मेजर यग साहिब महाराज सिन्धिया की ओर से दो पलटने सवारों की, एक रेजिमेन्ट और चार तोपें लिए हुए खड़ा था। ऐसी सगीन (भारी) सेना पर आक्रमण करना कोई आसान बात नहीं थी। परन्तु खान् अपनी अमीअत की कमज़ोर स्थिति की परवाह न करते हुए उन पर आक्रमण करने को तैयार हो गए। शिकारी जंग आरम्भ कर दी और केवल सत्रह सवारों सहित एक पर्वत के नीचे से गश्त (चक्कर लगा) धावा बोल दिया। शत्रुओं की पक्तियों को चीरकर अधिकतर शत्रुओं को मार डाला। फिर दूसरी दिशा में पलटन की ओर रूख़ किया। इस में खान् के सत्रह सवारों में से आठ तो मर चुके थे। और केवल नौ शेष थे। फिर भी खाँ ने तोपों का रूख बचा कर दूसरी दिशा से आक्रमण कर दिया। इस

---

[1] यह आस्टा है। [2] उथले स्थल अथवा भाग।

समय आसमानी-मदद[1] के तौर पर एक हज़ार सवार दूसरी दिशा से आक्रमण करके सहायता में सम्मिलित हो गए। उधर राजा होल्कर भी छ सौ सवारों सहित ख़ान् से आ मिले तब सब ने एक जुट होकर इस पल्टन को भी मार भगाया। और दो जंजीर हाथी[2], चार तोपों के अतिरिक्त बहुत सा माले ग़नीमत (शत्रु का माल) हाथ आया।

दुर्ग महसर की विजय और मोहम्मद अमीर ख़ाँ का जसवन्त राव होल्कर को सिंहासनारूढ़ कराना

होल्कर और ख़ान् इस विजय के पश्चात् उस दिन तो वहीं ठहर रहे और दूसरे दिन नर्वदा के तट पर उन्होंने डेरे डाल दिये। महसर का संरक्षक बिहारीमल था। उसने भयभित होकर नौकाऐं भेजी जिन पर सवार होकर होल्कर और ख़ान नगर में प्रविष्ट हुए और समस्त धन व सम्पत्ति, हाथी ख़ाना, जवाहर ख़ाना को अपने अधिकार में ले लिया।

उस समय ख़ान् ने त्याग की भावना दर्शाते हुए राजा को सिंहासन पर बिठाया। दूसरे दिन जब ख़ाँन् राजा से मिलने आये और राजा को सिंहासन पर बैठा देखा तो मसलेहत के तहत सिंहासन से दूर होकर बैठ गये। तब राजा ने हर प्रयास से अपने बराबर बिठाना चाहा परन्तु वह नहीं माने और उत्तर दिया कि यह सिंहासन तो आपके पुरखों से आपको मिला है। आप ही को मुबारक रहे। मैं तो मसनदनशीं कल का हूं।

सिरोंज पर मोहम्मद अमीर ख़ाँ का शासकीय क़ब्ज़ा

महसर दुर्ग की विजय की खुशी में राजा होल्कर ने सन् 1798 ई में, सिरोंज ख़ान् के सुपुर्द कर दिया। अमीरूद्दौला अमीरूल मुल्क, शमशीर जंग की उपाधि प्रदान की। अधिक संख्या में धन और जवाहर भी दिये। तब नवाब ने मोहम्मद युसुफ़ ख़ान् नामक जमादार, जलालाबादी को सिरोंज का पदाधिकारी बनाया। यह प्रथम मुल्की क़ब्ज़ा[3] था जो मालवा के क्षेत्र में हुआ। मोहम्मद अमीर ख़ाँ नवाब के रूप मे इसके मालिक बने। अर्थात यह मुल्की क़ब्ज़ा भावी रियासत टोंक की आधारशिला थी।

---

[1] भगवान की सहायता।

[2] फारसी भाषा की तरकीब अनुसार हाथी के पहले जंजीर, ऊँट से पहिले नफ़र, मज़दूर से पूर्व भी नफ़र, घोड़े के पूर्व लगाम, फल और जवाहरात से पूर्व दाना, तलवार से पूर्व जर्ब लगाते हैं जो इन शब्दों की विशिष्टता को दर्शाता है।

[3] किसी भी मुल्क (क्षैत्र) पर पूर्ण शासकीय अधिकार।

संधि पत्र के अनुसार समस्त मुमालिक महरूसा (नियंत्रित प्रदेशों) में से आधा राजा का और आधा नवाब अमीर खाँ का था।

बाद में आधे आध की माग से परेशान होकर राजा ने नवाब के साथियों को लालच देकर भगाना चाहा ताकि नवाब की शक्ति कम हो जाए परन्तु यह रहस्य खुल गया नवाब यह समाचार सुनकर अत्यन्त क्रोधित हुए और राजा के पास आना-जाना छोड़ दिया।

मेजर यंग का ममालेहत तलब करना

इसी दौरान मेजर यंग ने अफगान सवारों को अपनी सेना मे ले लिया। मराठा सवारों का भर्ती करके एक बड़ी सेना के साथ होल्कर से लड़ने को प्रस्थान किया। होल्कर यह समाचार सुनकर घबराए और तत्काल नवाब के पास आकर कहने लगे—

शत्रु सिर पर आ पहुँचा है। आपकी सहायता के बिना उससे निपटना दुष्कर है। दुश्मन चूंकि जोर पैदा कर दिया है अर्थात् शक्ति एकत्रित करली है। इसीलिए मेरी राय में अपना हित इसमें है कि अभी तो उसके मुकाबले से हम टल जाएं और बाद में जब मुकाबले की ताकत होगी तब उसे देख लेंगे।"

नवाब ने आरम्भ में तो नाराज़गी दिखाई परन्तु फिर राजा से मन साफ़ करके कहा कि— युद्ध स्थल से मुँह फेरना सिपाहियों का सिद्धान्त नहीं है। विजय खुदा देता है सेना की कमी या अधिकता विजय का आधार नहीं है। अतएव दोनों सरदार मुहिम[1] की तैयारी में व्यस्त हो गए। इस दौरान मेजर यंग की सेना महसर से आठ कोस की दूरी पर आ पहुँची। नवाब और होल्कर को जब यह सूचना मिली तो तोपखाने की चौकी प्रत्येक स्थल पर जो महसर से तीन कोस की दूरी पर है, छोड़कर सवारों सहित शत्रु को घेरे में ले लिया और इतना अधिक परेशान किया कि मेजर की सेना दिन भर में बड़ी कठिनाई से तीन कोस आगे बढ़ सकी। फिर राजा के निरन्तर कहने पर रात्रि ही को सवार होकर शत्रु पर आक्रमण किया और केवल पचास सवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए तथा काई सी फाड दी। इस कार्य में नवाब के समस्त साथी काम में आ गए और मात्र पांच ही बचे। जब वहाँ से अपने निवास स्थल को आये तो देखा कि सिपाही शत्रु से लड़ रहे थे और दोनों ओर से तीर और तलवार चल रहे हैं शत्रु के अनुभवी सिपाहीयों ने नवाब के अनुभवहीन सिपाहीयों को तोपों पर रख लिया। यह देखकर नवाब ने शत्रु के पीछे पहुँच कर बहुत से सिपाहियों को मार डाला। इस समय अकस्मात् राजा होल्कर छ सिपाहियों सहित वहीं

---

[1] अभियान/ युद्ध।

[illegible] अन्धेरे [illegible] को शत्रु समझकर भाला ताना परन्तु महाराजा ने [illegible] हूँ।' यह सुनकर और अवाज़ पहचान कर [illegible] लिया। दोनों युद्ध स्थल से लौट आए। परन्तु कुछ ही [illegible] शत्रु की सेना ने इन्हें कुछ आदमी समझकर उन पर आक्रमण कर [illegible] ने अपने साथियों से कुछ को तो आक्रमण कर शत्रु को उलझाये [illegible] और [illegible] प्रकाश की भांति शत्रु के उन सिपाहियों पर आक्रमण [illegible] ही [illegible] दुश्मन को सोच रहे थे। इस तीव्र गतियुक्त आक्रमण से शत्रु के लश्कर में ऐसी हलचल मची कि वे अंधेरे में मित्र या शत्रु की पहचान भूल गये और पीछे की सेना ने अपनी ही अगली पंक्तियों पर तोपों से आक्रमण प्रारम्भ कर दिया।

महाराजा और नवाब अपने शेष सवारों सहित जब महसर आये तो वहाँ अपनी सेना का कोई निशान तक नहीं पाया। केवल कुछ व्यक्ति दुर्ग में रह गये थे, जो [illegible] भयभीत थे। तब महाराजा और नवाब जवाहर खाँन में गये और वहाँ से अधिक [illegible] मूल्यवान जवाहरात उठा सके, बाहर ले आये और रात्रि को धार क्षेत्र में धरमपुरी में विश्राम किया। तत्पश्चात् वहाँ से प्रस्थान करके भीलों के एक पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचे। और भीलों के सरदार को सिरोपाव[1] एवं इनाम देकर मेजर यंग के कैम्प की रसद बन्द कराने की ताकीद की। तब भील बड़ी संख्या में दौड़ पड़े और कैम्पों का जाना दूभर कर दिया। फिर नवाब ने मेजर यंग के सिपाहियों को जो अधिकतर अफगानी और [illegible] थे अधिक वेतन का लालच देकर अपनी ओर तोड़ लिया था या [illegible] था। इस प्रकार मेजर के लश्कर में हलचल पैदा हो गई। अन्तत परेशान होकर मेजर यंग ने नवाब को संदेश भेजा कि तुम यदि मेरी सफाई राजा होल्कर से करा दो तो मैं आ जाऊं। इस पर नवाब ने महाराजा से परामर्श किया। महाराजा ने कहा कि शत्रु को सभी तरह[2] से भी परास्त करना चाहिए। इस पर नवाब ने क्रुध होकर कहा कि किसकी ताकत है कि जिसको मैं शरण दूं उसकी ओर कोई एक नज़र से भी देख सके।

आखिर महाराजा ने यह बात स्वीकार कर ली और दीपालपुर होते हुए धार क्षेत्र के ग्राम कोन्डा में पहुँचे और वहा पर यंग साहिब को बुलवाया। नवाब उसे लेने महसर आ गये। जब वहाँ पहुँचे तो मेजर स्वयं अगवानी के लिए आया और सलामी की तोपें छोड़कर अत्यन्त शिष्टता से मिला और पगड़ी मंगवाकर नवाब के सिर पर

---

[1] [illegible]

[2] [illegible] करके धोखे से यंग को बन्दी बनाना चाहता था।

बांधी और नवाब का रूमाल अपने सिर पर बांधा। इस तरह दोनों पगड़ी बदल भाई बन गये। फिर उनको महेसर में ले गया और सब कारखाना नक्द सम्पूर्ण एवं जवाहरात को नवाब को सौंप कर उनके साथ महाराजा के पास गया। नवाब की सहायता के कारण महाराजा इस फिकरों में बदल न सके परन्तु इच्छा इसे बन्दी बनाने की थी। इस बदनियत का दण्ड इसी रात्रि को उनको मिल गया। जब वह अपने दरबार में मशालें जला के गोलियों से निशाना उड़ा रहे थे तो अकस्मात उनकी बन्दूक फट गयी और इसकी चोट से एक आँख फूट गई।

होल्कर और नवाब का अलग होना

इसके बाद महाराजा ने महेसर जाकर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। मेजर याग के कैम्प को तोड़कर उसे अपने ढंग से व्यवस्थित किया। मेजर याग को बहाल करके टोंक और रामपुरा (अलीगढ़) के कब्जे पर रवाना किया। यह क्षेत्र कभी महाराजा जयपुर ने होल्करों को दे दिया था। फिर महाराजा ने विशाल सेना के साथ प्रस्थान करके निमाड़ प्रान्त मालवा पर डेरा किया और चौथ वसूल की। इस समय नवाब ने कहा कि अब दोनों सेनाओं का गुजारा एक साथ नहीं हो सकेगा अतएव उचित है कि दोनों सेनाएं विलग होकर अपने अपने परगनात की वसूली से गुजारा करें, जब कोई विपत्ति आ पड़े तो साथ हो जायें। महाराजा ने यह बात स्वीकार कर ली और सन 1804 ई में दोनों सेनायें अलग हो गईं।

नवाब ने [illegible] खां को कुछ सवारों सहित महाराजा के पास छोड़ दिया और [illegible] मालवा से मामला वसूल कर बरसात के मौसम में सिरोंज [illegible] युसुफ खां अफगान ने जो नवाब की तरफ से सिरोंज का हाकिम था [illegible] जो कभी भोपाल में बन्दी किए जाने पर भाग निकला था [illegible] भोपाल में अपना सेवा काल में कभी मोहम्मद अमीर खां का नौकर [illegible] था [illegible] मिला। नवाब ने इसको मुकदमात करने की [illegible] परगने में दो ग्राम एक आनन्दपुर दूसरा नगर थाअनको जागीर में, वंशानुक्रम देकर सनद लिख दी।

इस समय अस्सी हजार सवार और पैदल नवाब के पास एकत्रित हो गए थे।

अंभाजी से युद्ध

नवाब ने सिरोंज से प्रस्थान करके मल्हार के थानेदार से मामला लिया और फिर रवाना होकर सागर के क्षेत्र में आ गए। सात हजार रुपये वहाँ से वसूल किया। कैलासा पहुंचने पर इतनी ही धनराशि प्राप्त की। कैलासा से आगे बढ़ने पर देवरीकरणी का राजा अंभाजी एक युद्ध में निपुण लश्कर के साथ मुकाबले पर आया

परन्तु नवाब ने उसके लश्कर में घुसकर बहुत से व्यक्तियों को मार डाला। तब अंभाजी ने पीछे हटकर शहर में शरण ली और नवाब ने दरिया के किनारे पर मोर्चा लगाया।

अगले दिन प्रातःकाल जबकि नवाब फोड़े की पीड़ा के कारण मोर्चों के पास लेटे हुए थे तब अंभाजी ने तोपों और बन्दूकों से नवाब के मोर्चा पर आक्रमण किया, नवाब यह स्थिति देखकर इस दशा में भी उठ बैठे और फोड़े पर कपड़ा बांधकर अश्व पर आ बैठे। पांच सौ सवार साथ लेकर शत्रु की सेना पर आक्रमण कर दिया जिसके भय से अंभाजी मैदान छोड़कर दुर्ग में चले गए।

तब नवाब का लश्कर तुरन्त नगर में घुस गया। नगर को खूब लूटा। लूट का अनुमान उस फ़र्द[1] से लगाया जा सकता है जो अंभाजी ने पेशवा को भेजी थी। जिसमें लगभग नौ करोड़ की क्षति का वर्णन किया था। नवाब ने नगर में प्रविष्ट होकर दुर्ग पर मोर्चा लगाया और अंभाजी को तंग करके दो लाख रुपये का मामला ठहराया। सुलह होने पर मोर्चा हटा लिया परन्तु नवाब के विश्वास पात्र गुलामी खाँन जो वार्ता हेतु दुर्ग में अंभाजी के पास आया जाया करता था, वह एक विशाल दफ़ीना (खजाना या गड़ा धन) का समाचार पा कर उसने नवाब से कहा कि आपने बहुत कम रुपये पर सुलह कर ली। तब नवाब सुलह से फिर गए और दुर्ग पर मोर्चा लगा कर बैठने लगे। अंभाजी ने नागपुर के राजा, राघव जी भौंसला से सहायता मांगी, भौंसला ने बेनी सिंह के नेतृत्व में 40,000 क़लमी नौकर[2] पिण्डारी सवार, अरबों की सेना और तोप खाना अंभाजी की सहायता को भेज दिए। अकस्मात् उस समय नवाब के पठान साथी वेतन के तकाज़े पर बलवा करके उनसे अलग हो गए।

नवाब ने अपने भाई करमदीन खाँ को लिखा की शीघ्र महाराजा होल्कर को सोंदवाड़ा से ले आए। महाराजा वहाँ से प्रस्थान करके अभी देहवास तक ही पहुँचे थे कि राघव जी भौंसला की सेना सागर आ पहुँची। अब नवाब को यह विचार आया कि मेरी नामवरी तो तब है जब महाराजा होल्कर के आने से पूर्व ही शत्रु को परास्त कर दूँ। वरन् महाराजा के सम्मिलित होने पर यह विजय उनके नाम से होगी। नवाब ने दो हज़ार सवारों से ही शत्रु पर आक्रमण कर दिया और तीरो तलवार की वर्षा कर

[1] सूची।

[2] दीवान विभाग में रखा जाने वाला रजिस्टर जिसमें स्थायी कर्मचारियों का रिकार्ड रखा जाता था, में दर्ज व्यक्ति।

दी। उस समय शत्रु की एक पलटन ने जो युद्ध में पंक्ति बांधे खड़ी थी अचानक बन्दूक की एक बाड़ मारी जिससे नवाब के बहुत से साथी मारे गए या घायल हो गये। जो नवाब के साथ डटे रहे उनकी संख्या नौ से अधिक न थी और शत्रु ने उनको हर तरफ से घेर लिया था और इस भयंकर शक्ति से मुक़ाबला किया कि नवाब का घोड़ा घायल होकर नवाब को गिरा कर भागा। नवाब के सिपाहियों ने जब नवाब के घोड़े को इस तरह भागते देखा तो स्वयं भी भाग खड़े हुए और नवाब के मारे जाने का समाचार फैला दिया।

नवाब भालों से घायल हो जाने के पश्चात् भी भूमि से उठे और एक सवार का घोड़ा लेकर उस पर बैठ गए। परन्तु उस घोड़े में वांछित फुर्ति न पाकर उचित समझा कि घमासान युद्ध से आगे बढ़कर बाहर निकल जाएं। जैसे ही नवाब मआरके[1] से बाहर निकले तो दो तीन सवार उनके पास एकत्रित हो गए और अपने डेरों को लूटने से बचाने में लग गए। नवाब ने इस पराजय का मौलिक विच्छेद का जो उन्होंने अभागों से संधि करने के पश्चात् की थी दण्डित माना। भागे हुए सिपाहियों में साहस दुबारा जागृत हो गया और लड़ते-भिड़ते एक दरिया के तट पर पहुंच गए।

नवाब के भाई करमदीन खाँ अभी महाराजा होल्कर के साथ सिरोंज तक ही गये थे कि नवाब की पराजय का समाचार सुना। वह महाराजा से अलग होकर पाँच हजार सवार लेकर नवाब के पास आ पहुंचे और अकबर खाँ इत्यादि सेना के सरदारों की नमक हरामी का हाल सुनकर उनका पीछा किया और उन्हें मारकर वापस हुए। इससे नवाब अत्यन्त प्रसन्न हुए और महाराजा होल्कर को लिखा कि यद्यपि कुछ लोगों की नमक हरामी से सेना भाग गई थी और मेरा जीवन भी संकट में आ गया था परन्तु खुदा ने बचा लिया। मैंने शत्रु की सेना को भली भांति आकलन कर लिया है, यदि आप को नागपुर के राजा से बदला लेना हो तो यह अच्छा अवसर है।

इधर महाराजा इस ताक में थे कि नवाब यदि वास्तव में मारे गए हैं तो सिरोंज के परगने को अभी कब्जा लिया जाए। इस पत्र को पढ़ने के पश्चात् इस इरादे से दूर रहे और नागपुर के अभियान को इस समय उचित नहीं समझा।

फिर नवाब सिरोंज आकर महाराजा से मिले उस समय उनके साथ दस या बारह हज़ार सवार व पैदल थे।

---

[1] घैर।

नवाब के भाई करमदीन की मृत्यु

चूंकि बिना धन प्राप्ति नवाब का जीवन यापन असम्भव था अतएव उन्होंने सिरोंज से कूच करके शुजालपुर को जा घेरा और नवाब के सिपाही नगर को लूटने के लिए बढे तब करमदीन खाँ उन्हें रोकने के लिए नगर में गए परन्तु किसी नगरवासी ने उन्हें गोली का निशाना बना लिया। क्योंकि वे भी अपनी रक्षा के लिए जगह जगह लड रहे थे। गोली सिर में लगने के कारण करमदीन वहीं स्वर्गवासी हो गए।

उस समय नवाब दुर्ग के घेरे में व्यस्त थे। तब दुर्ग को शीघ्र विजय कर भाई के शव पर आए और विधि के विधान पर संतोष कर के उन्हें वहीं दफ़न किया और भाई के पद पर अपने भान्जे को नियुक्त किया।

इस दौरान महाराजा होल्कर ने इन्दौर पहुचकर अपने विवाह की तैयारी आरम्भ करदी। नवाब ने हिम्मत राय को अपनी ओर से इस समारोह में सम्मिलित होने हेतु भेजा। उस समय महाराजा के विचार नवाब के प्रति अच्छे नहीं थे क्योंकि राजा कंवर जो कि शुजालपुर का हाकिम था, नवाब की शिकायत करके महाराजा को भडका रहा था। उसने यह भी कहा कि नवाब गुप्त रूप से काशीराव से मिले हुए हैं और महाराजा होल्कर को पकडने की फिक्र में है इस स्थिति में महाराजा को नवाब की ओर से भ्रम और संशय बहुत बढते रहे। राय हिम्मत राय जब इन्दौर पहुचे तो महाराजा ने उनसे पूछा कि नवाब हमारे बुलाने से आ जाएगे या नहीं। तब राय साहिब जिनको महाराजा की संशयात्मक स्थिति का ज्ञान नहीं था, उत्तर दिया क्यों नहीं आएगे ? अतएव महाराजा ने उन्हीं को लाने के लिए भेजा।

जब वह नवाब के पास पहुचे और उन्हें यह वस्तु स्थिति बताई तो नवाब अपनी समस्त सेना शुजालपुर में छोडकर, तीन सौ सवारों को लेकर इन्दौर रवाना हुए यह अभी मार्ग में ही थे कि राजा कंवर ने महाराज से कहा कि नवाब आपके बुलवाने से कब आने लगा। वह तो शुजालपुर में बैठा बातें बना रहा है महाराजा ने नशे की हालत में अपने अधिकारियों को आदेश दे दिया कि तुम सेना लेकर नवाब को किसी भी तरह यहाँ ले आओ। अधिकारियो ने जब पहली ही मंजिल पर नवाब की सवारी आती देखी तो महाराज के शिष्य हरनाथ ने आगे बढ़कर सलाम किया। नवाब ने पूछा तुम क्यो आए हो ? तो उसने उत्तर दिया कि सरकार की अगवानी को आए हैं। इन सरदारों ने जब नवाब की तरफ़ से कुछ भी कटुता नहीं देखी तो एक दूसरे से कानाफूसी करने लगे। नवाब ने अपनी बुद्धिमानी और अनुभव से जान लिया कि दाल में कुछ काला है। उधर महाराज के लोगों ने यह सोचा कि नवाब की सेना सहित

आना निरर्थक नहीं है। नवाब ने यह सोचकर कि इनको दृष्टि में बचाने के लिए इन्हें अपने पास ही बैठाना उचित रहेगा। अतः [illegible] कहा कि उचित प्रतीत नहीं होता कि मैं तो हाथी पर बैठा चलूं और तुम [illegible]। तब वे लोग [illegible] की इच्छा को ताड़ गए चूंकि अभी भी [illegible] हुआ था इसलिए उसे प्रकट करना उचित नहीं समझा और नवाब की इच्छा [illegible] हौदे में बैठ गए और नवाब के सवार, घेरा बांधकर चलने लगे।

नवाब की वीरता

नवाब की सवारी जब इस [illegible] से इन्दौर के समीप पहुँची तो [illegible] ने दौड़कर महाराज को समाचार सुनाया [illegible] और परम्परा अनुसार [illegible] को नहीं आए। उस समय [illegible] भी महाराज के साथ था। तब [illegible] से कहा कि तुमने शुजालपुर में इतना [illegible] फैलाया। नवाब ने [illegible] मैंने तलवार की शक्ति पर किया [illegible] शुजालपुर [illegible] बैठे ही [illegible] कमर में [illegible] उसके पहलू में [illegible] आ गए और उस पर [illegible] महाराज के [illegible] और श्यामराव [illegible] ने महाराज को [illegible] और [illegible] पकड़कर बाहर कर दिया [illegible] नवाब की [illegible] महाराजा ने श्यामराव के [illegible] क्षमा चाही परन्तु दोनों पक्षों [illegible] बात साफ़ नहीं हुई। फिर महाराज ने [illegible] और नवाब से बेवफ़ाई की ठानी। तब [illegible] दिन नवाब ने कुछ सोचकर महाराजा के डेरे में अकेला जाना आवश्यक समझा।

सूचना मिलने पर महाराजा ने [illegible] लिया [illegible] नवाब ने [illegible] आपसे एकान्त में कुछ कहना है [illegible] और [illegible] और नवाब ने अचानक [illegible] से कटारी दाँए हाथ में लेकर कहा कि अपनी [illegible] यदि मेरे मार डालने से आपको [illegible] शत्रु के बहकाने से अकारण मेरे प्राण [illegible] यह सुनकर महाराजा ने क्षमा चाही और [illegible] सन्धि कर ली और अनेक युद्धों में नवाब ने [illegible] दिया।

होल्कर और नवाब का सिन्धिया से युद्ध और उज्जैन विजय

जब होल्कर पाईयों[1] को सिन्धिया के विरूद्ध उकसा कर लूटमार की तब बलवन्त राव बाकडा[2] और चौरस[3] साहिब फिरगी को महाराजा होल्कर ने नवाब की सहायता से पराजित किया तथा उज्जैन को खूब लूटा। तब सिन्धिया बहुत झल्लाये और स्वयं कूच करके नर्वदा तक चले आए और वहाँ घूम फिर कर अपने सब कैम्पों की (नरावदी साहिब का कैम्प, सन्लज साहिब का कैम्प, मिस्केल साहिब का कैम्प और चीतू खाँ तथा करीम खाँ पिण्डारों का गिरोह) संख्या की गणना की तो समस्त दल की संख्या लगभग साठ हज़ार थी जो होल्कर के विरूद्ध सदा-शिव राव और सरजी राव के नेतृत्व में आगे बढ़ी। जब यह सेना नर्वदा से उतर कर उज्जैन के समीप पहुँची तो होल्कर ने नवाब के पन्द्रह हजार चुने हुए सवारों के साथ हरावल करके शत्रु का सामना करने को रवाना किया। स्वयं बीस हजार सवारों सहित वहीं ठहरे रहे। नवाब ने समय अनुसार उज्जैन में कयाम किया और एक सप्ताह तक सिन्धिया की सेना से करावली[4] युद्ध करके महाराजा होल्कर को लिखा कि शत्रु की सेना बहुत है। आप भी आकर यदि सम्मिलित हो जाओ तो शत्रु को दबा लेंगे, इस स्थिति में महाराजा होल्कर ने तुरन्त कूच किया और दोनों ने मिलकर शत्रु को ऐसा दबाया कि वह युद्ध करने को विवश हो गया एक ओर तो होल्कर की सेना युद्धरत थी और दूसरी ओर नवाब की परन्तु महाराजा ने भूल यह की कि नवाब को सूचित किए बिना सरजीराव पर आक्रमण कर दिया और उसने इस अवसर का लाभ उठा कर मुकाबला इतनी तीव्रता से किया कि महाराजा की सेना को पीछे हटा दिया और तोपें छीन ली।

नवाब यह सुनकर दौड़े हुए महाराजा होल्कर की सहायता को आए और शत्रु से उनका तोप खाना वापिस छीन लिया पाँच दिन तक करावली युद्ध होता रहा तब छठे दिन महाराजा होल्कर ने नवाब के परामर्श से युद्ध का मानचित्र पुन जमाया युद्ध दूसरे ही दिन प्रातकाल से ही आरम्भ हो गया और दिन भर चलता रहा

---

[1] इफतेखारूत्तवारीख में पाईयों के स्थान पर बाईयो अर्थात् रानियों अंकित है जो सही है।

[2] इफतेखारूत्तवारीख में केवल बलवन्त राव अंकित है।

[3] इफतेखारूत्तवारीख में जोरस अंकित है।

[4] युद्ध कौशल्य में हरावल दस्ता सामने की सेना का आकलन करने हेतु आगे बढ़कर कार्यवाही करना है

सरजेराव और बगड़ी साहिब के लश्कर ने महाराजा होल्कर की सेना को पीछे धकेल दिया। तब नवाब अपने लश्कर से अलग होकर मात्र तीन सौ सवारों सहित होल्कर की सहायता को पहुंचे। शत्रु ने गोले और छर्रे मारना आरम्भ कर दिए जिससे नवाब का घोड़ा चमका इसका नाम बरछी बहादुर था यह घोड़ा घायल होकर गिरा और मर गया तब नवाब के भान्जे सालेह मोहम्मद खां ने अपना घोड़ा नवाब को दे दिया। घोड़ा बदलने के अन्तराल में नवाब के सवारों को यह आशंका हुई कि नवाब परलोक सिधार गए और वे भाग निकले इस पर भी नवाब ने आक्रमण करके महाराजा की पैंतीस तोपें छीन लीं। उस समय तक दो घड़ी रात व्यतीत हो गई थी इसलिए होल्कर और नवाब अपने डेरे में चले गए।

दूसरे दिन नवाब ने महाराजा को अत्यन्त परेशान देखा तो कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि हमारा और तुम्हारा गुज़र मालवा में उस समय तक था जब तक कि महाराजा सिन्धिया दक्षिण में थे अब वह यहाँ आ गए हैं तो अपना सांग गुज़ारा हुआ नज़र नहीं आता नवाब ने कहा कि आप चिन्ता नहीं करें मैं इसका उपाय कर सकता हूँ। महाराजा होल्कर ने स्पष्टतः पूछा कि क्या करना चाहिए। नवाब ने सुझाव दिया कि कुछ समय के लिए युद्ध छोड़कर चल देना चाहिए। अतएव दूसरे ही दिन रतलाम की ओर कूच किया और महाराजा सिन्धिया के क्षेत्रों को लूटते हुए रियासत धार के एक कस्बे से मामला[1] लिया अर्थात् चौथ वसूल की वहाँ से चलकर नगर रतलाम जो सिन्धिया के अधिकार में था लूटा। वहाँ बहुत सा सामान, स्वर्ण एवं जवाहरात हाथ लगे जिससे सेना मालामाल हो गई। तत्पश्चात् जावरा के क्षेत्र में जाकर नीमच के समीप पड़ाव डाला। फिर महाराजा होल्कर और नवाब इन्दौर लौट आए। इस काल में महाराजा दौलत राव सिन्धिया ने करीम खाँ और चीतू खाँ पिण्डारी दल के सरदारों को उज्जैन से बुलाकर नवाब के मुक़ाबले के लिए रवाना किया। उन्होंने इन्दौर पहुँच कर महाराजा होल्कर और नवाब अमीर खाँ की सेनाओं को घेर लिया और इस हद तक परेशान किया कि वे इन्दौर छोड़कर, समरूर के घाट पर चले गए। पिण्डारियों ने पीछा करके वहाँ भी उन्हें परेशान किया। तब महाराजा

---

[1] चौथ।

होल्कर ने नवाब अमीर ख़ाँ को पिण्डारों के उपाय के लिए भेजा। पिण्डारियों ने नवाब के आने की ख़बर सुनकर उन्हें मार्ग में ही आ घेरा परन्तु नवाब की सेना ने उन्हें मार भगाया। तत्पश्चात् महाराजा होल्कर और नवाब शान्ति से इन्दौर लौटे और फिर वहा से चलकर धार, अमजीरा, झालवा और प्रतापगढ से चौथ लेते हुए जावरा और निबहेड़ा आ गए। कुछ दिन वहाँ ठहर कर श्रीनाथ द्वारा पहुंचे और वहाँ से 50 हज़ार रूपये वसूल किए।

तब महाराजा सिन्धिया ने एक जर्रार[1] लश्कर पुन तैयार किया। इसके सरदार बालाराव सदाशिव राव, करीम ख़ाँ चीतू ख़ाँ, एवं शैख़ कलब अली और वाल्यस[2] साहिब अंग्रेज थे जब यह लश्कर महाराजा होल्कर से लड़ने के लिए समीप पहुँचा तो होल्कर ने उससे लडना उचित नहीं समझा एवं शाहपुर से मामला लेते हुए टोंक आ पहुँचे। चैन सिंह जो सिन्धिया की ओर से टोंक की सुरक्षा पर नियत था भागकर रामपुरे चला गया फिर महाराजा होल्कर और नवाब, इन्दरगढ के मार्ग से कोटा पहुँचे और वहाँ से बाड़ोली, छबडा गोगेर, राजगढ एवं पाटन से मामला लेते हुए आष्टा पहुँचे वहाँ से नवाब ने तो खानदेश जाने का इरादा किया और होल्कर ने चान्दगढ का इस प्रकार दोनों सरदार पुनः अलग-अलग हो गए।

नवाब खानदेश के क्षेत्र में पहुंचकर जब आंजोर आए तो वहां का सरदार मुक़ाबले पर आ गया तब नवाब ने गज पर सवार होकर उसका मुक़ाबला किया और सवारी पर रहते हुए ही उसे मार डाला। शहर आजोर पर अधिकार करके अत्यधिक सामान लूटा। फिर वहाँ से आगे बढकर औरंगबाद के क्षेत्र से जज़िया[3] लिया और भम्बर पहुँचे। फिर वहां से ज़ब्ती (चौथ) लेकर देव गाँव को लूटा। परन्तु जब सिन्धिया का लश्कर और निज़ाम हैदराबाद का लश्कर नवाब का पीछा करते हुए उनके समीप आ पहुंचे तो नवाब ने अकेले ही उनके मुक़ाबले को टाल देना उचित समझा और भम्बीर को लौट आए औरंगाबाद के पास होते हुए सेनकौर घाटी में जो गोदावीर नदी पर स्थित है आए ज़ब्ती ली। वहाँ के एक निवासी ने नवाब को सूचना दी कि उस स्थान के समीप बहुत सा माल भूमिगत है और मैं वह स्थान जानता हूँ परन्तु शर्त यह है कि यदि उस माल में मुझे भी भागीदार बना लें तो बता दूँ। नवाब ने इस बात को स्वीकार

---

[1] अत्यन्त भारी [2] वाईस साहिब।

[3] कर (मुस्लिम सल्तनत में गैर मुस्लिमों से उनकी सुरक्षा व्यवस्था हेतु लिए जाने वाली राशि जो ज़कात ($2\frac{1}{2}$ %) से अधिक नही होना चाहिए।

करके मोहम्मद शाह खाँ एवं गुलामी खाँ विश्वास पात्रों को उसके साथ भेजा। वहाँ उन्होंने एक पुरानी दीवार में ताक देखा जब उसे तोड़ा तो एक प्रवेश द्वार पर दृष्टि पड़ा। फिर मशाल जलाकर जब उसमें से गुज़रे तो एक जीने पर पहुचे और सीढ़ियों से नीचे उतरे तब एक कोठरी नजर आयी। जब उसका द्वार तोड़कर अन्दर गये तो वहाँ बड़े-बड़े घड़े चूने से बन्द करके रखे हुए थे। जब एक माट को तोड़ा गया तो उसमें से साँप के अण्डे और बच्चे निकले। तब यह समझ लिया गया कि खज़ाना मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो गया है और साँपों का लालन पालन स्थल बन गया है।

वहाँ से प्रस्थान कर पेशवा की अमलदारी में गायगाव और तोलगाव पहुचे। ये नगर नदी के तट पर आबाद थे। तब नवाब ने नगरवासियों को धोखा देकर नौकाएं प्राप्त की और कई चक्करों में समस्त सेना दरिया के पार उतार दी। तब नवाब की सेना ने नगर पर अधिकार करके धन सम्पत्ति, जवाहरात और नकदी व सामग्री को खूब लूटा परन्तु पीछे से नागुजी पण्डित और नवाब शहामत खाँ जो होल्कर के कर्मचारी थे वे भी वहां आ पहुंचे और नगर का शेष सामान उनके हाथ लगा। तत्पश्चात् नवाब और पण्डित ने कूच करके नारायण गढ़ के समीप डेरा डाला। यह एक सुदृढ़ दुर्ग था। नवाब ने दुर्ग पर गोले मारने आरम्भ किए और शीघ्र ही दुर्ग खाली करा लिया और वहां की तोपें लेकर दूसरे ही दिन वहाँ से कूच किया। मार्ग में सिन्धिया का पच्चीस हज़ार सवारों का लश्कर मुकाबले पर आ पहुचा। उसकी टक्कर पहले नागुजी पण्डित और शहामत खाँ की सेना से हुई, जिसको कई घण्टो तक लड़कर पराजय का मुह देखना पड़ा। सिन्धिया की सेना ने इस पराजय से उत्साहित होकर नवाब पर हमला किया परन्तु नवाब जमशेद खाँ और मोहम्मद सईद खाँ ने जो चालीस यक्का (इक्का/ तांगा) सवारों में थे आक्रमणकारियों को रोका परन्तु फिर भी शत्रु नवाब तक आ पहुंचा और घमासान युद्ध आरम्भ हो गया।

अन्ततः सिन्धिया का लश्कर (सेना) भयभीत होकर भाग गया और अत्यन्त कठिनाई पूर्वक नदी पार करके स्वयं के डेरों तक आया परन्तु फिर भी नवाब के सवारों ने नदी पार करके उनका पीछा किया और सध्या हो जाने पर अपने डेरे पर लौट आए।

पूना की विजय

सन् 1804 ई में महाराजा होल्कर और नवाब ने सिन्धिया से लड़ने के लिए पूना पर आक्रमण किया क्योंकि पेशवा इस समय सिन्धिया के संरक्षण में था दोनों सरदार प्रस्थान करके पन्ढरपुर पहुंच गए। वहाँ से चलकर ग्राम झुरझुरी में कयाम[1] किया जो पूना से दस कोस उत्तर में है वहाँ से महाराजा होल्कर ने पेशवा को लिखा कि जब आपके लिए सिन्धिया और हम समान हैं तो यह आपको शोभा नहीं देता कि आप एक का पक्ष लें और दूसरे को आपका शुभेच्छु नहीं समझें वरन् आपका बड़प्पन तो यह है कि दोनों पक्षों को समझाकर आपस में मेल-मिलाप करवा दें अथवा फिर किसी एक को भी शरण न दें अर्थात हमारे झगड़ों में तटस्थ हो जाएं परन्तु पेशवा ने सिन्धिया के कारण होल्कर की तहरीर पर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही दोनों पक्षों में सुलह कराने का प्रयास किया।

महाराजा होल्कर झुरझुरी से रवाना होकर शहर दूर से आए और वहां पर से फिर बाजीराव पेशवा को लिखा परन्तु कुछ लाभदायक नहीं हुआ और होता भी कैसे जब कुदरत ने एक निज़ाम (व्यवस्था को) समाप्त करके दूसरे को सत्ता में लाने का फैसला कर लिया था अतएव झगड़े का समाधान न हुआ और झगड़ा बढ़ता गया उस समय पूना में एक लाख सेना तो सिन्धिया की पड़ी थी और पेशवा की सेना उसके अतिरिक्त थी दूसरी ओर साठ हजार सेना तो होल्कर के साथ थी और नवाब की सेना उसके अतिरिक्त थी। अन्ततः पश्चिमी घाट पर जहां मानसूनी बादल टकराते हैं अब मानवों के दल टकराए और खून की नदियां बह निकलीं

महाराजा होल्कर ने अपनी सेनाओं को इस प्रकार जमाया कि अपनी विशेष सेना को मध्य में रखा और उसकी कमान फतेहसिंह को दे दी पंडित नागोजी और नवाब शहामत खां को दाहिने हाथ पर जमाया और नवाब अमीर खां की सेना को बायें हाथ पर क़ायम किया। स्वयं गज पर सवार होकर सवारों की सेना के चीफ़ कमाण्डर के तौर पर रहे।

बाजीराव पेशवा ने शेख़ कलब अली की सेना और वाइस साहब की सेना को विशेष तोपख़ाने सहित हरावल कर के दायीं पंक्ति पर क़ायम किया और सिन्धिया के सवारों को बख़्शी सदाशिव राव के अधिनस्थ बायें हाथ की ओर खड़ा किया अर्थात दोनों ओर से तोपें दागी जाने लगीं और अनुभव के आधार पर सिन्धिया की सेना ने होल्कर की अनुभवहीन सेना को दबा लिया। होल्कर की सेना भाग गई परन्तु नवाब ने धैर्य को हाथ से न जाने दिया और बाण्डी तोपों से जो कि निशान के हाथी से आगे थीं होल्कर की सेना का पीछा करने वालों पर ज़न्ज़ीरी-गोले[2] मारे जिसके कारण होल्कर की सेना मरने से बच गई।

[I] विश्राम।

[II] तोपों से निरन्तर गोले बरसाने का कौशल।

फिर नवाब जमशेद खाँ इत्यादि सरदारों सहित आगे बढ़े और महाराजा होल्कर से कहा कि मैं सीधा शत्रु की सेना पर जाता हूँ और तुम बायीं ओर आक्रमण करना अतएव नवाब सीधे शत्रु पर सिमटे मार्ग में नाकहड़ी नामक एक पायाब नदी पार करना पड़ी उनकी सेना अभी नदी पार न कर पाई थी कि शत्रु ने छर्रे बरसाए और कुछ छर्रों से नवाब के अश्व की कलगी उड़ गयी। फलस्वरूप वह गिर पड़ा और नवाब ने अविलम्ब दूसरा घोड़ा ले लिया और जैसे तैसे नदी पार की। उधर महाराजा होल्कर के मुट्ठी भर जाबाज बफरे हुए शेर की भांति शत्रु पर टूट पड़े और विद्युत गति से प्रहारों से विरोधियों की तरफ पंक्तियों को तितर-बितर कर दिया। यहां तक की विरोधी सेना भाग गयी तब कुछ दूरी तक उसका पीछा किया गया।

सिन्धिया की एक सेना का यह हाल देखकर सिन्धिया के तोपखाने ने गोले मारना आरम्भ कर दिए परन्तु महाराजा होल्कर ने गोलों की भी चिन्ता न करके आगे बढ़ने का आदेश दिया और जो सवार शत्रु की सेना तक सर्वप्रथम पहुंचा वह स्वयं महाराजा होल्कर ही था और फिर समस्त तोपखाने पर अधिकार कर लिया गया

नदी पार कर लेने पर नवाब ने देखा कि केवल कुछ ही सवार रह गए हैं और नदी के दूसरी ओर समीप ही पेशवा के पांच सौ मानसी सवार खड़े हुए हैं जो पहले शाहर साहब और शेख कलब अली के कैम्प के बराबर एकत्रित खड़े थे तब उन्होंने सर्वप्रथम महाराजा होल्कर पर आक्रमण किया परन्तु नवाब ने भी दूसरी ओर से उन पर आक्रमण कर दिया।

तब दो सौ सवार जो वीरता में लाजवाब थे और जिनका शरीर जिराह बख्तर में छुपा हुआ था झुण्ड से निकल कर नवाब के मुकाबले पर आए और सिपाहगिरी के करतब (युद्ध कौशल) दिखाने लगे। नवाब उनपर विभिन्न प्रकार से भाले से आक्रमण करते थे परन्तु उनकी दाऊदी जिरह[1] में खून[2] निशानतक भी न पड़ता था।

तब नवाब ने बख्शी आज़म खाँ को संकेत दिया और उन्होंने आदेश पाते ही मस्त शेर की भांति आक्रमण कर दिया तथा तलवार के एक ही आक्रमण में एक सवार का सिर उड़ा दिया। परन्तु दूसरे सवार ने नवाब से युद्ध जारी रखा तब नवाब ने देख लिया था कि उसकी कमर के ऊपर दो चार उंगल स्थान ज़िरह में खाली है। तब नवाब ने बख्शी से कहा कि उसे धोखा देकर अपने मुकाबले पर ले आओ।

---

[1] चूंकि जिरह सर्वप्रथम दाऊद (अ स) ने बनाई थी। इस कारण ज़िराह से उनका नाम सन्दर्भित है।

[2] निशान।

ताकि मेरी ओर से उसकी पीठ हो जाए। तत्पश्चात बख्शी ने जैसे ही उसका रुख अपनी ओर फेरा नवाब ने तत्काल उसकी कमर पर भाला मार कर उसका काम तमाम कर दिया और केवल आठ साथियों के साथ शत्रु के झुण्ड में प्रविष्ट होकर तलवारों से काई सी छाट दी। उनके भागते ही सिन्धिया की वह सेना जो होल्कर से तोप और बन्दूक से युद्धरत थी, भाग निकली। तब होल्कर और नवाब के वे सिपाही जो प्रथम पराजय से अब तक गोशों (कोनों) में लगे हुए थे, इधर उधर से दौड़ पड़े और वाईस साहिब फ़िरंगी का मस्तक काटकर विजय पताका फैराते हुए पुनः लौटने को चले। जब पेशवा मैदान छोड़कर चले गये तो महाराजा होल्कर नवाब साहब विजय उत्सव के गाजे बाजे के साथ पूना में प्रविष्ट हुए और तुरन्त लूट प्रतिबंधित करने का आदेश दिया। और नगर की सुरक्षा के लिए प्रत्येक गली और कूचे में चौकीदारों को नियत कर दिया।

इसके बाद महाराजा होल्कर ने पेशवा के पास अपने दो चार मराठा विश्वास पात्रों को भेजा। ताकि वह आग्रह तथा अनुनय-विनय एवं क्षमा-याचना के साथ पेशवा को समझाकर ले आए। इन लोगों ने वहाँ पहुँचकर हर प्रकार से होल्कर की ओर से लौट आने हेतु निवेदन किया किन्तु पेशवा ने इन तमाम प्रार्थनाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया। वरन् भ्रमवश इसे छल व कपट ही समझते रहे। परन्तु नवाब अमीर ख़ाँ को लिखा कि यदि तुम अपने आचार विचार एवं सकल्प से मुझे विश्वास दिला दो तो मैं पूना आ सकता हूँ।

नवाब यह पत्र लेकर महाराजा के पास गये उस समय वह अपने हाथ से घाव को जो शत्रु की तोप छीनने में लगा था सेंक रहे थे, नवाब ने वह पत्र महाराजा को प्रस्तुत किया। तो उन्होंने इस बात को सन्तोषप्रद जानकर नवाब से कहा कि तुम इसके उत्तर में पेशवा को विश्वास पत्र लिख दो। उनसे मेल मिलाप हो जाने पर बुन्देलखण्ड का राज्य जो एक करोड़ की आय का है। तुमको दिलवा दूंगा। नवाब ने कहा कि मैं श्रीमंत को अपनी सुरक्षा में यहाँ लाऊंगा तो उनकी सुरक्षा करना अपना व्यक्तिगत उत्तरदायित्व समझूंगा। महाराजा ने कहा कि राज्यशासन के सम्बन्ध में कूटनीति एवम् धोखे ही से काम निकलता है। तब नवाब ने यह बात स्वीकार न करके पेशवा को इस पत्र की पुश्त पर लिख भेजा कि आप दोनों के पारिवारिक मामले में हम दूसरे लोगों का हस्तक्षेप बुद्धिमानी नहीं है। पेशवा ने इस बात से उद्देश्य की गहनता को समझकर उस समय वहाँ से प्रस्थान कर दिया, एवं सेना को उत्तर देकर नौ हजार सवार मागडी और अठारह हज़ार प्यादे बन्दूकचियों के साथ दुर्ग माडेह में विश्राम किया। जो कोंकण प्रदेश में समुद्र से मिला हुआ एक सुदृढ दुर्ग है होल्कर ने इस बात में अपना

स्वार्थ सिद्ध होते न देख, नवाब को अमृतराव पैशवा को लाने के लिए भेजा। यह रघुनाथ राव पैशवा के उत्तराधिकारी थे और पूना के समीप चुनैर दुर्ग में निवास करते थे। और उन्होंने पूर्व में ही पूना में सिंहासन रूढ़ करा देने के इनाम पर महाराजा को एक करोड़ का मुल्क और दो करोड नक़द भेंट करने का सहमती पत्र लिख दिया था। अर्थ यह है कि नवाब के आश्वासन देने पर वह पूना में आ गये अमृतराव ज्यों ही पूना की गद्दी पर बैठे। अंग्रेजों के प्रतिनिधि क्लोस साहिब ने जो पहले से बाजीराव के पास पूना में रहते थे, वहाँ से जाने की अनुमति चाही कारण कि अमृतराव के सिंहासनारूढ़ होने से जो अंग्रेज़ों की आशा के विपरीत था सहमत नहीं हुए। होल्कर ने तो उनका अवकाश स्वीकृत कर दिया परन्तु नवाब ने कहा कि क्लोस यहाँ से चले गये तो अंग्रेज़ों की सेना बाजीराव पैशवा की सहायता को अवश्य आएगी क्योंकि पैशवा की अंग्रेजों से पुरानी मित्रता है। और जब अंग्रेजी सेना आ गयी तो अपना काम बिगड़ जाएगा। नवाब साहब के आग्रह करने पर होल्कर और अमृतराव पैशवा ने क्लोस साहब का चला जाना बुद्धिमानी के विपरीत समझकर मामले को स्थगित कर दिया

अब होल्कर ने अमृतराव से उनके आश्वासनों का तकाज़ा प्रारम्भ किया तब अमृतराव ने एक करोड़ रुपये तो पूना की ज़ब्ती से प्राप्त करके उनका दिया। और शेष के लिए कहा कि जब बाजीराव पैशवा को माढा दुर्ग से निकाल दोगे या यहाँ पकड लाओगे तो वचन पूरा करूगा, क्योंकि जब तक बाजीराव मौजूद है, षड्यन्त्र एवम् कलह का अस्तित्व बना रहेगा। तत्पश्चात् बहुत सोच विचार के पश्चात यह निर्णय लिया गया कि इस अभियान को नवाब को सौंप दिया जाए। इस प्रकार एक हज़ार सवार और चार सौ प्यादों के साथ नवाब ने कूच किया। पहाडी मार्गों और सघन वनों के कारण बहुत दूर तक पैदल चलकर अन्तत उक्त दुर्ग के नीचे पहुँचे जहाँ बाजीराव पैशवा ठहरे हुए थे और पहाडी नाकों पर उनके बन्दूकचीं छिपे हुए थे। इस क्षेत्र के संभ्रात निवासियों को मिलाकर ऐसे छिपे मार्गों का पता लगा लिया कि जिसके ज़रिए से दुर्ग तक पहुंचा जा सके। परन्तु उस आधे कोस की ऊँची घाटी पर इस मार्ग से भी चढ़ने के लिए वृक्षों की शाखाओं से लटकने के अतिरिक्त और कोई विकल्प न था। साझ होने से पहले ही नवाब के बन्दूकची वनों और पर्वतों के दुर्गम स्थानों को पार करके वहाँ जा पहुँचे और रात भर घात में बैठे रहे परन्तु प्रात होते ही जैसे ही नवाब ने नगाडे बजाकर पर्वत की ऊँचाई पर बन्दूकों की बाढ़ मारी और आक्रमण किया तो घैराव करने वाले भीतर से निकले और चार दलों में गुज़रगाहों पर बन्दूकें मारी फलस्वरूप घबरा कर पैशवा अपने कबीले सहित कुछ साथियों के साथ वहाँ से भाग निकले और जजाह के सुदृढ़ दुर्ग में चले गये शेष सेना को जा

लगभग अठारह हज़ार की थी जवाब देकर दुर्ग में छोड़ गए। इनमें अली बहादुर का पुत्र शमशेर बहादुर भी था। उसने अपने सम्बन्ध को प्रकट करके नवाब से कहलवाया कि यदि मेरे पिता की मित्रता को दृष्टिगत रखते हुए हमसे युद्ध न करें तो हम इस दुर्ग से निकल जाए। नवाब ने अपने दल की संख्या की कमी को विचारते हुए इस प्रस्ताव को स्वयं के लिए लाभकारी समझकर उत्तर भेजा कि तुम्हारे पिता की मित्रता के कारण हमें यह बात स्वीकार है। तुरन्त यहाँ से चले जाओ और अपने साथियों को भी अपने साथ ले जाओ। इसलिए शमशेर बाहदुर सन्तुष्ट होकर अपने कुल सौ सवारों सहित वहाँ से निकल गया और वह सुदृढ़ दुर्ग बिना युद्ध के नवाब के हाथ आ गया।

नवाब ने पन्द्रह दिवस वहीं रह कर, बाजीराव पैशवा को लिखा कि यदि आपकी इच्छा हो तो महाराजा होल्कर से मैं आपकी सुलह सफ़ाई करा दूगा और आपको अपने साथ ले चलूंगा।

पेशवा ने इस पत्र को फाड़ डाला और नवाब को कहलवा दिया कि "लो मैं तो जाता हूं और मुल्क ना अपने लिए रखता हूं और ना ओरों के लिए"। यह कहकर वह तो जहाज़ में बैठे और अपने बाल बच्चों को वहां छोड़कर जल मार्ग से बैलज़ली[1] के पास बसीन जा पहुंचे। उधर क्लोस साहिब भी पैशवा के पूना छोड़ देने के बाद ही पूना से रवाना होकर बसीन जा पहुँचा था। बाजीराव ने अंग्रेज़ों का रुपये में छ आने देना स्वीकार कर के जनरल बैलज़ली को अपनी सहायता पर तैयार कर के अंग्रेज़ फौज के साथ पूना की ओर रवाना हुए। जहाँ होल्कर अब तक जमे हुए थे परन्तु यह देखकर जनरल वैलज़ली अपनी 22 पलटनों के साथ पूना के लिए रवाना हो चुका है और दूसरी ओर से सिन्धिया तथा भौंसले की सयुक्त सेनाएं पूना पर चढ़ाई के लिए हरकत में आ चुकी हैं। होल्कर ने अपने को मुकाबले के योग्य न पाकर टल जाना ही उचित समझा। और अमृतराव पेशवा से जो कुछ वसूल हो सका लेकर तुरन्त औरगाबाद चले आए।

अंग्रेज़ों एवम् निज़ाम की संयुक्त सेनाओं से नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का मुक़ाबला

जब होल्कर पूना से रवाना हुए नवाब मोहम्मद अमीर खाँ जगल हीर की ओर ख़िराज[2] वसूल करने में व्यस्त थे। उस समय कर्नल बैलज़ली स्वय की बाईस पल्टने

---

[1] सेनानायक का नाम।

[2] चौथ।

लेकर इनके समीप आ पहुचा। उधर से निज़ाम अली खाँ, नवाब हैदराबाद दक्कन की सेना भी आ पहुँची और दोनों से नवाब की करावली की जंग छिड़ गयी। उधर सिन्धिया और भोंसले की संयुक्त सेना से होल्कर औरंगाबाद में घबरा उठे और नवाब को सहायता के लिए बुलवाया। नवाब ने हर सम्भव अवसर की नज़ाकत समझाई और अपनी अपनी जगह जमे रहने को लिखा, परन्तु होल्कर नहीं माने और नवाब को शीघ्र आने को कहा।

अन्त में नवाब जब औरंगाबाद पहुँचे तो ज्ञात हुआ कि होल्कर ने दस लाख रुपये औरंगाबाद से वसूल कर लिए हैं। तब पूछने पर नवाब को चार लाख रुपया देने का वचन दिया, किन्तु नकद एक लाख रुपया ही दिया और शेष तीन लाख रुपया के लिए नवाब सूरत और मुसाफ़र शाह नौकरदार की सम्पत्ति से वसूली बना दी। कुछ दिन बाद निज़ाम कहके नवाब ने फकीर से रुपया लेना उचित न समझा और उसे माफ कर दिया। उधर सूरत के नवाब की माता श्री ने कुछ अशर्फियां कुछ सवर्ण और ढेढ़ लाख रुपये का जेवर बेचकर सन्देश भेजा कि जो कुछ अब शेष है वो भी शीघ्र भिजवा देंगे। इस पर नवाब ने आभूषण तो लौटा दिए और शेष के लिए कहला भेजा कि मैंने माफ कर दिया है।

जब कर्नल वैलज़ली औरंगाबाद के समीप आ गया तो होल्कर खान्देवाड़ा जा चुके थे और नवाब अमीर खाँ के लिए नवाब निज़ाम अली खाँ ने वैलज़ली को लिखा कि होल्कर का तोड़ करना कुछ कठिन नहीं है। परन्तु इन पठानों का तोड़ करना आवश्यक है, तुम इनके सरदार मोहम्मद अमीर खाँ को अपनी ओर मिला लो और जितना मुल्क और धन माँगें दे दो।

बस कर्नल वैलज़ली ने इस काम को पूर्ण करने के लिए निज़ाम के मुख़्तार व मुशीरुल मुल्क (अधिकृत एवम् सलाहकार) व्यक्ति को लिखा और मुशीरुल मुल्क ने नवाब के विशेष विश्वासपात्र ग़ुलामी खाँ से वार्ता की और ग़ुलामी खाँ ने नवाब से कहा तब नवाब ने मिर्ज़ा रहीम बेग के साथ सन्देश भेजा कि यदि सुलह स्वीकार है तो अपनी अपनी पेशकदमी को रोक दो अर्थात् जहाँ हो वहीं रहो। वरन मैं सुलह पर तैयार नहीं हो सकता क्योंकि तुम्हारे आगे बढ़ने के पश्चात् सुलह करने में यह लोग संशय करेंगे कि नवाब ने दब कर सुलह कर ली है। इस अवधि में कर्नल वैलज़ली की ओर से एक अंग्रेज सात लाख रुपये की हुण्डियां लेकर नवाब के पास पहुंचा और उसके अतिरिक्त एक करोड़ आय के मुल्क और अठारह लाख रुपये नकद का प्रस्ताव निज़ाम दक्कन की ओर से भी पहुंचा।

नवाब ने ये हुण्डियां लेकर कहा कि मैं इस विषय में सर्वप्रथम महाराजा होल्कर से मन्त्रणा करूंगा। फिर [illegible] ने [illegible] कर नवाब चादरें या चादर पहुंचाई और [illegible] सुनाया। होल्कर ने कहा यह सब शत्रु की [illegible] हुआ। इस पर नवाब ने हंसकर हुण्डियां स्वयं की जेब से निकालीं और [illegible] उसके हाथ दीं, तब होल्कर इस घटना की वास्तविकता [illegible] यदि तुमसे विलग होकर मान [illegible] भी [illegible] है तो मुझे मंजूर नहीं है और यह कहकर ये हुण्डियां फाड़ डालीं।

हिन्दुस्तानी नेताओं का अंग्रेज़ों के विरुद्ध समझौता

[illegible] सिन्धिया [illegible] ने जब यह सुना कि बाजीराव पेशवा अंग्रेज़ों की सेना में आ [illegible] तो अंग्रेज़ों के इन शत्रुओं को अत्यधिक क्रोध आया और सबने अलग अलग नवाब को लिखा कि हम तुम एक हो जाएं और पारस्परिक मतभेद दूर भुलाकर अंग्रेज़ों को अपने देश से निकाल दें। इस सन्देश को नवाब ने भी पसन्द किया और पांच सरदार अर्थात सिन्धिया भोंसले गायकवाड़ होल्कर और नवाब अमीर खां के मध्य सन्धि हो गई। अंग्रेज़ सेना ने अधिकांश जनरल लेक के कमान में [illegible] आक्रमण को रोकने के लिए नवाब अमीर खां और महाराजा होल्कर को नियत किया गया। दक्षिण [illegible] में [illegible] और जनरल वेलज़ली के संयुक्त आक्रमण को रोकने के लिए सिन्धिया भोंसले और गायकवाड़ का सामना अंग्रेज़ी सेना से हुआ। अंग्रेज़ी अधिकारी ने सिन्धिया [illegible] के एक उच्च अधिकारी को षड्यन्त्र करके अपनी ओर मिला लिया और जब सिन्धिया की पराजय होने लगी तो अन्य सरदारों ने सहायता न की और परिणाम देखते रहे और अन्तत युद्ध स्थल से टल गए।

[illegible] इसके सिन्धिया भोंसले परास्त होकर अंग्रेज़ों से सुलह करनी पड़ी जिसके अनुसार भोंसले ने अंग्रेज़ों को [illegible] का ज़िला दिया। सिन्धिया ने गंगा और जमना के मध्य का दोआबा जिसमें ज़िला आगरा और [illegible] सम्मिलित थे, अंग्रेज़ों को सौंप दिए और गायकवाड़ ने गुजरात के कुछ भू-भाग अंग्रेज़ों को दिए जिनकी वार्षिक आय [illegible] लाख थी। अब केवल होल्कर और नवाब अमीर खां ही परास्त होने शेष थे। जनरल लेक ने आगरा और दिल्ली पर कब्ज़ा करके होल्कर का पीछा किया। होल्कर ने अजमेर व किशनगढ़ से पत्र लिखकर नवाब मोहम्मद अमीर खाँ को

अपनी सहायता के लिए बुलवाया तब नवाब ने केवल रिसाले [illegible] को साथ लिया और झार्स में मामला वसूल करते हुए इस्लामपुर पहुँचे वहाँ गुप्तचरों ने सूचना दी कि अंग्रेज़ी सेना के साथ एक बड़ी जमाअत (दल) सिन्धिया का हिम्मत बहादुर के अधीन मौजूद है नवाब ने रात्रि विश्राम कर प्रातःकाल शत्रु पर आक्रमण कर दिया युद्ध बहुत कठिन था परन्तु फिर भी अंग्रेज़ों की पराजय हुई पाँच तोपें [illegible] सामान से भरे हुए सन्दूक असबाब [illegible] और बहुत से सामग्रियों के गठरे में प्राप्त हुए और नवाब अमीर खाँ विजय [illegible] हुए इस्लामपुर वापस हुए

दूसरे दिन सुना कि कई अंग्रेज पलटनें कोटा के समीप डेरा डाले हुए हैं तब नवाब अन्तिम पहर रात के समय कूच कर गए और अपनी सेना [illegible] कर [illegible] नवाब ने [illegible] में [illegible] धन राशि [illegible] को [illegible] [illegible] पहुँचे और [illegible] सहायता को पहुँचे। तब नवाब वहाँ से प्रस्थान कर गन्तव्य स्थान की ओर आए यहाँ एक अंग्रेज सैनिक मोंटी साहब ने उनका घेराव कर लिया, परन्तु इस घेराव की परवाह न करते हुए नवाब आक्रमण करते हुए बच निकले और [illegible] आ गए इस आक्रमण में [illegible] कोस की यात्रा को 24 घंटे में तय किया गया था। फलस्वरूप तीस हजार सवारों में से केवल तीस साथ दे सके। यहाँ आकर सुना कि [illegible] के [illegible] क्षेत्र में धन राशि वसूल कर रहे थे [illegible] नाम [illegible] है

[illegible] हजार सवार [illegible] [illegible] मुकाबला करने [illegible] परन्तु [illegible] [illegible][1] [illegible] [illegible] में [illegible] भी धन राशि वसूल [illegible]।

राजपूताना के नेतृत्व पर अंग्रेज़ों एवम् होल्कर का युद्ध

होल्कर का आक्रमण राजपूताना पर हो गया था यह बात अंग्रेज़ों को अच्छी नहीं लगती थी इस कारण [illegible] और [illegible] में होल्कर का युद्ध राजपूताना में प्रारम्भ हो [illegible] [illegible]

[1] अमासा (सामग्री)।

भाग गया तब होल्कर ने उसका पीछा मथुरा तक किया और वहां से फरूखाबाद आए। जनरल लैक साहिब ने आगरा से प्रस्थान कर फरूखाबाद पर आक्रमण किया। यहाँ होल्कर को पराजय हुई तब होल्कर भरतपुर के राजा के पास आए और उनके यहां शरण ली, होल्कर ने इस संकट में सहायता हेतु नवाब अमीर खां को बुलाया उस समय नवाब ने भेलसा का घेराव कर रखा था। नवाब मन्डला और सागर के राजाओं से मार्ग में धन राशि वसूल करते हुए भरतपुर की ओर रवाना हुए

उस समय जनरल लैक ने भरतपुर का घेराव कर रखा था नवाब अमीर खाँ के आने का समाचार सुनकर बहुत घबराया और मोंठे साहिब प्रबन्धक, बुन्देलखण्ड के माध्यम से नवाब के पास सन्देश भेजा कि औरंगाबाद में जितना भी मुल्क वैलज़्ली साहिब ने आपको देना चाहा था उस पर तेरह लाख की आय के मुल्क की बढ़ोतरी करके हम आपको देना चाहते है ताकि लूटमार से आप बाज आ जाएं। इस पर नवाब मोहम्मद अमीर खाँ ने उत्तर दिया कि "यह मुल्क हमारा है तुम हमे देने वाले कौन होते हो। नवाब ने तोपखाना और अपना परिवार तो मुख्तारूद्दौला मोहम्मदशाह खाँ को सौंपा और दक्ष सवारो के साथ प्रस्थान करके ग्वालियर के समीप पहुंच रहे थे कि वहाँ से चार अंग्रेज़ी सैनिक दल नवाब के आगमन की सूचना पाकर भाग गए नवाब ने कई दिन तक ग्वालियर में विश्राम किया फिर ग्वालियर से प्रस्थान कर धौलपुर पहुँचे यहा मोहम्मद खाँ आफरीदी के हाथ जनरल लैक ने प्रथम सन्देश पर १८ लाख के मुल्क की बढ़ोतरी कर एक शान्ति का सन्देश भेजा परन्तु नवाब ने उसे पुनः वही उत्तर दिया।

धन्य है हिन्दुस्तान का यह सुपत्र कि जिसने उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में विदेशी युरोपियन सेना के लालच दिलाने पर "हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों ही का है नारा लगाया था। यह थी वह कौमी भावना जो इस शेरे हिन्द के मस्तिष्क मे प्रवाहित थी और उसकी जितनी भी महत्वता इस समय स्वतंत्र हिन्दुस्तान में की जाए कम है।

फतहपुर सीकरी के स्थान पर होल्कर ने नवाब का स्वागत किया और एक लाख रुपया भेंट किया जिसे नवाब ने सेना में वितरित कर दिया। फिर भरतपुर आकर दुर्ग के बाहर डेरा जमाया भरतपुर का जाट राजा रणजीतसिंह और जसवन्त राव होल्कर तो दुर्ग में विश्राम कर बचाव करते रहे परन्तु नवाब ने बाहर निकल अंग्रेजी सेना पर आक्रमण किया और शत्रु की रसद को लूट कर शत्रु को भयभीत और परेशान करते रहे। फिर तीनों सरदारो मे यह सहमति हुई कि किसी एक को यहां से टलकर अंग्रेजी सेना पर आक्रमण किया और शत्रु की रसद को लूट कर शत्रु को भयभीत और परेशान करते रहे। फिर तीनों सरदारो में यह सहमति हुई कि किसी एक को यहाँ से टलकर अंग्रेजों के अन्य अधिकार वाले क्षेत्रों में लूटमार करना चाहिए

ताकि उन्हें अपना ध्यान दूसरी ओर करना पड़े। इसके लिए भी नवाब अमीर खाँ का चुनाव किया गया।

अंग्रेज़ों के अधिकार क्षेत्रों पर आक्रमण

नवाब अमीर खां भरतपुर से प्रस्थान कर महावन के घाट से चौथ वसूल करते हुए गोकुल आए। वहां से मकोटा श्री जलालपुर, फतेहगढ़, क़मरुद्दीन नगर पहुँचे फिर गंगा पार करके मौज़ा धनवगढ़ में डेरा डाला। वहाँ से चलकर अमरोहा में विश्राम हुआ अमरोहा से मुरादाबाद आए, यहाँ अंग्रेजी सेना से मुकाबला हुआ और अंग्रेजी सेना परास्त होकर भाग गई। फिर नवाब ने वहां से प्रस्थान करके रामपुर के क्षेत्र में विश्राम किया और वहां से काशीपुर, वहां से शेरकोट और वहाँ से धामपुर आए। फिर यहीं के रईसों से धन राशि वसूल करके नगीना आए फिर नजीबाबाद गए और वहाँ से करतपुर पहुँचे अर्थात अंग्रेजी क्षेत्र में तहलका मचा दिया।

अंग्रेज़ी सेना जब बड़े प्रबन्ध एवम् तैयारी करके एक स्थान पर पहुचती तो ज्ञात होता कि नवाब यहां से यकायक रवाना होकर अज्ञात दिशा की ओर बढ़ गए। तब आश्चर्यचकित होकर फिर टोह लगाती फिरती। नवाब करतपुर से फिर मुरादाबाद जा पहुँचे। वहां देखा कि जनरल लेक की एक अंग्रेज़ी सेना से बहुत कठिन मुकाबला हुआ परन्तु परिणाम नहीं निकला और दोनो पक्षों की अत्यधिक हानि हुई। अफ़ज़लगढ़ से रेहड़ अमनपुर, ठाकुरद्वारा काशीपुर और टाण्डला होते हुए फिर मुरादाबाद आ पहुँचे वहाँ रात्री विश्राम कर दूसरे दिन फिरोजपुर के स्थान पर जो संभल से तीन कोस के ऊपर है डेरे डाले।

वहाँ से केवल तीन सौ सवार लेकर अपनी मातृभूमि सभल में आए। वहाँ के रईसों और वृद्ध लोगों से मिले। प्रत्येक को राजसी परिधान (खिलअत) और ईनाम प्रदान किए फिर प्रात में पूर्व (अत्यन्त सवेरे) चन्दौसी प्रस्थान कर गये

चन्दौसी में कुछ दिन विश्राम कर बरेली के मुफ्ती (पुरोहित) को लिखा कि हम बरेली आते हैं हमारा प्रतीक्षा करो। इसकी सूचना किसी प्रकार से जनरल स्काट को मिल गई। वह मार्ग में आ खड़ा हुआ परन्तु नवाब को भी इस योजना की सूचना मिल गई तब नवाब ने बरेली का इरादा निरस्त किया और सभल लौट आए। फिर अलीपुर चले गए और वहाँ से प्रस्थान करके अमरोहा आए। यहाँ जनरल मार्लीसेन एक सुदृढ़ सेना लेकर आ पहुचा परन्तु मुकाबले का साहस न कर इब्राहीमपुर के क्षेत्र में स्वयं को परीसीमित कर लिया। फिर नवाब अमरोहा से प्रस्थान करके चान्दपुर आए। प्रात ईद का त्यौहार था इसलिए चान्दपुर की ईदगाह में ईद की नमाज़ पढ़ कर फिर अमरोहा आए और वहाँ से मुकामगढ़ पहुँचे फिर वहाँ से हापुड़ होते हुए मकोटा आए

और मकोट्टा से भरतपुर की ओर रवाना हुए। जब महावन के समीप पहुँचे तो ज्ञात हुआ कि विभिन्न स्थानों पर अंग्रेज़ी सेनाएं नियत कर दी गई हैं।

नवाब जमना के किनारे किनारे चले। घाट के किनारे राजा राघवमल की सेना नियत थी वह नवाब की सेना को देखते ही भाग खड़ी हुई। तब नवाब ने दरिया पार किया और फतहपुर पहुंचे। जब होल्कर ने नवाब के फतहपुर आगमन का समाचार सुना तो स्वयं उनके स्वागत को आए और फिर भरतपुर ले गए। भरतपुर में अंग्रेज़ी सेना पड़ी हुई थी और युद्ध का क्रम जारी था इसलिए भरतपुर के राजा ने परेशान होकर यह ही उचित समझा कि समझौता अंग्रेज़ों से हो जाए और उसने छिपकर अंग्रेज़ों से गुप्त समझौता कर लिया और दोनों मित्रों को सूचित करके वहां से चले जाने की इच्छा व्यक्त की।

यह स्थिति देखकर होल्कर और नवाब ने महाराजा सिन्धिया को अपना मित्र बनाना चाहा इस पर सिन्धिया सहमत हो गए। तीनों सरदारों ने अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से निकाल देने और युद्ध का क्रम जारी रखने का संकल्प लिया। इस प्रकार महाराजा सिन्धिया और नवाब, पाण्डलगढ़ (क्षेत्र मेवाड़) में आए और होल्कर ने शाहपुरा में विश्राम किया।

महाराजा सिन्धिया का अंग्रेज़ों का साथ देना

महाराजा होल्कर और महाराजा सिन्धिया के हृदयों से पहले की शत्रुता निकल न सकी थी अतएव नवाब पाण्डलगढ़ से प्रस्थान कर होल्कर के पास शाहपुरा आए और सिन्धिया की चाल सुनाई। इसी अवधि में पटियाला के राजा साहिब सिंह और लाहौर के राजा रणजीतसिंह के दूत नवाब अमीर खाँ के पास यह सन्देश लाए कि तुम और होल्कर दोनों हमारे राज्य में चले आओ। यह दोनों सरदार मंत्रणा पश्चात पटियाला की ओर रवाना हो गए और साभर खादू, मण्डेला नारनौल हांसी और हिसार होते हुए पटियाला पहुंचे और राजा पटियाला से मिले

नवाब अमीर खाँ का काबुल का लक्ष्य

उनके पीछे जनरल लेक एक बहुत बड़ी सेना लेकर करनाल के समीप आ गया। होल्कर और नवाब लाहौर की ओर प्रस्थान कर गए ताकि रणजीत सिंह पंजाब के रक्षक से सहायता लेकर अंग्रेज़ों पर आक्रमण करें। यदि वह सहायता न करें तो काबुल जाकर शाह काबुल से सहायता लें। जब अमृतसर के समीप पहुंचे तो महाराजा

रणजीतसिंह ने दो तीन कोस पर उनका स्वागत किया और अपने [illegible] में डेढ़ माह तक अपना अतिथि बनाया।

[illegible] ने [illegible] में [illegible] नवाब और होल्कर में [illegible] शीघ्र [illegible] नवाब [illegible] और वहाँ [illegible] दिन पश्चात् नवाब [illegible] अंग्रेजी सरकार में [illegible] यदि [illegible] मैं उसके माध्यम से समझौता [illegible] तब नवाब ने [illegible] कि तुम अंग्रेज़ों की ओर से इसी कार्य के [illegible] हो। तुम्हारे [illegible] यही [illegible] है कि तुम इसी समय हमारी सेना से निकल जाओ। तब शेख [illegible] से निकल कर सेठ बालाराम जो होल्कर के [illegible] और [illegible] थे के पास आए। और उनके माध्यम से होल्कर को समझौते के लिए [illegible] कर लिया। होल्कर समझौता [illegible] पर सहमत होकर नवाब के पास आए और [illegible] को गुप्त रखकर कहा कि रणजीतसिंह की [illegible] है कि [illegible] शाह काबुल के पास पहुँचने के लिए [illegible] क्या करें। तब नवाब ने कहा कि मैं काबुल जाता हूँ और [illegible] हुआ शाह काबुल को [illegible] हूँ। [illegible] पास [illegible] हैं वे उन्हें भेंट करूँगा और शाह के [illegible] और [illegible] में [illegible] भुगतान कर दूँगा। परन्तु [illegible] भी [illegible] देश से निकाल कर [illegible] तब होल्कर ने कहा [illegible] शाह काबुल [illegible] होगा। इस पर नवाब ने [illegible] सह [illegible] वे ही पर्याप्त हैं।

महाराजा होल्कर का अंग्रेज़ों से मिल जाना और अमीर ख़ाँ के साथ धोखा करना

होल्कर ने यह सुनकर दूसरा [illegible] अपनाया और कहा कि [illegible] चार हजार सवार लेकर जाना उचित नहीं है। [illegible] उनके यात्रा व्यय के लिए मैं अपने सेठ बालाराम को [illegible] स्थान पर भेजता हूँ जहाँ यह [illegible] मूल्य में विक्रय हो सके। [illegible] आ जाएगी तो यात्रा की योजना बनायी जाएगी।

इस पर नवाब अमीर ख़ाँ सहमत हो गए। वास्तविकता यह थी कि होल्कर यह नहीं चाहते थे कि नवाब स्वयं काबुल जाकर शाह काबुल की सहायता ले [illegible]

इसलिए कि इनकी सहायता से जो राज्य भी विजय होगा उससे महाराजा होल्कर को क्या लाभ पहुँचेगा।

होल्कर ने अपने सेठ को जवाहरात विक्रय करने के बहाने से अंग्रेज़ों की सेना में भेजा और वहाँ उसने जनरल लेक से भेंट की और व्यास नदी पर होल्कर और अंग्रेजों के मध्य संधी-पत्र/ करार पत्र लिखा गया जिसको सेठ बालाराम ने लाकर महाराजा होल्कर को प्रस्तुत किया। होल्कर ने यह देखकर कि यदि इसमें नवाब को सम्मिलित नहीं किया गया तो मामला बिगड़ जाएगा। इसलिए नवाब के सलाहकार लाला हिम्मतराय को बुलवाया और कहा कि हमारे भाई नवाब को जिस प्रकार भी सम्भव हो समझा कर संधी के लिए तैयार कर दो।

लाला हिम्मतराय ने यह सब स्थिति नवाब को सुनाई, वह सुनते ही आश्चर्य चकित हो गए, अत्यन्त क्रोधित हुए और कहा महाराजा ने हमारे साथ बहुत धोखा किया किन्तु कोई परवाह नहीं है। मैं अभी सीमा प्रान्त और अफ़गानिस्तान की ओर प्रस्थान करता हूँ।

वहाँ से प्रस्थान करके पन्द्रह मील की दूरी पर डेरा डाल दिया। जब लेक साहिब ने नवाब के विलग होने का वृतान्त सुना तो तुरन्त सर जॉन मेटकॉफ को होल्कर के पास भेजा और सन्देश दिया कि हमें बिना नवाब के संधी स्वीकार नहीं है। करार-पत्र उसी समय पूर्ण हो सकेगा जब इस पर नवाब मोहम्मद अमीर ख़ां की मुहर लगी होगी।

अब होल्कर को यह चिन्ता हुई कि नवाब अवश्य ही आधे राज्य पर अधिकार कर लेंगे और इसके अतिरिक्त कोई विकल्प भी नहीं है इसलिए सर जॉन मेटकॉफ से कहा कि अपने इस प्रतिज्ञा पत्र के अनुसार सल्तनत को सीमाओं के बटवारे में चूंकि राजस्थान और दक्कन का मामला आपने अपनी तरफ रखा है, और नवाब के सैन्य दल का पोषण इसी पर था, इसलिए वह क्रुध होकर अलग हो गए हैं। सर जॉन मेटकॉफ राजस्थान और दक्कन का मामला छोड़ने पर सहमत हो गए। यह निर्णय करके महाराजा होल्कर नवाब के पास आए और एकान्त में नवाब को बहुत कुछ समझाया जिसके प्रभाव से नवाब न चाहते हुए भी इस मामले में चुप्पी साध गए किन्तु क़रार पत्र पर अपनी मुहर नहीं लगाई तब महाराजा होल्कर उस राज्य में से जो अंग्रेज़ होल्कर को देना चाहते थे नवाब के लिए आधा राज्य छोड़ने पर सहमत हो गए और परगना टोंक और पिड़ावा तो पूर्णत: दे दिया और जयपुर, कोटा तथा उदयपुर का मामला (चौथ) वसूल करने का अधिकार नवाब के हिस्से में लिखा और सर जॉन मेटकॉफ से कहा कि मुझमें और नवाब में कुछ अन्तर नहीं है प्रतिज्ञा पत्र पर मेरी मुहर ही काफी है। ब्रिटेन द्वारा दिया गया राज्य हम परस्पर बांट लेंगे। तुम पहले जनरल लेक साहब का यहाँ से प्रस्थान

कर दो फिर हम अपने अपने राज्य को चले जाएंगे। अत पहले लेक साहब आगरा को लौटे और फिर होल्कर और नवाब बाद में रवाना हुए।

अब महाराजा होल्कर को यह चिन्ता हुई कि नवाब अवश्य ही आधे राज्य पर अधिकार कर लेंगे इसलिए उचित यह है कि नवाब को विष देकर मार दिया जाए। कुछ प्रयोगों में असफल होने के पश्चात नवाब के सेवकों में से एक नवयुवक को प्रलोभन दिया और अपने पास बुलाकर इस तरह बहकाया कि नवाब अमीर खाँ मेरे भाई हैं परन्तु कुछ समय से कुछ अवांछनीय व्यक्तियों ने उन्हें मेरी ओर से बदगुमान और नाराज कर दिया है और मैंने किसी जादूगर से मालूम की है। अगर तुम किसी तरह नवाब को यह अचूक दवा पिला दो तो हम दोनों में फिर पूर्व की भांति प्रेम और भाईचारा स्थापित हो जाएगा। इसके बदले में मैं तुम्हें सोने के कड़े पहना दूंगा और पांच हजार अशर्फियां इनाम भी दूंगा। तब नवयुवक ने कहा कि मैं पहले इसकी अनुमति अपनी माता से ले लूं तब कुछ कर सकूंगा। वापस आकर उसने यह सब वृत्तान्त नवाब से कह दिया। नवाब ने कहा तू अभी जा और होल्कर से कह कि मेरी माता [illegible] अशर्फी को भूल दे तो मैं इस नवाब को पिला दूं। [illegible] ने [illegible] होल्कर से प्राप्त कर ली और नवाब को लाकर दे दी। तब नवाब पहले तो इस [illegible] की कार्यवाही पर अत्यन्त दुःखी [illegible] और फिर यह पुड़िया लेकर होल्कर के पास पहुंचे।

पुड़िया को देखकर होल्कर लज्जित हो गए और कई प्रकार से क्षमा याचना की तब नवाब ने कहा हम अब भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे और बुराई के बदले भलाई ही करते रहेंगे क्योंकि तुम्हें भाई बनाया है।

राजपूताने में नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का दबदबा

पंजाब से वापस होकर होल्कर और नवाब राजपूताना में आए। होल्कर तो पुष्कर में ठहरे और नवाब ने अजमेर में विश्राम किया। इन दिनों जयपुर और जोधपुर के राजाओं में उदयपुर की राजकुमारी से विवाह करने के सम्बन्ध मे विवाद चल रहा था। राजा जयपुर ने नवाब अमीर खाँ साहिब की सहायता प्राप्त करके अपना स्वार्थ सिद्ध कर लिया परन्तु जो वचन दिए थे वे पूर्ण नहीं किए। परिणाम स्वरूप नवाब बदल गए और राजा जोधपुर से जा मिले। तब विजय जोधपुर की होने लगी। राजपूताने में नवाब ने इतने अधिक सफल युद्ध किए कि पूर्ण राजस्थान में नवाब अमीर खाँ के नाम की धाक बैठ गई। इधर कुछ समय के बाद अमीर अली खाँ ठग के नाम से एक अन्य पठान ने पूर्ण राजपूताने में तहलका मचा दिया था और वह

ठगों का सरदार बन गया था। अन्त में अंग्रेज़ों ने ठगों के अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष छेड़ कर इस प्रबल संकट को भी दूर कर दिया।

नवाब अमीर खाँ के सैन्य दल को जयपुर जोधपुर बीकानेर और उदयपुर जैसी बड़ी रियासतें [illegible] प्रसन्न रखना था और असामयिक संकट समझ कर साथ [illegible] राजपूताने की विभिन्न [illegible] रियासतों से नवाब की ओर से एक सरदार साथ [illegible] रहने के लिए नियुक्त [illegible] निर्धारित चौथ वसूल किया करता था। [illegible] नवाब अमीर खाँ का [illegible] राजपूताने में निर्विवाद छा गया था और [illegible] नवाब के [illegible] और उनके वीर सहयोगियों जैसे मुज़फ़्फ़रुद्दौला [illegible] मोहम्मद सईद खाँ और गफ़ूर खाँ के सहयोग से था।

नागपुर का युद्ध

[illegible] राजपूताने में अपनी धाक जमाकर नवाब ने फिर मध्य भारत की ओर [illegible] शुजालपुर और रायसेन के मार्गों से [illegible] भोपाल आए। यहाँ नवाब नज़र मोहम्मद खाँ ने मित्रता [illegible] में [illegible] के राजा से चौथ वसूल की, फिर वहाँ से जबलपुर [illegible] भोंसला की [illegible] कर नागपुर की ओर बढ़े। तब नागपुर के [illegible] आधा भाग नवाब को लिख दिया परन्तु उधर गुप्त रूप से अंग्रेज़ी सेना और सिन्धिया की सैन्य दल नागपुर आ पहुँचे। तब नवाब अमीर खाँ ने [illegible] लिया और [illegible] कर दिए। इसी समय में होल्कर की रानी [illegible] ने परेशान कर रखा है [illegible] नागपुर के युद्ध को अधूरा छोड़कर भोपाल [illegible] सिरोंज और [illegible] होते हुए मेवाड़ क्षेत्र में आए और [illegible] में [illegible] करके [illegible] क्षेत्र में आए और [illegible] का दमन करके [illegible] दल को [illegible] किया और उसका अन्त कर दिया और यह उपाय करने के पश्चात रियासत इन्दौर को हर प्रकार से सुरक्षित करके रानी को सौंप दिया क्योंकि होल्कर कुछ दिनों से [illegible] से होकर किसी कार्य के योग्य न रहे थे और रानी ही रियासत का सम्पूर्ण कार्य सञ्चालन कर रही थी। फिर कुछ दिन पश्चात् जसवन्त राव होल्कर के देहान्त का समाचार मिला परन्तु नवाब ने मित्रता का दायित्व निभाते हुए होल्कर के स्वर्गवासी होने के पश्चात भी पूर्व की भाँति ही समस्त दायित्व निभाए और रानी की प्रत्येक प्रकार से सहायता करते रहे। इसी अवधि में करीम खाँ पिण्डारी दौलतराव सिन्धिया से पराजित होकर दो सौ सवारों के साथ नवाब के पास आए और शरण ली। दौलतराव ने करीम खाँ को मांगा तो नवाब ने अपने पास शरण लेने वाले को वापस देना वीरता के विरुद्ध समझकर स्पष्ट मना कर दिया और करीम खाँ को मोहम्मद अब्दुल गफ़ूर खाँ को सौंप कर नज़र बन्द कर दिया। उन्होंने करीम खाँ को राजा दुर्जनसाल को सौंप दिया कि वह सिन्धिया के विरुद्ध करीम खाँ से काम लें। इस

इस नवाब की विशेष सेना के जनरल दाराशाह खाँ का सन् 1227 हि. अर्थात् सन् 1812 ई. में देहान्त हो गया।

अफ़ग़ानिस्तान में नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का प्रभाव

जयपुर और जोधपुर के पारस्परिक विवादों से निवृत होकर नवाब अमीर खाँ बूंदी में ठहरे थे कि शाह शुजा बादशाह काबुल का फ़रमान आया जिसमें नवाब से गृह युद्ध में सहायता के लिए कहा गया। इसी अवधि में होल्कर रियासत की महारानी का पत्र आया कि तुम हमारे राज्य में चले आओ, तुम्हारे साथ अपनी पुत्री का विवाह करके तुम्हें अपने राज्य का उत्तराधिकारी बना देंगे। तब नवाब ने मुख्तारुद्दौला मोहम्मद शाह खाँ से विचार विमर्श किया परन्तु मुख्तारुद्दौला ने इस विचार का समर्थन नहीं किया और नवाब को हिन्दुस्तान से बाहर जाने से रोक लिया। अन्त में सन् 1229 हिजरी अर्थात् सन् 1814 ई. में मुख्तारुद्दौला, जब जोधपुर से चौथ वसूल करने गए हुए थे वह मार्ग में ही बीमार हो गए। उनकी बीमारी का समाचार सुनकर नवाब स्वयं वहां पहुंचे और उनकी मौजूदगी में ही मुख्तारुद्दौला मोहम्मद शाह खाँ का देहान्त हुआ और वहीं पर वह दफ़न हुए।

नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का अन्तिम संघर्ष/अभियान

इसी समय में जयपुर वालों ने चौथ देने से मना कर दिया फलस्वरूप जयपुर पर चढ़ाई की गई तब पुत्री राजा मानसिंह जोधपुर की राजा जयपुर की रानी थी ने नवाब को भाई बना लेने का संदेश भेजा तब नगर को लूट से संरक्षण (मुक्ती) दिया गया और एक गोले के बाद, जो कहते हैं कि हवामहल पर मारा गया था, के पश्चात् कोई गोलाबारी नहीं की गई। उस समय नवाब की सेना फतहटीबा के मैदान में डेरा डाले हुए थी और नवाब ने उस समय के दरवेश बुज़ुर्ग से जिनकी दरगाह उनके देहान्त पश्चात् फतेह टीबे पर ही बनाई गई थी, पूर्ण श्रद्धा सहित भेंट की थी परन्तु सन् 1817 ई. में जबकि नवाब ने राजपुरा के दुर्ग का घेराव कर रखा था अंग्रेजों ने एक बड़े सैन्य दल के साथ नवाब के सैन्य दल को अचानक आ घेरा। जनरल डकसन एक अन्य अनुभवी युद्ध सेना लेकर आगरा से रवाना हुआ और राजपुरा से पन्द्रह कोस की दूरी पर उसने डेरा डाला।

तब जनरल आंकटर लूनी एक ओर सुदृढ़ सेना एवम् भव्य तोपखाना लेकर आ गया था अंग्रेज़ो ने कभी इतनी सुदृढ सैन्य व्यवस्था हिन्दुस्तान में किसी भी रईस के विरूद्ध एकत्रित नहीं की थी। यही नहीं वरन् नवाब के पुराने मित्रों एवम् शुभ चिन्तकों को अपनी ओर मिला कर नवाब के समक्ष घोर संकट खड़ा कर दिया इस क्रम में फैजुदौला खाँ बन्गश जो नवाब का एक पुराना रिसालदार था अपने रिसाले सहित नवाब से अलग होकर अंग्रेज़ी रिसाले में सम्मिलित हो गया नवाब अब्दुल गफूर खाँ विशेष सलाहकार को, सुलेह[1] करा देने के बदले में, रियासत जावरा अंग्रेज़ो ने दे दी। इन परिस्थितियों में सर चार्ल्स मिटकाफ ने दिल्ली से लाला निरंजन लाल को प्रस्तावित सन्धि पत्र देकर नवाब के पास भेजा कि इस पर नवाब मोहम्मद अमीर खाँ अपनी मुहर लगा दें तो हमारे उनके मध्य भी सुलेह हो जाए। साथ ही साथ सुलेह की विशेषताएँ और भावी लाभ की सम्भावनाएँ भी कहला भेजी ताकि जिस तरह सम्भव हो नवाब मोहम्मद अमीर खाँ के भय से मुक्ती प्राप्त की जाए

यही वह ज़माना था कि पैशवा को अंग्रेज़ो ने अपना करदाता बना लिया था एवम् होल्कर सुलेह का सन्धि पत्र लिख चुके थे। उधर नवाब अब्दुल गफूर खाँ ने अंग्रेजों से सुलेह कर ली थी। रघुजी भौंसले पर चढ़ाई हो रही थी। सिन्धिया का मान सम्मान एवम् दबदबा समाप्त हो चुका था। मुख्तारूद्दौला का देहान्त हो चुका था अर्थात नवाब का दाया हाथ कट चुका था अतएव इन परिस्थितियो में नवाब अमीर खाँ के लिए इसके अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था कि राजपुरा के ठाकुर से सुलेह करके घेरा उठा लिया जाए।

नवाब तीव्र गति से निम्बहेड़ा पहुंचे और रायदाता राम को जो नवाब की ओर से रियासत जयपुर में राजदूत थे लिखा कि तुम जनरल आंकटर लूनी के पास जाकर हमारी ओर से कहो कि तुम्हारी इच्छा के अनुसार हमसे अब सुलेह हो जाना उचित है।

अतएव रायदाता राम और मोहम्मद उमर खाँ सागानेर के स्थान पर जनरल आंकटर लूनी से मिले और विस्तृत वार्तालाप पश्चात् यह निर्णय हुआ कि दोनो सैन्य दलों के मध्य एक स्थान निर्धारित होगा और जनरल आंकटर लूनी और नवाब मोहम्मद अमीर खाँ की वहाँ पर भेंट होगी। इस क्रम में कई दिन तक भेंट वार्ताएं होने के बाद सन्धि-पत्र तैयार हुआ जिसके अनुसार सन् 1817 ई में रियासत टोंक की स्थापना इस प्रकार हुई कि परगनात सिरोंज, पिड़ावा, निम्बेहड़ा, छबड़ा और टोंक जो राज्य विभाजन के सन्धि पत्र के समय महाराजा होल्कर की ओर से नवाब मोहम्मद अमीर खाँ को पूर्व में दिए जा चुके थे, उन पर नवाब का स्वामित्व एवम् अधिकार पूर्वत स्वीकार कर लिया गया। इनके अतिरिक्त परगना रामपुरा (अलीगढ़) और कम्पनी सरकार की ओर से दिया गया।

---

[1] मैल/ संधि।

इस सन्धि-पत्र का विवरण निम्न प्रकार है जो कम्पनी सरकार और नवाब अमीरूदौला अमीरूल मुल्क बहादुर के मध्य 9 नवम्बर, 1817 ई. को सम्पादित होकर 16 दिसम्बर, 1817 ई. को प्रमाणित एवम् पूर्ण पश्चात्, प्रभावी हुआ। नवाब की ओर से समस्त मामलात रायदाताराम, मीर मुन्शी ने दिल्ली जाकर निर्णित किए

इस सन्धि पत्र की उल्लेखनिय शर्त यह थी कि राजपूताना क्षेत्र में जितना भी राज्य दिया जाना है उसके अतिरिक्त रोहेलखण्ड परगना भी जो कि नवाब की मातृभूमि थी दिया जाए परन्तु अंग्रेज़ों ने इस शर्त को विचाराधीन रखा और कुछ समय पश्चात् परगना पलोल जो परगना मेवात मे था, देने की इच्छा प्रकट की। परन्तु शर्त यह रखी कि इस पर प्रबन्ध अंग्रेज़ों का रहेगा और आय नवाब को भेजी जाती रहेगी अन्त में नवाब ने यह स्वीकार कर लिया कि डेढ़ लाख रुपये नकद वार्षिक, साहिबज़ादा वज़ीरूदौला के नाम से अंग्रेजी कोषगृह में जमा कर दिए जाएगें।

रियासत टोंक हिन्दुस्तान मे इस्लामी विजयों की अन्तिम कडी थी इसका क्षेत्रफल दो हजार पाच सौ तिरेपन (2553) वर्ग मील था। आय लगभग छप्पन लाख (56,00,000) रुपया जागीरों सहित थी और जनसंख्या लगभग चार लाख (4,00,000) थी जिसमें हिन्दु 85 प्रतिशत और मुसलमान 15 प्रतिशत थे।

ब्रिटेन सरकार ने नवाब टोंक की सलामी ***सत्रह तोपों*** की निर्धारित की थी

सन्धि-पत्र

अनुच्छेद—एक

सन्धि-पत्र सरकार कम्पनी अंग्रेज बहादुर व नवाब अमीरूदौला मोहम्मद अमीर खाँ बहादुर मरहटन, मिस्टर चार्लिस थियोफिलस, मेटकॉफ बहादुर मुन्तजीमुद्दौला सरकार कम्पनी बहादुर की ओर से अधिकृत, जनाब मौअल्ला-अल्काब मार्कविस ऑफ हैस्टिंग्स के जी गर्वनर जनरल बहादुर व लाला निरंजन लाल जो नवाब बहादुर की ओर से अधिकृत थे के मध्य तय किया गया।

अनुच्छेद—दो

नवाब मोहम्मद अमीर खाँ बहादुर केवल इतनी ही सेना रखेंगें जो उनको दिए गए राज्य के प्रबन्ध एवम् सुरक्षा के लिए आवश्यक होगी और आवश्यक सेना के अतिरिक्त अपनी शेष सेना को भंग करेंगे।

अनुच्छेद—तीन

नवाब अमीर खाँ किसी भी देश पर आक्रमण नही करेंगे। वे पिण्डारियों व अन्य लूटेरों से सम्बन्ध विच्छेद कर लेगें एवम् उनके दण्डित करने में एवम् उनका दमन करने के लिए यथा शक्ति ब्रिटिश सरकार को सहयोग देंगे। वे ब्रिटिश सरकार की अनुमति बिना किसी भी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता नहीं कर सकेंगे।

अनुच्छेद—चार

नवाब अमीर खाँ को अपने अधिकृत क्षेत्रों के आन्तरिक प्रबन्ध के लिए तथा अपने दुर्गों की सुरक्षा के लिए आवश्यक बन्दूकों तथा सैनिक उपकरणों के अतिरिक्त अपनी समस्त बन्दूकें एवम् अन्य सैनिक उपकरण ब्रिटिश सरकार को दे देने होंगे। बदले में उनको उचित आर्थिक मुआवज़ा मिलेगा।

अनुच्छेद—पांच

जो सेना नवाब अमीर खाँ रखेंगे वह भी ब्रिटिश सरकार की मांग पर भेजनी होगी।

अनुच्छेद—छः

यह संधिपत्र जिस में छः अनुच्छेद हैं और जिस पर मिस्टर चार्लिस थियोफिलस मेटकाफ बहादुर के हस्ताक्षर एवं मोहरें हैं स्थान राजधानी शाहजहानाबाद में सम्पादित हुआ। इस संधिपत्र के अनुसारण में एक संधिपत्र गवर्नर जनरल बहादुर और नवाब मोहम्मद अमीर खाँ बहादुर के हस्ताक्षर एवं मोहरों से सुसज्जित कर के एक या डेढ़ मास में पहुंच जाएगा।

अल-अबद (दस्तावेज़) के नीचे हस्ताक्षर करने से पूर्व लिखा जाने वाला शब्द—जिसका अर्थ है बन्दा या फिदवी (खुदा खुद मीर सामान् अस्त अरबाबे तवक्कल रा, अर्थ है—कि जो ईश्वर पर विश्वास करते हैं उनकी ईश्वर स्वयं सहायता करता है।

हस्ताक्षर एवम् मुहर लाला निरंजन लाल, वकील नवाब अमीरुद्दौला बहादुर।

अल अबद –मुहर सर चार्ल्स मिटकाफ रेजिडेन्ट देहली।

मुहर वायसराय हिन्द।

इस सन्धि का हिज़ एक्सीलेन्सी व गवर्नर जनरल मार्किवस आफ हैस्टिंग्स द्वारा सन 1817 अर्थात 1234 हिजरी में अनुसमर्थन किया गया।

---

[1] टोंक का इतिहास (हिन्दी) लेखक हनुमान प्रसाद सिंहल में अनुच्छेद 6 का विवरण इस प्रकार है—छः अनुच्छेदों के इस समझौते करार जो दिल्ली में सम्पन्न किया गया एवं जिस पर मि चार्ल्स मेटकाफ एवं लाला निरंजन लाल द्वारा हस्ताक्षर किए गए और मोहर लगाई गई एवं हिज़ एक्सीलेन्सी एवं मोस्ट नोबल गवर्नर जनरल और नवाब अमीर खाँ द्वारा जिसका अनुसमर्थन हुआ आज दिनांक 9 नवम्बर 1817 ई में एक माह के अन्दर दिल्ली भिजवाना होगा।

नोट संधि पत्र का विवरण 'टोंक का इतिहास' (हिन्दी) लेखक—हनुमान सिंहल एवं इस पुस्तक के उर्दू अनुवाद के प्रकाश में यथोचित संशोधन सहित अंकित किया गया है।

रईसाना जीवन सन् 1817 ई. से 1834 ई. तक

ऐसा बहुत कम देखने में आया है कि दुनियादारी के व्यावहारिक क्षेत्र में तलवार के धनी व्यक्तित्वों ने दुनियादारी और [illegible] तथा विशेषताओं में दक्षता का परिचय दिया हो, परन्तु नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ बहादुर ने तलवार को मियान में रखने के पश्चात रियासत टोंक के प्रबन्ध तथा [illegible] में [illegible] का परिचय देते हुए वे कारनामे अन्जाम दिए जो [illegible] चिरस्मरणीय है। टोंक दुर्ग में आवास [illegible] निर्माण में व्यस्त हुए और प्रधान [illegible] मोहल्ला अमीर गंज में स्थित है का [illegible] हुई।

प्राचीन टोंक और दुर्ग के मध्य एक [illegible] था। शासक को जनता से निकट करने के उद्देश्य से [illegible] के दृष्टिगत अपने सैन्य दल की संख्या से आबाद [illegible] मोहल्ला [illegible] अपने सम्बन्धियों को और मोहल्ला [illegible] पलटन, रसाला [illegible] और बज़ार में अपने सैन्य दलों को और शागिर्द पैशा में अपने सेवकों को तथा मोहल्ला [illegible] में [illegible] महाजनों व कायस्थ अहलकारों को आबाद किया और नई आबादी और पुरानी आबादी के मध्य भाग को बाज़ार का स्वरूप दिया। [illegible] गंज और बाज़ार अमीरगंज के पश्चात नवाबों ने अपने नाम से बाज़ार बसाए। पुरानी जामा मस्जिद, टोंक में भी विकास एवम विस्तार इसी समय में कराया गया।

टोंक में मुसलमानों के लिए अदालतें शरीअत और अन्य [illegible] की स्थापना तथा प्रबन्ध पश्चात् रियासत के परगनात की ओर ध्यान दिया और इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम सन 1818 ई में सिरोंज का दौरा किया। फिर दो वर्ष पश्चात अर्थात सन् 1820 ई में सिरोंज दूसरी बार पधारे और दो माह तक वहां निवास कर व्यावहारिक एवम् सुधार की प्रबन्ध व्यवस्था में व्यस्त रहे। तीसरी बार [illegible] सन 1828 ई में होते हुए पुन सिरोंज पधारे और अपने उत्तराधिकारी साहिबज़ादा मोहम्मद वज़ीर ख़ाँ को सिरोंज की हुकूमत सौंप कर वापिस टोंक आए। चौथी बार सिरोंज के प्रबन्ध कार्य ने पुन अपनी ओर अमीरुद्दौला बहादुर को आकर्षित किया और फिर परगने पर पूर्णतया नियन्त्रण हो गया। परगने की जनता को जब प्रत्येक प्रकार से शान्ति प्राप्त हो गई तब टोंक वापस आए और कुछ समय पश्चात रोग ग्रस्त होकर

25 जमादी-उल-आखिर सन् 1250 हिजरी अर्थात् 30 सितम्बर 1834 ई. को नवाब बहादुर का देहान्त हो गया। क़बरस्तान, मोतीबाग में दफनाए गए। प्रारम्भ में उनकी क़ब्र कच्ची थी परन्तु बाद में नवाब इब्राहीम अली खाँ ने उसे संगेमरमर से पक्का करा दिया, तब ही से नवाबों में से इन ही की एक क़ब्र पक्की है और बाद के नवाबों की समग्र क़ब्रें कच्ची अर्थात् मिट्टी की निर्मित हैं।

पुरुष सन्तानों की वंशावली निम्न प्रकार अंकित है तथा स्त्री सन्तान की वंशावली किन्हीं कारणवश छोड़ दी गई है।

नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ

(1) साहिबज़ादा मोहम्मद वज़ीर खाँ (उत्तराधिकारी)

(2) अब्दुल करीम खाँ

(3) इबादुल्लाह खाँ

(4) जमाल खाँ

(5) जलाल खाँ

(6) कमाल खाँ

(7) इकराम खाँ

(8) अहमद अली खाँ "रौनक़"

(9) फ़क़ीर अहमद यार खाँ

(10) बख़्त बुलन्द खाँ

(11) मुनीर खाँ

(12) हिदायतुल्लाह खाँ

(13) मोहम्मद जहांगीर खाँ

(14) मोहम्मद फताह खाँ

नोट—क्रम नम्बर 12, 13, 14 का देहान्त अव्यस्कता में हो गया था।

नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ की विशेषताएँ

अंग्रेज़ो से सन्धि के परिणाम स्वरूप रियासत टोंक प्राप्त होने पर सर्वप्रथम अमीरी सेना बनास के तट पर ठहरी या उतरी। मोहल्ला बहीर, लश्कर ही के कारण नाम पड़ा। तब नवाब अपने महलात् (रानियों) सहित बेगम बाग़ में ठहरे जिसका मुख्य द्वार उस समय वह था जहाँ दरवान के रूप में ताड, खजूर के दो वृक्ष बनास के तट पर लगे हुए थे परन्तु अब वे समाप्त हो चुके हैं।

उनका दरबार जामा मस्जिद, बहीर के एक भाग में पत्थरों के एक फ़र्श पर लगता था जिसके चिह्न अब तक भी शेष हैं. कुछ समय तक बहीर में ठहर कर सैन्य दल के आदमियों को पूर्वत बहीर में ही रहने दिया और वह स्वय दुर्ग में निवास हेतु पधारे।

जीवन का यह काल गम्भीरता एवम् सूफ़ियाना था। गम्भीर इसलिए कि सहयोगियों में बावजूद बावन नवाबों के राज्य विभाजन या किसी भी स्तर से कभी

अमीरुद्दौला अमीरुल मुल्क नवाब मोहम्मद अमीर ख़ाँ साहिब "शमशीरजंग बहादुर" 1767 ई. से 1834 ई. तक

[illegible] नवाब मोहम्मद अमीर खाँ की [illegible] नवाब अमीर खाँ [illegible] काल में [illegible] मैदान में [illegible] अमीर खाँ ने अपने जीवन का एक मात्र [illegible] से [illegible] कभी नहीं किया [illegible] में और दिन में संघर्ष करते रहे।

[illegible] था [illegible] में [illegible] और [illegible]

अमीरे आज़म नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का हिन्दुस्तान के इतिहास में स्थान

[illegible] पश्चात [illegible] के रूप में [illegible] था।

[illegible] मातृभूमि [illegible] भाग में अपने [illegible] और नेतृत्व का [illegible] गाड़ देना [illegible] नवाब अमीर खाँ की विजयों को हिन्दुस्तान में [illegible] और दूसरी ओर इसे [illegible] कहा जा सकता है

अंग्रेज़ [illegible] के चंगुल से हिन्दुस्तान को बचाने का प्रथम संघर्ष तो सुल्तान हैदर अली शासक मैसूर और उनके सुपुत्र [illegible] टीपू सुल्तान शेरे मैसूर ने किया था परन्तु हिन्दुस्तान में मीर सादिक जैसे नमकहरामों की दुर्स्थिति में वे अपना उद्देश्य प्राप्त न कर सके इसके पश्चात हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के पक्ष में नवाब मोहम्मद अमीर खाँ ने वो सब कुछ किया जो शेरशाह सूरी अफ़गान ने मुगलों को हिन्दुस्तान से निकालने के लिए किया था परन्तु शेरशाह सूरी अपने प्रयासों में सफल हो [illegible] और नवाब

मोहम्मद अमीर खाँ को सफलता न मिल सकी यद्यपि उन्होंने इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए समस्त मराठा सरदारों को भी मिला लिया था। परन्तु व्यावहारिक प्रथम परीक्षा की घड़ी में अन्त तक केवल नवाब मोहम्मद अमीर खाँ ही डटे रहे और शेष अन्य मराठा व जाट सरदार एक दूसरे की दुर्दशा देखते रहे और स्वयं उनमें जाति प्रेम व देश प्रेम न होने और पारस्परिक शत्रुता होने के कारण एक दूसरे के विरुद्ध षड्यन्त्र करके अंग्रेजो से मिलते चले गए।

मराठा सरदारों में सर्वप्रथम सबसे शक्तिशाली परन्तु अस्थिर स्वभाव के बालाजीराव पैशवा थे, 31 दिसम्बर सन् 1802 ई में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से बसीन के स्थान पर संधि करके उन्होंने स्वयं के स्वतन्त्र शासन को समाप्त कर दिया, इस घटना के एक वर्ष पश्चात अर्थात् 30 दिसम्बर 1803 ई को महाराजा दौलतराव सिन्धिया भी संधि पत्र पर हस्ताक्षर करके अंग्रेजों के करदाता बन गए। और महाराजा जसवन्त राव होल्कर ने यद्यपि एक लम्बी अवधि तक कम्पनी सरकार के आगे नतमस्तक नहीं किया परन्तु विवश होकर अन्त में उन्होंने भी दिसम्बर 1805 ई में बनास नदी के तट पर कम्पनी की शर्तों को स्वीकार कर लिया जिसके अनुसार मालवा का अधिकार किया हुआ सम्पूर्ण क्षेत्र और दक्खन के अधिकार में लिए हुए अधिकतर क्षेत्र उनको वापस दे दिए गए।

सबसे अन्त में कम्पनी सरकार ने नवाब मोहम्मद अमीर खाँ की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया जिसके परिणाम स्वरूप वह संधि पत्र जो 9 नवम्बर सन 1817 ई में प्रभावी हुआ अस्तित्व में आया। जिसके अनुसार परगना सिरोंज पिड़ावा निम्बाहेड़ा, छबड़ा और टोंक जो कि विभाजन वचन पत्र के अनुसरण में महाराजा होल्कर की ओर से नवाब अमीर खाँ के अधिकार में दिए जा चुके थे पूर्ववत नवाब के स्वामित्व-पूर्ण अधिकार में स्वीकार किए गए और परगना रामपुरा, गवर्नमेन्ट हिन्द की ओर से बढ़ाया गया।

जसवन्त राव होल्कर को महाराजा होल्कर बनाने वाले बाजीराव पेशवा को परास्त करने वाले दौलतराव सिन्धिया से अपना लोहा मनवाने वाले निजाम दक्खन और ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से एक करोड़ रुपया वार्षिक आय का राज्य दिए जाने पर स्वाभिमान के कारण मना करने वाले गायकवाड़ और भौंसले से तलवार के जोर से चौथ वसूल करने वाले राजपूताना की रियासतों से प्रति वर्ष कर लेने वाले, उनके पारस्परिक विवादों में समझौता कराने वाले निर्णायक, महाराजा होल्कर के पश्चात् भी इन्दौर रियासत को धरमा चेले के षड्यन्त्र से मुक्ति दिलाने वाले, रोहेला पठानों में युद्ध करने की आत्मा जागृत करने वाले, रियासत भोपाल के साथ नमक हलाली का दायित्व निर्वाह करते हुए रवादारी बरतने वाले, महाराजा रणजीतसिंह शासक पंजाब के मित्र

बनकर एक मास से अधिक समय तक सम्मान सहित अतिथि रहने वाले और अंग्रेज़ कमाण्डर जनरल आर्थर वैलज़ली को जिसने आगे चल कर नेपोलियन महान् को अन्तलम[1] के रणक्षेत्र में परास्त किया था उसे परास्त तो नहीं किया परन्तु उससे अपना लोहा मनवाने वाले अपने समय के रोहेला पठानों के सबसे बड़े सरदार और हिन्दुस्तानी वीरों के सरताज और 'हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है' का नारा लगाने वाले अमीरुद्दौला नवाब मोहम्मद अमीर खाँ ही थे।

इसमें सन्देह नहीं कि नवाब अमीरुद्दौला बहादुर, अपने महान् कारनामों यथा आक्रमण में दक्षता व्यक्तिगत वीरता, धैर्य व साहस, स्वतन्त्र आत्मा, राष्ट्रीय भावना और महान विजयों ऐसी विशेषताओं से सुसज्जित होने के कारण ही महान अमीर (महानायक) कहलाने के अधिकारी हैं।

उनको जिस कला ने एक इस्लामी रियासत का स्वामी बनाया वह उनको उनके समय के अनुरूप कार्य करने की विधा थी। जो कि एक छोटी सी रियासत पर सन्तोषी हो जाने और ईश्वर की इच्छा के आगे सर झुका देने से प्रमाणित है। वरन् ऐसा विजेता और तलवार का धनी जिसकी अधीनता में अस्सी हज़ार हिन्दुस्तान प्रेमी उस समय हों यदि सन्तोष की परिधि से बाहर निकलना चाहता तो राजपूताना और मालवा उसके अधीन होते। अमीर महान् द्वारा श्रद्धा पूर्वक स्वयं की मुहर पर यह पंक्ति अंकित करना उनके सूफ़ियाना गुणों को दर्शाता है—

مہر نواب (خدا خود میر سامان است ارباب توکل را)

खुदा खुद मीर सामान् अस्त अरबाबे तवक्कल रा

अर्थ— जो लोग ईश्वर पर पूर्णतः आश्रित होते हैं ईश्वर स्वयं उनकी सहायता करता है।

अंग्रेज़ों ने समस्त मराठा सरदारों को अधीन कर लेने के बाद भी सन्तोष उस समय तक न किया जब तक कि नवाब मोहम्मद अमीर खाँ से सन्धि न कर ली। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किए गए। राज्य व धन का लोभ जब निरर्थक प्रमाणित हुआ तो नवाब की शक्ति का अनुमान लगा कर तीन लाख का एक महान सैन्य दल जो इससे पूर्व अंग्रेज़ों ने किसी भी हिन्दुस्तानी रईस के विरूद्ध एकत्रित नहीं किया था ऐसे संकट के समय ला खड़ा किया जबकि उन्होंने मात्र तीन सौ सवारों के राजपुरा दुर्ग का घेराव कर रखा था। ऐसे संकट में भी शत्रु के वश में

---

[1] तुर्की का क्षेत्र।

न आना एक शूरवीर ही का काम है। संधि पत्र की सम्माननीय शर्तों और दिए गए सम्मान से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का भय एवम् दबदबा तथा राजनीतिक महत्व अंग्रेजों की दृष्टि में कितना ऊंचा था।

अमीर महान् के व्यक्तित्व की हैसियत का मज़ार (कब्र) आज भी टोंक के मोती बाग क़ब्रस्तान में है और देखा जा सकता है।

इस्लाम धर्म के अनुसार प्रारम्भ में वह मज़ार कच्चा था बाद में उनके उत्तराधिकारी वज़ीरूद्दौला और उनके उत्तराधिकारी मोहम्मद अली खाँ के शासनकाल तक कच्चा रहा क्योंकि ये दोनों नवाब आस्थानुसार गैर मुकल्लिद थे।[1] परन्तु तृतीय नवाब हाफ़िज़ मोहम्मद इब्राहीम अली खाँ के बाल्यकालीन शासनकाल में उनके चाचा उबैदुल्ला खाँ रियासत के अधिकृत व्यक्ति (नायब) के समय में संगमरमर का पक्का मज़ार निर्मित किया गया परन्तु विद्वानों एवम् धर्म संसद के प्रभाव से नवाब मोहम्मद अमीर खाँ या किसी भी टोंक नवाब का उर्स स्थापित नहीं किया गया। बाद में अन्य सम्मानीय एवम् प्रतिष्ठित धार्मिक व्यक्तियों तथा शहीदों का उर्स मनाया जाने लगा। उदाहरण स्वरूप नौ गज़े साहिब का उर्स, मौलाना मन्सूर साहिब का उर्स सैय्यद मोहम्मद अली साहिब का मज़ार स्थित बहीर का उर्स सैयद मोहम्मद अली साहिब का मज़ार स्थित छावनी का उर्स और मौलाना इरफ़ान साहिब का मज़ार स्थित पाल चतुर्भुज तालाब का उर्स के नाम लिए जा सकते हैं।

नवाब अमीरूद्दौला बहादुर के नवाबी शासनकाल के प्रसिद्ध व्यक्तित्त्व

नवाब अमीरूद्दौला के इस शासनकाल में मंत्री रायदाना राम थे। इन्हीं के नाम से रायजी का तख्ता प्रसिद्ध है जो नगर टोंक की घनी आबादी का एक मोहल्ला है, जहाँ कुछ घर कायस्थों और अधिकतर महाजनों, ब्राह्मणों के हैं। राय साहिब का अधिकार इस स्तर का था कि नवाब मोहम्मद अमीर खाँ की मुहर के साथ जब तक कि राय साहिब के हस्ताक्षर नहीं होते थे वह सनद[2] अनुपालना योग्य नहीं समझी जाती थी। लिखने पढ़ने का अधिकतर कार्य विश्वास पात्र कार्यकर्ताओं से लिया जाता था। और आज्ञाओं पर हस्ताक्षरों के स्थान पर मुहर लगायी जाती थी।

राय साहिब स्वयं के आवासगृह मोहल्ला तख्ता से हाथी पर सवार होकर दुर्ग तक पेशी करने जाया करते थे और उनकी हवेली के बाहर एक दर्जन सवार सेवकों का पहरा लगा रहता था।

---

[1] जो सीधे ही क़ुरान एवं हदीस के प्रकाश में नियम मानते हों।

[2] प्रमाणिक-प्रपत्र।

नवाब अमीरूद्दौला अमीरूल मुल्क ने अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध संघर्ष करके रियासत टोंक की स्थापना की थी जो राजस्थान में मात्र एक मुस्लिम रियासत थी जहां पूर्व में कोई सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (तमद्दुन) नहीं थी।

इस अन्धकारमय वातावरण में इस्लामी प्रकाश को आच्छादित करने के उद्देश्य से हर कलाकार अतिथि का स्वागत करना प्रारम्भ किया गया फलस्वरूप कुछ ही अवधि में अधिक संख्या में तलवार के धनी और विद्वान यहाँ एकत्रित हो गए। इसलिए नवाब के साथ जहां अनुभवी शूरवीर थे, वहीं प्रसिद्ध भाषा विशेषज्ञ तथा धार्मिक विद्वान एवम् साहित्यकार भी थे। नवाब स्वयं यद्यपि पढ़े लिखे न थे परन्तु विद्या प्रेमी एवम साहित्य संरक्षक अवश्य थे।

मौलाना सैयद अहमद साहिब शहीद।

इस नवाबी दौर के बड़े मुजाहिद[1] और बड़े शूरवीर हुए हैं। जिन्होंने नवाब के सैन्य दल में सात वर्षों तक नौकरी की थी तत्पश्चात् अपनी जिहाद की भावना से प्रेरित होकर सैकड़ों कारनामे अन्जाम देकर सीमा पर सिक्खों से युद्ध करते हुए शहीद हो गए नवाब वज़ीरूद्दौला आपके चेले (मुरीद) थे। आप उस समय तक नवाब मोहम्मद अमीर खां के साथ रहे जब तक की नवाब अंग्रेजों के साथ युद्धरत रहे। परन्तु जब नवाब ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली तो आप अलग होकर जिहाद करते हुए सीमा तक जा पहुंचे।

हकीम सैय्यद अनवर अली साहिब रामपुरी।

एक बड़े विद्वान और हकीम थे रामपुर से आकर आपने टोंक में निवास किया नवाब अमीर खां ने हकीम साहिब को अपने ज्येष्ठ सुपुत्र मोहम्मद वज़ीर खां का गुरू और संरक्षक नियुक्त किया इसलिए हकीम साहिब नवाब के देहान्त पश्चात् वज़ीरूद्दौला के काल में स्थायी रूप से आबाद हो गए

मौलाना खलीलुर्रहमान साहिब रामपुरी।

पठान थे जो नवाब मोहम्मद अमीर खां के साथ रहे आप थे। बड़े विद्वान और उच्चस्तरीय फ़ाज़िल[2] थे आप ही के परिवार ने टोंक में इस्लामी धर्म और इमाम अबूहनीफ़ा का फ़िक़ह (सैद्धान्तिक क्षेत्र) का सम्भाला था आप ही ने मोतीबाग मदरसे की स्थापना की थी आपको अपने बुज़ुर्गों से जो सुना ज्ञान मन्कूला इल्म), तथा बुद्धि पर आधारित ज्ञान (गैर मन्कूला इल्म) पर दक्षता प्राप्त थी इसके साथ साथ अरबी व फारसी दोनों भाषाओं पर भी अत्याधिक दक्षता प्राप्त थी।

---

[1] धर्म योद्धा

[2] उच्चकोटि के विद्वान

फक़ीर मोहम्मद साहिब "गोया"।

[illegible] अच्छे [illegible] आबादी के [illegible] विशेष लगाव था।

मौलवी मोहम्मद साहिब।

[illegible] (इल्मे [illegible]) मुसल्लमाने [illegible] थी। [illegible] नवाब ने आपको धार्मिक [illegible] में स्थायी निवास करा दिया था। वज़ीरी काल में मौलाना का देहान्त हो गया था।

मौलवी सईदुल्ला साहिब।

[illegible] मस्जिद टोंक [illegible] नियुक्त किया था। आप [illegible]

मुख्तारुद्दौला महमूद ख़ाँ साहिब।

[illegible] महमूद ख़ाँ [illegible] में शेर को [illegible] और [illegible] थे। आप [illegible] किन्तु विद्वानों को अत्यन्त [illegible] देते थे। आपको शस्त्रास्त्र [illegible] बड़ी विशेषता [illegible] उदाहरण नहीं [illegible] इनके [illegible] होते [illegible]

अख़ूनज़ादा मोहम्मद [illegible] ख़ाँ साहिब।

[illegible] के [illegible] नवाब [illegible] और [illegible] आबाद हो गए थे। वज़ीरुद्दौला आप ही के नवासे थे।

---

[1] [illegible]

रायदाता राम साहिब।

वही वज़ीरे रियासत हैं, जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। आप भोपाल में दीवान थे और नवाब समीर ख़ॉ जो उस समय वहा दुर्ग रक्षक (क़िलेदार) थे उनकी मित्रता एवम् सहयोगी भावना से वशीभूत होकर रियासत की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था और तब से नवाब के विशेष सलाहकार एवम् विश्वासपात्र बन गए थे। रियासत टोंक स्थापित होते समय नवाब के क़ानूनी सलाहकार थे एवम् अंग्रेज़ों से सन्धि-पत्र निर्णित होते समय नवाब की ओर से उनका प्रतिनिधित्व भी किया था। आप ही ने अपने प्रयास, प्रयत्न एवम् बुद्धिमानी से अंग्रेज़ों से कठिन परिस्थितियों में सम्माननीय सन्धि करवाई थी और नवाब को सन्धि-पत्र स्वीकार कर लेने के लिए उनकी इच्छा के विरूद्ध विवश किया था। यद्यपि नवाब तो क्रोधित शेर की भांति अंग्रेज़ों से संधि करने के विरुद्ध थे। इसलिए कुछ लोगों का अनुमान या विचार है कि अंग्रेज़ों ने राय साहिब को अपनी ओर मिला लिया था परन्तु यह बात असत्य है, इसलिए कि राय साहिब या उनकी सन्तान का अंग्रेज़ों से किसी भी प्रकार लाभान्वित होना सिद्ध नहीं होता है। आप जीवन के अन्तिम समय तक नवाब के विश्वासपात्र और शुभ-चिन्तक रहे।

राय निरंजन लाल साहिब।

नवाब की ओर से रियासत जयपुर में राजदूत (सफ़ीर) थे, और सन्धि-पत्र की शर्तें अंग्रेज़ों से निर्णित करने में प्रेरक थे। जीवन के अन्तिम समय में टोंक ही में आवास करते थे, जहाँ उस समय कायस्तों के लगभग दो सौ परिवार उत्तर प्रदेश से आकर आबाद हुए थे।

शहादत ख़ाँ (शहामत ख़ाँ) साहिब और मोहम्मद शाह ख़ाँ।

तृतीय नवाब के विख्यात रिसालेदार थे। सन्धि-पत्र के पश्चात् अमीरी सेना की संख्या अत्यधिक कम कर देने के बावजूद भी रियासत टोंक की सेना में उच्च पदाधिकारी थे।

मुन्शी बसावन लाल साहिब कायस्त।

अमीर-नामे के लेखक हैं। उस काल के उच्च कोटि के लेखक, इतिहासकार और विद्वान् थे। आप भी तख़्ता ही में आबाद हो गए थे।

नोट *अमीरनामा (फारसी), टोंक इतिहास का प्रथम मौलिक स्रोत होने के बावजूद अप्रकाशित है। इस का हिन्दी भाषा में अनुवाद सर्व श्री हनुमान प्रसाद सिंहल एवं संस्थान के डॉ. मोहम्मद रियाजुद्दीन ख़ाँ कर रहे हैं।*

वज़ीरूद्दौला अमीरूलमुल्क नवाब मोहम्मद वज़ीर ख़ाँ बहादुर नुसरत जंग (1834 ई. से 1865 ई. तक)

(मुहर—ख़ुदा हस्त सुल्तान मोहम्मद वज़ीर)

27 जमादेउस्सानी 1250 हिजरी को जब आपने सिंहासन ग्रहण किया तो उस समय दरबारे वज़ीरी पूर्णत युद्ध, कला, सभ्यता-सस्कृति, विद्या एवम् विद्वानों, राजनीति, बुद्धिमानी और इस प्रकार विद्या एवम् कर्म ऐसी सकारात्मक विशेषताओं से सुसज्जित एवम् अलंकृत था। आप स्वयं विद्वान् थे, क्योंकि आपकी शिक्षा शाह अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाह अलेह देहलवी की पाठशाला में हुई थी। उन्होंने कुरान और हदीस के प्रकाश में नियम बनाने वाले (गैर मुक़ल्लिद) धार्मिक विद्वानों की सगत में दीक्षा प्राप्त की थी इसलिए इस्लामी विधान और मोहम्मद साहिब के तरीक़े (सुन्नते रसूलल्लाह) के अनुपालक थे। इसलिए कला व विद्या में दक्ष महानुभाव चारों ओर से सिमट कर वज़ीरी ज्योति (शमा वज़ीरी) के परवाने बने हुए थे। यह इसी का परिणाम है कि आज भी टोंक में कण्ठस्थ कुरान शरीफ पढ़ने वाले अर्थात् हाफ़िज अत्यधिक सख्या में प्रत्येक वर्ष तैयार होते रहते हैं। परन्तु अब विद्वानों की सख्या निरन्तर कम हो रही है। सबसे प्रथम पाठशाला जो टोंक में प्रारम्भ हुई वह अमीरीया पाठशाला थी जिसकी शिक्षा जामा-मस्ज़िद की बारहदरियों में होती थी। इसके पश्चात् मस्जिद काफले में मदरसा नासिरया स्थापित हुआ। इसलिए कुछ ही समयावधि पश्चात् वज़ीरी काल में दीने-हनफी (आखरी चार इमामों में से एक इमाम अबु हनीफा हुए हैं, जिनके मानने वाले हनफी कहलाते हैं) का यह स्थल बिदअत (धर्म में कोई नई बात निकालना) जैसे —दोषों से पूर्णत. साफ सुथरा एक सुन्दर नगर बन गया।

नवाब ने सर्वप्रथम माल विभाग की ओर ध्यान आकर्षित किया एवम् होल्करों की प्रबन्ध व्यवस्था के अनुसरण में व्यक्तिगत स्वामित्व या अधिकार की जो प्रथा प्रचलित थी उसे पूर्णत. बन्द करके ग्रामीण क्षेत्र को ख़ालसा (सरकारी भूमि जिस पर किसी और का अधिकार नहीं) घोषित कर दिया और हर पन्द्रह-बीस देहात पर कर वसूल करने वाला ज़िला अधिकारी (मोहस्सिल, ज़िलेदार) के नाम से नियुक्त करके प्रत्येक गांव का अलग से अधिकार (इजारा) दिया गया। सीमा के ज़िलेदार पर व्यापारियों से सरकारी कर (मालगुज़ारी) वसूल करने का उत्तरदायित्व था। दुर्बल कृषकों के सहायतार्थ खाद्यान्न वितरित करने की प्रथा भी प्रचलित की गई। न्याय प्रबन्ध व्यवस्था में सुधार हुआ. नवाब स्वयं विद्वान् एवम् कर्मयोगी थे और मोहम्मद साहिब

वज़ीरूद्दौला अमीरूलमुल्क नवाब
मोहम्मद वज़ीर ख़ाँ बहादुर नुसरत जंग
(1834 ई. से 1865 ई. तक)

[illegible] साथ साथ छबड़ा और सिरोंज रवाना किया।

[illegible] करीम साहिब को भी [illegible] पड़ी। परन्तु नवाब की इच्छा से उन्हें [illegible] सरकार ने [illegible] छबड़ा और टोंक दोनों में रहने नहीं दिया और [illegible] करके अजमेर में नजरबन्द कर दिया। अजमेर में नवाब की [illegible] के नाम से अब तक भी प्रसिद्ध है। इनके दो पुत्र थे [illegible] खाँ और [illegible] खाँ। [illegible] खाँ के पुत्र साहिबज़ादे [illegible] थे [illegible] मोहम्मद खाँ के पुत्र साहिबज़ादे उसामा खाँ थे। लेखक के दादा [illegible] खाँ साहिब, नवाब अब्दुल करीम खाँ साहिब का नज़र बन्दी स्थान, अजमेर के काल में पहले रामपुर से [illegible] सहारनपुर आए और फिर सहारनपुर से अजमेर आकर नवाब अब्दुल करीम खाँ के देहान्त पश्चात् जब राज परिवार (साहिबज़ादगान) को टोंक लाया गया तब हमारे दादा सपरिवार एवम् समाज के सम्भ्रान्त व्यक्तियों सहित साहिबज़ादा हामिद खाँ के साथ टोंक आए और सम्पूर्ण जीवन उनके निकटस्थ (मुसाहिब) रहे। प्रारम्भ में हमारे परिवार को जिस जगह ठहराया गया था उसे अब किलेदार का घेर कहते हैं।

अजमेर में निवास काल में मेरे पिता मोहम्मद गुलबाज़ खा साहिब का बाल्यकाल व्यतीत हुआ यद्यपि उनका जन्म सहारनपुर में हुआ था। अजमेर उस काल में ख़्वाजा (र अ) के उर्स के कारण एक विख़्यात दर्शन स्थल बन गया था, इसलिए पहलवानों के दगलों में जनता की रूचि सामान्य बात हो गई थी। इसी कारण पिताश्री को भी व्यायाम और कुश्ती में अभिरूचि, शिक्षा ग्रहण के मुकाबले बढ़ गई थी, फलस्वरूप नवयुवक काल में वह टोंक के सम्भ्रान्त सम्प्रदायों एवम् साहिबज़ादगान के शिष्यों (पट्ठों) के गुरू कहलाए जाने लगे, यद्यपि वह तोपखाने में कर्मचारी थे। हकीम अमरोहा वालों के औषधालय (मतब) एवम् सत्संग में बैठने से वैद्यक (तिब) के बहुत से अनुभव प्राप्त कर लेने पर तोपख़ाने की नौकरी त्यागकर उस काल के नवाब इब्राहीम अली ख़ाँ के सबसे छोटे भ्राता साहिबजादा अब्दुल हमीद ख़ाँ के कामदार और विशेष वैद्य (तबीबे ख़ास) बन गए थे। जीवन का शेष भाग वही व्यतीत कर हृदय गति रूक जाने के रोग से अकस्मात् 17 जुलाई सन् 1917 ई में वह परलोक सिधार गए । अजमेर, चूंकि राजपूताना प्रान्त की राजधानी था और अंग्रेज़ ऐजेन्ट गवर्नर जनरल का मुख्यालय था इसलिए अंग्रेज़ी शिक्षा के स्कूल वहाँ खोल दिए गए। मेरे चाचा[1] मुन्शी नियाज़ अली ख़ाँ साहिब ने बाल्यकाल में उर्दू, फ़ारसी और अंग्रेजी की शिक्षा भली भांति ग्रहण कर ली थी। टोंक आ जाने के पश्चात् आप की प्रसिद्धि अंग्रेज़ी जानने वाले मुन्शी की हैसियत से और कवि (शायर) की हैसियत से हुई। आपका काव्य नाम "असअद" भी रहा है और टोंक में आपके शिष्य कवियो मे साहिबजादा भाई जान "आशिक" भी हुए हैं। हमारे दादा[2] साहिब को टोंक छोडे हुए अब सौ वर्ष हो चुके हैं। वैसे हमारे सम्बन्धी एवम् परिवार जन, सहारनपुर, आँवला, रामपुर और फतेहगढ़ (उत्तर प्रदेश) में अब भी हैं।

मुख़्तारूद्दौला परगना छबडा के दूषित (खराब) वातावरण को ठीक करने के पश्चात् सिरोंज आए और छ महीने तक सिरोंज की शासन-सत्ता अपने हाथ में रखी। समस्त प्रबन्ध व्यवस्था स्थापित कर फिर टोंक आ गए। इस काल की प्रसिद्ध घटना सन् 1857 ई. का दिल्ली ग़दर है।

इस प्रकार विद्रोहियों की सेना जिन्हें अंग्रेज़ लोग कालों की सेना भी कहते हैं, सहायता लेने टोंक भी आई परन्तु वज़ीरूद्दौला ने अंग्रेज़ी सरकार से सन्धि एवम् वचन तथा वफादारी को सर्वोच्च स्थान देते हुए सहायता देने से स्पष्टत: मना कर दिया और कालों की सेना को अपनी सेना की सहायता से टोंक सीमा से हट जाने और चले

---

[1] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एज़ाज़ ख़ाँ के ***चाचा***।

[2] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एज़ाज़ ख़ाँ के ***दादा***।

जाने के लिए विवश कर दिया। राजा लावा के विद्रोह पर आक्रमण भी इसी वज़ीरी काल की घटना है जिसमें अन्याय पूर्वक बहुत से सैनिक पठान और सैयद मारे गए और अन्त में सन्धि कर ली गई।

नवाब वज़ीरूद्दौला बहादुर पर एक—दृष्टि

नवाब वज़ीरूद्दौला का व्यक्तित्व स्वयं एक उदाहरण है। इसलिए कि आपका राज दरबार अत्यन्त सभ्य विद्वत्‌सभ्यता के साथ सादगी से सुसज्जित था। जहां क़दमबोसी (चरण स्पर्श करना) अथवा झुक कर नवाब को प्रणाम करना प्रतिबन्धित था। दरबार की शान यह थी कि एक ओर प्रबन्धक रियासत टोंक, नवाब से बादशाहत के नियम व आदर्श पूछने में व्यस्त रहते थे तो दूसरी ओर सेना अधिकारी युद्ध कला का अध्याय भी उनसे पढ़ते थे। कभी आप धार्मिक समस्याएं (फिकही मसाईल) के सम्बन्ध में उसके विद्वानों से परिचर्चा करते रहते थे और कभी मोहम्मद साहिब (स अ व) के कथनों के विद्वान (मोहद्दसीन) एवम् कुरान शरीफ के अर्थ बताने वाले (मुफस्सरीन) थे जो परम्परागत सिद्धान्तों पर परिचर्चा करते थे। दार्शनिकों ने जहाँ कोई प्रश्न किया तो वह प्राचीन एवम् आधुनिक दर्शन शास्त्र के विभिन्न अध्याय खोल देते थे। हकीमों ने यदि शारिरिक पत्तों (अख़लात) की बात छेड़ी तो विस्तार पूर्वक घण्टों व्याख्यान देते थे। इतिहासकारों ने यदि लाभान्वित होना चाहा तो अपनी स्मरण शक्ति से इतिहास जगत् की घटनाएं वर्णित कर डालीं। आपके व्याख्यान के वाक्य साहित्यिक खानों के मूल्यवान धरोहर होते थे कथन में सत्यता एवम् सत्यता में प्रभाव होता था। दिल्ली और लखनऊ के विद्वान एवम् कलाकार टोंक में विद्या एवम् कला को आदर की दृष्टि से देखे जाने के कारण टोंक की ओर अनायास ही आकर्षित होने लगे एवम् उनकी संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि टोंक उस समय हिन्दुस्तान का शीराज़ (ईरान में विद्या एवम् कला का प्रसिद्ध केन्द्र) बन गया था।

नवाबों तथा रईसों में लाज व सुआचरण की सामान्यत कमी होती थी परन्तु नवाब वज़ीरूदौला बहादुर के अन्तःपुर विश्राम कक्ष में अर्ध रात्री पश्चात् अन्धकार कर दिया जाता था। और किसी भी पुरुष अथवा महिला की जानकारी में नवाब की धार्मिक गतिविधियाँ नहीं आ सकती थीं और न गृह दायित्व की किसी को जानकारी हो पाती थी। यहाँ तक कि आप की बेगमात (रानियों) ने भी आपको निर्वस्त्र कभी न देखा था। वार्तालाप में प्रत्येक वाक्य पर 'अल्लाह की नियाज़' से कहने की आदत थी।

नवाब वज़ीरूदौला का हृदय अच्छे कर्मों का प्रदर्शक था। उनके हृदय दया, क्षमा, प्रेम, सद्-व्यवहार एवम् सदाचार ऐसे गुणों से भरा पड़ा था। गम्भीरता, शराफत, आत्म-सम्मान, दान, सभ्यता एवम् सदाचार, शानो-शौकत, न्यायप्रियता आदि आपके वे गुण थे जिनकी चमक-दमक ने हिन्दुस्तान के समकालीन रईसों में आपको विशेष व्यक्ति बना दिया था। इस्लाम धर्म के उपासक तथा हज़रत मोहम्मद साहिब (स. अ. व) के आदर्शों

वे अनुसरणकर्ता थे। अल्लाह के साथ दूसरे को सम्मिलित करना (शिर्क), न धर्म में नयी बातें निकालना (बिदअत) और गैर इस्लामी रस्मों रिवाज का नामो निशान तक न था।

यही वे गुण थे जिनको और मिर्ज़ा असदुल्लाह खाँ 'ग़ालिब' देहलवी ने एक काव्य प्रशंसा पत्र (मदहियया कसीदा) इस प्रकार सम्बोधित किया है जो फारसी भाषा में है, वह और उसका हिन्दी में अनुवाद निम्न प्रकार है—

حقا کہ زنام تو عیان است کہ در شرع فرزانہ وزیری شہ بطحی و حرم را

फारसी हक्का कि ज़-नामे तू अयान् अस्त कि दर शरआ,

फरज़ाना वज़ीरी शहे बतहआ व हरम रा॥

अनुवाद तेरा नाम से प्रकट है और यह तो शरीअत की इस्तलाह है तू

बुद्धिमान मंत्री है मक्का और मदीने के बादशाह का।

इसकी वज़ीरी या अमीरिया शान के दरबार के नमूने पर इस्लामी धर्म के आदेशों (शरआ) की अवहेलना को दृष्टिगत रखते हुए मुसाज़ज़न [illegible] व्यवस्थित किया गया था। कारण यह था कि नवाब वज़ीरुद्दौला अपने उत्तराधिकारी काल में लगभग दो वर्ष तक देहली में एक विद्यार्थी की हैसियत से रहे थे और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब मोहम्मद साहिब के आदर्शों के विद्वान (मोहद्दिस) देहलवी से शिक्षा ग्रहण की थी। सैयद अहमद साहिब शहीद अलैहिर्रहमत से बैअत अर्थात उनके आदर्शों को स्वीकार [illegible] धार्मिक ज्ञान अर्जित किए हुए थे। फिर सिंहासन ग्रहण के समय राज्य [illegible] बहादुर शाह 'ज़फ़र' अन्तिम मुग़ल शासक से [illegible] बहादुर की उपाधि प्राप्त थी। मिज़ाज में साहिबज़ादगी के दौर में आपका निकाह एक गैर मुस्लिम परिवार की युवती से हो गया था जिनसे साहिबज़ादा मोहम्मद अली खाँ थे और वह प्रारम्भ में उत्तराधिकारी न थे।

हाफिज़ नवाब वज़ीरुद्दौलाकी सन्तान की वंशावली

मोहम्मद वज़ीर खाँ

1. साहिबज़ादा [illegible] मोहम्मद खाँ [illegible]
2. [illegible] मोहम्मद खाँ [illegible]
3. मोहम्मद नज़ीर खाँ
4. मोहम्मद अली खाँ ([illegible] से मुस्लिम बेगम से)

(अ) अब्दुल रहमान खाँ

(ब) उबेदुल्लाह खाँ

(स) अब्दुल्ला खाँ

नवाब वज़ीरुद्दौला बहादुर के काल के प्रसिद्ध व्यक्तित्त्व

[illegible]

मौलाना हकीम [illegible] हसन अली साहिब [illegible]।

[illegible]

[1] दाश्ता।

रामपुर से टोंक आ गए थे। यहाँ नवाब ने आप की विद्वता व शैक्षणिक दक्षता से प्रभावित होकर आप को अत्यधिक आदर तथा सम्मान दिया और रियासत का प्रबन्धक (मदारूलमहाम) और विशेष सलाहकार बना लिया। आपको अपने बुजुर्गों से जो सुना वह विद्या (मन्कूला इल्म) तथा बुद्धि पर आधारित विद्या (गैर मन्कूला) में अत्यधिक पहुंच थी और अरबी व फारसी दोनों भाषाओं पर दक्षता थी (टोंक के विख्यात हकीम, इतिहासकार तथा फारसी शायर, सैयद हकीम सईद मियाँ आपके भतीजे थे।)

हकीम दाईम अली साहिब।

बिहार से आकर नवाब के तबीबे खास (विशेष वैद्य) और शाही हकीम (शाही चिकित्सक) बनाए गए। आपको तिब विद्या में सम्पूर्ण दक्षता प्राप्त होने के साथ-साथ अरबी फारसी और उर्दू की विद्याओं अर्थात् उलूमें शरिक़यआ में भी पूर्ण दक्षता प्राप्त थी। विशेषत. दर्शन शास्त्र में आपकी ख्याति सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में फैली हुई थी। इन हकीम साहिब के ही साहिबज़ादे थे, जो अपने समय में विद्वान हकीम बरकात अहमद साहिब के नाम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हुए।

मौलवी अब्दुल मजीद साहिब जिनका उप नाम नोशेमियाँ प्रसिद्ध है।

नोशे-मियाँ का पुल और नोशे-मियाँ की हवेली आज भी मौजूद है। आप भावलपुर के पठानों में अत्यधिक प्रसिद्ध और गौरवमय स्थान रखते थे। परन्तु टोंक में धार्मिक विद्या प्रभाव, महत्त्व तथा विकास के विषय में सुनकर टोंक आ गए थे और फिर यहीं पर स्थायी रूप से आबाद हो गए थे। पूर्वी विद्याओं अर्थात उलूमे शर्क़िया के आश्चर्यजनक विद्वान और अति उत्तम सुलेखक अर्थात ख़त्तात भी थे। आपकी रचनाए तथा इल्मी कारनामें अब भी टोंक और अन्य स्थानों में आदर और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। सुलेखन में वह दक्ष थे और वह ख़त[1] और स्याही में स्याही मिला देते थे। बहुत से ख़तों को नई नई तरकीबों से लिखने के जनक थे। इन ही कलात्मक विशेषताओं का आदर करते हुए नवाब ने अपनी एक सुपुत्री से आपका विवाह कर दिया था फलस्वरूप शाही महलों में आपका स्थान और भी बढ़ गया था। टोंक में आपने शान्तिपूर्ण विश्राम पश्चात् हज्ज का फर्ज़ अदा किया और फिर मक्का मोअज़्ज़मा और मदिना मुनव्वरा में हदीस की शिक्षा ग्रहण की तथा प्रमाण पत्र प्राप्त किया। मक्के मोअज़्ज़मा से आप एक पौधा खजूर का लाए और उसे अपने घर टोंक में बोया और वह बड़ा हो गया। इसी कारण आपकी हवेली खजूर वाली हवेली के नाम से जानी जाती है।

---

[1] अक्षरों की विशेष बनावट।

साहिबज़ादा नवाब अब्दुल करीम खाँ।

नवाब वज़ीरुद्दौला के सौतेले भ्राता थे और और मियां मुनव्वर मोहम्मद खाँ उर्फ मियां मुन्नू के (जो कि नवाब मोहम्मद अमीर खाँ के साले थे) दामाद थे। मियां मुन्नू ने छबड़े के दुर्ग में बैठकर नवाब वज़ीरुद्दौला के विरुद्ध जो विद्रोह किया था, और जिसमें नवाब अब्दुल करीम खाँ का सहयोग भी सम्मिलित था इस कारण अंग्रेज़ों ने मियां मुनव्वर को सिरोंज के स्व अधिकार (मुख्तारी) से अपदस्थ कर दिया था और नवाब अब्दुल करीम खाँ को नज़रबन्द करके अजमेर में बसाया। वहीं आपका सम्पर्क मीर "ममनू" से भी हुआ। आप स्वयं भी कवि थे और शौक[1] तख़ल्लुस अर्थात् कविनाम धारण करते थे और मीर "ममनू" का दीवान साहिबज़ादा के पास उनके पुस्तकालय में उपलब्ध हुआ था, जो अब तक सुरक्षित है।

नवाब फारसी और उर्दू के उच्च कोटि के अदीब (साहित्यकार) थे और बहुत से कवियों साहित्यकारों तथा तलवार के धनी लोगों को लाभान्वित करते थे। आपका देहान्त अजमेर ही में हुआ और सम्भवतः वहीं कब्र भी है।

मौलवी सिराजुद्दौला सरताज अहमद।

नवाब वज़ीरुद्दौला के दूसरे धार्मिक गुरु (पीर) थे। पहले पीर शाह सैयद अहमद बरेलवी थे परन्तु उनके सीमा (सरहद) पर सिक्खों के मुकाबले में शहीद हो जाने पर नवाब ने मौलवी सिराज अहमद साहिब को अपना आध्यात्मिक अर्थात रूहानी गुरु बना लिया था और सिराजुद्दौला के खिताब से सम्मानित किया था। नवाब प्रतिदिन अपने पीर के सलाम को उनके निवास स्थान पर स्वयं जाते थे और जिस दिन किसी कारणवश न जा सकते थे उस दिन भी अपने पुत्र को नज़र के रूप में पहुंचाते थे। परन्तु इस श्रद्धा प्रेम सेवा के बावजूद मौलवी सिराज अहमद ने अपने शुभचिन्तक और संरक्षक को अन्त के रोग में विष दे दिया, तब ही उनको नगर से निष्कासित कर दिया गया और उनकी हवेली साहिबज़ादा अहमद खाँ को दे दी गई। साहिबज़ादा महमूद खाँ नवाब की एक राजपूत रानी के सुपुत्र थे। उनके सुपुत्र हनीफ खाँ थे, जो आगे की पीढ़ी में नवाब मोहम्मद इब्राहीम अली खाँ के अत्यन्त प्रभावशाली सलाहकार थे। उनके भी दो भ्राता और थे (साहिबज़ादा कल्लू मियाँ और साहिबज़ादा मौलवी अहमद सईद खाँ)

दीवान शमसुद्दीन साहिब।

मौलवी थे और इनका घर मस्जिद काफला के सामने वाले बड़े दरवाज़े के सामने है। आप टोंक के मुतबहर आलिम (विलक्षण विद्वान) बुद्धिमान, गम्भीर, व्यवस्थापक और रचनाकार थे। स्वयं के दीवान-ए-रियासत होने के काल में आपने अपनी कुशलता से प्रबन्ध व्यवस्था में चार चान्द लगा दिए थे।

---

[1] इनका काव्य नाम शौक नहीं शर्क है जो संस्थान में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रंथ "दीवाने-शर्क" शायर अब्दुल करीम 'शर्क' में प्रमाणित है (एक्सेशन नं. टोंक 3009)।

लाला निरंजन लाल।

शाहजहाँ आबाद के रहने वाले थे। फ़ारसी साहित्य में उनका अच्छा स्थान था और पत्र-लेखन कला अर्थात् फन्ने खुतूत-नवीसी में दक्ष थे। नवाब मोहम्मद अमीर खाँ की अंग्रेज़ों से सन्धि के समय दरमियानी वार्तालाप में लालाजी ही ने प्रतिनिधि के कर्त्तव्य अत्यन्त सद्भाव सहित निर्वाह किए थे और प्रपत्र अर्थात दस्तावेज़ पर नवाब की ओर से लाला जी ही ने नवाब की मुहर के साथ अपने हस्ताक्षर किए थे। नवाब मोहम्मद अमीर खाँ के पश्चात् वज़ीरी शासन काल में आप रियासत से सम्बद्ध रहे। रियासत के सुप्रबन्ध में आप की सेवाएँ सराहनीय हैं।

मौलवी नजफ अली साहिब[1]।

अरबी, फ़ारसी और उर्दू के मुतावहर (विलक्षण) विद्वान थे और इब्रानी व पहलवी भाषाओं के भी विद्वान थे। नवाब मोहम्मद अली खाँ के साथ जाकर वहाँ भी लेखन एवम् सकलन कार्य में व्यस्त रहे और अधिक आयु तक वहीं रहे। नवाब के पुस्तकालय को भी सम्भालते रहे। उनकी कुल रचनाएँ एवम् अनुवाद सौ से अधिक बताए जाते हैं जिनमें शराह-मक़ामाते हरीरी, फतूहाते ईराक़, फतूहाते अजम इत्यादि अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। आप इब्राहीमी शासनकाल तक भी रहे और नवाब इब्राहीम अली खाँ साहिब की इच्छा पर बनारस से टोंक पधारे और यहीं पर आपका देहान्त हुआ। रियासत के प्रबन्ध में भी आपकी सेवाओं की सूचना पाई जाती है। इन सेवाओं के बदले में नवाब टोंक ने आपको "ताजुल-उलोमा"[2] और "कुल्जुमुल उलूम" के ख़िताबात और इनाम भी आपको प्रदान किए थे।

इन प्रसिद्ध व्यक्तियों के अतिरिक्त इसी काल में और भी प्रसिद्ध लेखक एवम् तलवार के धनी हुए हैं। सैयद अफज़ल हुसैन साहिब खैराबादी जो विलक्षण विद्वान थे, के नाम का उदाहरण दिया जा सकता है। आपकी भेंट नवाब वज़ीरूद्दौला से दिल्ली में हुई थी और नवाब की ओर से आप टोंक के राजदूत भी रहे। मौलवी वली मोहम्मद फुलत्ती, हाफिज़ वजीह-उद्दीन सिद्दीकी, मौलवी बशीरूद्दीन शेरकोटि, सैयद हमीदुद्दीन जुनैदी, मौलाना इरशाद हुसैन खैराबादी, मौलवी इलाही बख़्श "नाज़िश", (अमीर देहलवी के शिष्य) और अन्य अनेक विद्वान दरबारे वजीरी के उज्जवल तारे थे।

---

[1] सात भाषाओं के ज्ञाता अर्थात हफ़्त क़लम। लक़ब मोहक्क़ेकुल उलौमा बहरूल उलूम अल्लामा नजफ अली झझरवी। मोती बाग में क़ब्रिस्तान के मुख्य द्वार से घुसने पर सीधे चलकर एक बड़ा मज़ार आपका है

[2] विद्वानों में श्रेष्ठ।

यमीनुद्दौला वज़ीरूलमुल्क नवाब मोहम्मद अली खाँ बहादुर सोलते जंग

(1865 ई. से 1867 ई. तक)

नवाब वज़ीरूद्दौला के जीवन काल में उनके तीन पुत्र—साहिबज़ादा फैज़ मोहम्मद खां, नसीर मोहम्मद खां और मोहम्मद नज़ीर खां के परलोक सिधार जाने पर अंग्रेज़ों ने साहिबज़ादा मोहम्मद अली खां को उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इसके कुछ समय पश्चात् ही नवाब वज़ीरूद्दौला भी अल्प अवधि तक रोग ग्रस्त रहकर परलोक सिधार गए। उनकी समाधि मोती बाग के क़ब्रस्तान में कच्ची हालत में अब भी मौजूद है

नवाब मोहम्मद अली खां का सिंहासनारोहण जनवरी, 1865 ई में हुआ था परन्तु 20 दिसम्बर 1867 ई को ही सिंहासनच्युत कर दिए गए और शेष आयु अर्थात 28 अगस्त सन 1895 ई तक बनारस में नज़रबन्द रईस के रूप में व्यतीत की। इस समस्त अवधि में आपकी व्यस्तता धर्म विद्या के अध्ययन एवम् विकास में रही। आपका पुस्तकालय प्रसिद्ध था। आपकी बनवाई हुई नवाब की मस्जिद और नवाब की अरबी पाठशाला अभी भी देखी जा सकती है।

रियासत टोंक में सिंहासनरूढ़ होने के पश्चात् आपमें राज्य के विकास की भावना जागृत हुई। फलस्वरूप लावा के ठाकुरों द्वारा विद्रोही गतिविधियों को अपनाने के कारण, उन्हें समझा-बुझाकर टोंक बुलाया गया परन्तु मामलात उनकी इच्छा के अनुसार तय न होने पर, वे बिगड़ कर खड़े हो गए। इस पर सैयद सरवर शाह मदारूलमहाम रियासत टोंक ने जोश में आकर नवाब की बिना अनुमति विलायती पठानों को उन पर छोड़ दिया। और देखते-देखते तलवारों के चमकने पर लाशों के ढेर लग गए। यह घटना मोहल्ला रजबन की एक पक्की हवेली में हुई थी जहा लावे के वे ठाकुर ठहराए गए थे। इस हवेली में तलवारों से कटाव के चिह्न पत्थर की महराबों पर अब भी देखे जा सकते हैं। इस हवेली में अब साहिबज़ादा इकरामुद्दीन खा साहिब रहते हैं।

अंग्रेज़ों ने इस हृदय विदारक घटना को नवाब का दायित्व ही नहीं वरन् उनकी सहमति मान कर 20 दिसम्बर सन् 1867 ई को नवाब को सिंहासनच्युत करके उनके बडे साहिबज़ादा हाफिज़ मोहम्मद इब्राहीम अली खा को सिंहासन पर बैठाया। तभी से नवाब नज़रबन्दी के रूप में 28 वर्ष तक बनारस में रहे और 28 अगस्त सन् 1895 ई में परलोक सिधार गए और वहीं दफन किए गए। इस शासनकाल के सुधारों के क्रम में पहला सुधार यह था कि कार्यालय में फारसी के स्थान पर उर्दू का प्रचलन हुआ। दूसरा सुधार स्टाम्प का प्रचलन होना था। इससे पूर्व तमाम आवेदन पत्र सादे कागज़ पर लिखे जाते थे। इस प्रथा से रियासत की आय में वृद्धि हुई और सिरोंज की टकसाल से

यमीनुद्दौला वज़ीरूलमुल्क नवाब
मोहम्मद अली ख़ाँ बहादुर सोलते जंग
(1865 ई. से 1867 ई. तक)

[illegible] इनके पुत्र [illegible] अथवा [illegible]

शजराह नवाब हाफ़िज़ मोहम्मद अली खाँ बहादुर

[illegible]

(अ) [illegible] खाँ, (ब) [illegible]मद खाँ

(स) मोहम्मद रफ़ीक़ खाँ (द) मोहम्मद सिद्दीक़ खाँ

नोट नं० १ [illegible] थीं। इनकी माता श्री की वह हवेली है जहाँ अब निज़ाम [illegible] है और जिसके [illegible] की हाट भरती है।[1] (आज कल यह हाट गांधी पार्क [illegible] के समीप भरता है।)

नोट नं० २ [illegible] था।

नोट नं० ३ [illegible] धर्म पत्नी थीं। यह वह श्रीमति हैं जिन्होंने मक्का और मदीना में [illegible] था अर्थात [illegible] की जामा मस्जिद के निर्माण में सहयोग भी दिया था। [illegible] के [illegible] कराई। और टोंक में रेल लाने के प्रारम्भिक विचार की यही जनक थीं। इनका शुभ नाम लाडली बेगम था।

[1] आज कल यह हाट गांधी पार्क [illegible] के समीप भरता है

[2] खैरात करने वाला—दानी।

नवाब यमीनुद्दौला बहादुर के काल के प्रसिद्ध व्यक्तित्त्व

नवाब मोहम्मद अली खा स्वयं उच्च कोटि के विद्वान विद्वानपोषक और विभिन्न विशेषताओं से परिपूर्ण व्यक्ति थे। यद्यपि उनका नवाबी काल अत्यन्त संक्षिप्त रहा परन्तु विद्या तथा साहित्य के सम्बन्ध में अत्यन्त भव्य एवम प्रशंसनीय है, क्योंकि आपने अत्यन्त उत्तम धार्मिक पुस्तकें उपलब्ध कराई और विभिन्न कलाओं में दक्ष व्यक्तियों और प्रसिद्ध विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों को हिन्दुस्तान के चारों ओर से बुलाकर टोंक में सम्मान दिया। इनको, टोंक से स्वयं के निष्कासन पश्चात्, अपने साथ बनारस ले गए।

आपके काल के प्रसिद्ध व्यक्तियों में सर्वप्रथम दीवान शमसुद्दीन साहिब और तत्पश्चात् मौलाना नजफ अली साहिब थे। जिनका वर्णन नवाब वज़ीरूद्दौला के प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ वर्णित किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त उस्ताद ज़हीर देहलवी, असद लखनवी, मौलाना सिराजुर्रहमान उर्फ नोशे मियां, खिस्सल खैराबादी अनवर साहिब देहलवी और सैयद अहमद अली साहिब "शीमाब" है

दीवान शमसुद्दीन साहिब।

एक बुद्धिमान, प्रबन्धक, बुद्धिजीवी और रचनाकार विद्वान थे। एक ओर उलूमे शर्किया अर्थात् अरबी, फारसी और उर्दू के विद्वान थे तो दूसरी ओर सुप्रबन्ध व राजनीति के क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं की पूर्णत जानकारी रखते थे आपमें सुप्रबन्धक की विशेषताएं कूट-कूटकर भरी हुई थीं इन ही विशेषताओं के कारण आप रियासत टोंक के प्रबन्धक अर्थात मदारूलमहाम थे। आप तीन नवाबों के शासनकाल में इसी पद पर विराजमान रहे। आप वज़ीरी शासनकाल के अन्तिम दौर में इस पद पर नियुक्त हुए थे और इब्राहीमी शासनकाल में परलोक सिधार गये। आपको रियासतो के कामकाज से जब भी समय मिलता तब पुस्तको के अध्ययन और पुस्तकों की रचना या पुस्तकों के संकलन में अपना मूल्यवान समय व्यतीत करते थे। आपने अपना सम्पूर्ण पुस्तकालय का जो लगभग बीस हजार

पुस्तकों पर आधारित था, अध्ययन कर सका था प्रमाणस्वरूप इनकी सभी किताबों पर दीवान साहिब के लिखित नोट अर्थात नोटबुक्स मौजूद हैं आपका मकान दीवान शमसुद्दीन साहिब के घर के दरवाजे के बाईं ओर स्थित था आपके [illegible] काल मोहम्मदी कल्ल और इब्राहीमी कल्ल अत्यन्त बुद्धिमान और प्रशंसनीय शागिर्द रहे आपके समय के मौखिक और लिखित प्रश्न अब तक टोंक की महत्वपूर्ण पुस्तकों पर अंकित हैं आप सम्भवतः जयपुर के मोहल्ला चिमनजयान के निवासी थे परन्तु टोंक आकर रियासत टोंक के नमक हलाल निवासियों की श्रेणी में सम्मिलित हुए और अपना सम्पूर्ण जीवन टोंक की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था और यहीं आपका देहान्त हुआ तथा यहीं पर आपको दफन किया गया।

मौलवी सिराजुर्रहमान साहिब।

आप का वर्णन पूर्व में विस्तार से आ चुका है परन्तु अब शेष वृत्तान्त यहाँ अंकित किया जाता है

जामा मस्जिद काफला टोंक आपही के शुभ प्रयास से निर्मित हुई और इसकी बारादरी में नासिरया पाठशाला की स्थापना आपने ही की थी जिसके सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) भी आप ही थे इस तरह सैकड़ों विद्वान [illegible] आपकी संरक्षता में तैयार हो सके आप न केवल अरबी के उच्च कोटि के विद्वान थे वरन् फारसी के भी विद्वान थे। उर्दू साहित्य में आपको पूर्ण दक्षता थी पठन पाठन में आपका अनूठा स्थान था। आपके देहान्त पश्चात् जो दौर प्रारम्भ हुआ उसमें मौलाना, मौलवी, हाफिज, कारी, हकीम व सूफी मोहम्मद अली खाँ साहिब और मौलवी फाज़िल व गौरवमय शिष्य अर्थात् अल्लामा हकीम बरकात अहमद साहिब भी इसके सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) जीवन पर्यन्त रहे लेखक को मौलाना साहिब अत्यन्त आदर व सम्मान देते थे सन 1961 ई में मेरे[1] सेवा निवृत्त होने पश्चात ही मे उनकी मरदम शनास नजर (आदमी को पहचानने की दृष्टि), मुझ पर पड़ी और लम्बे समय तक विभिन्न प्रभाव डालकर नासिरया पाठशाला एवम् मस्जिद काफला की प्रबन्ध कमेटी जिसके वह अध्यक्ष थे मुझे अवैतनिक सचिव पद के कर्तव्य निभाने की ज़िम्मेदारी सौंपी। इस प्रकार सन् 1962 ई से अब तक मैं नासिरया पाठशाला के सचिव पद के कर्तव्य आज तक निभा रहा हूं। आपका 84 वर्ष की आयु में हृदय

---

[1] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एजाज़ खाँ।

गति बढ़ने (इख़्तिलाजे क़ल्ब) रोग से देहान्त हो गया। धर्म गुरु मौलाना ... साहिब (र. अ.) की समाधि, स्थित बहीर, में उनके पैरों की दिशा में आपको दफ़न किया गया।

मौलवी मोहम्मद हसन साहिब।

1260 हिजरी में टोंक आकर आबाद हुए, आपकी नियुक्ति मुफ़्ती के पद पर हुई। आप अरबी फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता थे। आपने अरबी तालीम पुरानी टोंक के प्रसिद्ध विद्वान मौलवी इमामुद्दीन साहिब टोंकी से ग्रहण की थी। नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ साहिब (रह.) के सफ़र के दिनों में आप उनके साथ बनारस भी रहे। उनके देहान्त पश्चात रियासत से आपको पैंशन भी जारी की गई।

मौलवी सैयद मोहम्मद अली साहिब

उपनाम शब्बीर मियाँ जो सैयद अहमद साहिब शहीद (र. अ.) की बहन के पुत्र थे और आध्यात्मिक ज्ञान तसव्वुफ़ में इजाज़त (दीक्षा प्रमाण) से सुशोभित थे। आपने मामा साहिब (रह.) के धर्म संघर्ष आन्दोलन अर्थात तहरीक जिहाद को संक्षिप्त "मख़ज़ने अहमदी" के नाम से पुस्तक के रूप में लिखा। जो मुस्लिम स्वतन्त्रता आन्दोलन में मील के पत्थर का स्थान रखती है। आप नवाब इब्राहीम अली ख़ाँ के गुरु भी थे। इसलिए रायबरेली (उत्तर प्रदेश) से टोंक आकर आबाद हुए। मौहल्ला काफ़िला शाहान के नाम से बसाया। टोंक ही में सन 1287 हि. में देहान्त हुआ। आपकी मृत्यु की तिथि का मादा यह है

بفردوس رفت آں محبِ محمدؐ

"बफ़िरदौस रफ़त आं मोहिब्बे मोहम्मद"

अर्थ— *मोहम्मद साहिब का प्रेमी स्वर्ग में गया।*

आपकी दूसरी रचना "[illegible] मन्ज़ूम" है। यह पुस्तक शाह वलीउल्लाह साहिब देहलवी की रचना जो फ़ारसी गद्य में है, आपने फ़ारसी में मन्ज़ूम किया है अर्थात् पद्य में अनुवाद किया है।

हकीम अब्दुल अली साहिब टोंकी।

एक विद्वान और ज्ञानी होने के अतिरिक्त उच्च कोटि के हकीम भी थे। इसके अतिरिक्त नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ के गुरु होने का सौभाग्य भी इन्हें प्राप्त था। इसलिए नवाब की कृपा से भी लाभान्वित होते रहे।

मौलवी इमामुद्दीन साहिब टोंकी

आप का टोंक के विद्वानों में उच्च कोटि की श्रेणी में स्थान था। आप पच कुईया दरवाज़े के समीप रहते थे। वहां आपकी मस्जिद और पाठशाला अब भी स्थित है। आप इतने बड़े विद्वान थे कि दूर दूर से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आपके पास आते थे। क्योंकि आप धर्म विद्या अर्थात् इल्मे फिक के विशेषज्ञ थे। आपके धार्मिक निर्णय अर्थात फतवे, मक्का तथा मदीना और समस्त इसलामी केन्द्रों में जाते थे एवम् प्रसिद्धि पाते थे।

मौलवी सुल्तान मोहम्मद खां

आप का काव्य नाम अर्थात् तखल्लुस 'गिरामी' था। उलूमे शर्किया से पूरी तरह लाभान्वित थे इसीलिए नवाब मोहम्मद अली खां के साथ बनारस जाकर उपरोक्त विद्या के विकास में सराहनीय सेवाएं अर्पित की थी। आप देहली के वासी थे परन्तु टोंक आ गए थे और फिर नवाब के साथ बनारस चले गए थे। [illegible] आपने "सुल्तानुश्शुअरा" का खिताब पाया।

मौलवी अब्दुल करीम साहिब।

बनारस में नवाब मोहम्मद अली खां के शासनकाल के महत्वपूर्ण लेखकों में से थे। फ़तूह-उल-इस्लाम संग्रह के लेखकों में से आप भी एक हैं। आप चूँकि उच्च कोटि के विद्वान समझे जाते थे इसी कारण नवाब आपका बहुत आदर व सम्मान करते थे।

मौलवी नूरूल हक़ साहिब।

मौलवी खैरुद्दीन साहब शेरकोट के सुपुत्र थे। फतूह-उल-इस्लाम के एक भाग के लेखक भी हैं। विद्वान और लेखक होने के अतिरिक्त उच्च कोटि के कवि भी थे। फारसी साहित्य में आपका ज्ञानकोश प्रशंसनीय सीमा को स्पर्श करता था।

इन प्रसिद्ध व्यक्तियों के अतिरिक्त साहबज़ादा वज़ीर मोहम्मद खां, साहबज़ादा अब्दुल्लाह खां, साहबज़ादा उबैदुल्ला खां, साहबज़ादा अहमद खां, साहबज़ादा महमूद खां, मौलवी अब्दुल हई साहब, मौलवी सय्यद अहमद साहब, कारी अब्दुर्रहमान साहब पानीपत भी नवाब मोहम्मद अली खां के शासनकाल के प्रसिद्ध व्यक्तियों की श्रेणी में आते हैं

अमीनुद्दौला, वज़ीरूलमुल्क, नवाब हाफ़िज इब्राहीम अली खां, बाहदुर सोलते जंग, जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. (1867–1930 ई. तक)

जन्मतिथि 22 ज़िलहिज्ज सन् 1265 हि., जिसका माद्दाए तारीख़ "मुबारक बख़्त" है। नवाब अमीनुद्दौला के सौभाग्यशाली एवम् आदरणीय होने का प्रमाण इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि उन्हें वज़ीरूद्दौला बहादुर ने स्वयं के करकमलों से सिंहासन आसीन फ़रमाया और मुस्कराते हुए स्वर अथवा लहजे में यह कहते हुए तोपों की सलामी का आदेश दिया—

که شهباز من صید دام تو شد
مرا بود دولت بنام تو شد

कि शहबाज़ मन सैद दाम तू शुद

मुरा बुवद दौलत बनाम तू शुद।

अर्थ— मेरा शहबाज़ तेरे जाल में शिकार हो गया,

वह हुकूमत मेरी थी परन्तु अब तेरे नाम हो गई।।

चूंकि आपकी आयु बीस वर्ष की थी इसलिए राज्य प्रबन्ध के कार्य एक कौंसिल आलिया के द्वारा मि. ब्लेयर बहादुर पॉलिटिकल-ऐजेन्ट, देवली के नियन्त्रण में चलाए जाते रहे. कौंसिल आलिया के सदस्यों के नाम निम्नांकित है—

प्रथम संवैधानिक काल के सदस्य

(1) नवाब अमीरूद्दौला के सुपुत्र साहिबज़ादा हाफिज़ मोहम्मद इबादुल्ला खां बहादुर विशेष सदस्य, उनका एक किस्सा अब तक जनमानस की जुबान पर है वह यह है कि—साहिबज़ादा नवाब को पेशी करने जब जाते थे तो एक सोने का हार गले में डाल देते थे और वापिस आने पर उतार कर उसे सेवक को दे देते थे। एक बार अत्यधिक गर्मी के कारण यह करना चूक गए और हार को उतारकर अपने कमरे की खूंटी पर टांक दिया, और सो गए। अभी चूंकि भोजन नहीं किया था इसलिए गहरी निद्रा न होने पाई थी। इसी मध्य में विशेष सेवक ने कमरे में आकर सोने का हार लटका देखा तो उतार कर उसने अपने पास छिपा लिया। परन्तु उसकी यह कार्यवाही साहिबज़ादा ने स्वयं देखकर भी जानबूझ कर चुप्पी साध ली और जाग जाने पर हार तलाश कराया।

अमीनुद्दौला, वज़ीरूलमुल्क, नवाब हाफ़िज इब्राहीम अली खां, बाहदुर सोलते जंग, जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. (1867–1930 ई. तक)

जब कहीं न मिला और उस सेवक ने भी उसके मिलने से इन्कार किया तब बड़प्पन और अनदेखा गुणयुक्त रईस साहिबज़ादे ने यह कहकर मामला ठण्डा किया कि जिसने देख लिया है, वह कहेगा नहीं और जिसने लिया है वह देगा नहीं

(2) इफ़्तेखारूलउमरा फखरूल मुल्क साहिबज़ादा सर मोहम्मद अब्दुल्ला खां बहादुर फ़िरोज़जंग अफ़सर माल का ग्रह[1] कभी टोंक में अत्यन्त उच्चस्तर पर था। टोंक में दरबार हाई स्कूल उन्हीं की प्रेरणा पर प्रारम्भ हुआ, कारण कि यह स्वयं भी अंग्रेज़ी जानते थे और इसलिए इनके प्रभाव एवम् अधिकार बरतानिया अधिकारियों में बहुत बढ़े चढ़े थे। टोंक में फिरोज़बाग़ की गोल कोठी (राजकीय महाविद्यालय के समीप है) इन ही की बनवाई हुई थी, ताकि अपनी सभ्यता एवम् संस्कृति के अनुसार वह अफगान के कल्चर का काम दे सके। इनकी स्वयं की आवासी कोठियां दर्शन योग्य हैं। इनमें से एक में जनरल पोस्ट आफिस है और अन्यों में खादी भण्डार के कारखाने हैं। आप चूंकि वज़ीरूद्दौला की राजपूत रानी से थे इसलिए अन्य राजपूत रियासतों में भी आपका अत्यन्त सम्मान था और तत्कालीन नवाब के चाचा होने के कारणवश नवाब पर भी आपका अत्यधिक प्रभाव था। इस मान सम्मान का कारण स्वयं उनमें भी ज़माने को समझने, दूरदर्शी होने, [illegible] करने, न्याय प्रियता और धर्म पालना आदि ऐसी विशेषताएं थीं। आपके सुपुत्र दो भिन्न भिन्न बेगमों (पत्नियों) से थे। बड़े साहिबज़ादे अब्दुल अलीम खां थे जो मेयो कालेज अजमेर से शिक्षा ग्रहण किए हुए थे और दूसरी बेगम (पत्नी) से साहिबज़ादा अमानुल्ला खां साहब थे। इन्होंने भी मेयो कालेज से शिक्षा ग्रहण की थी। साहिबज़ादा अब्दुल अलीम खां साहब का देहान्त वृद्ध अवस्था में हुआ। इसके पश्चात ही आपके साहिबज़ादे मोहम्मद असगर खां साहब ने बावजूद इसके कि वह मेयो कालेज अजमेर से शिक्षा ग्रहण किए हुए थे ये दोनों कोठियां जनता के धनाढ्य लोगों को विक्रय कर डालीं।

[1] सितारा

(3) साहिबज़ादा नज़ीर मोहम्मद खां बहादुर, मोतमदुल्उमौरा मुन्तज़ेमुलमुल्क, न्याय अधिकारी थे।

(4) मदारुल्मुल्क मुन्शी सैयद जहूर अली खां साहिब ईटावी, कार्यालय कौंसिल आलिया में मुख्य लिपिक अथवा मीर मुंशी थे।

दो वर्ष पश्चात् जब नवाब अमीरुद्दौला बाहदुर कानूनी आयु को पहुंचे तब उन्हें शासकीय अधिकार प्राप्त हुए और साहिबज़ादा सर मोहम्मद उबैदुल्ला खां बहादुर को दस्तूर आलम अथवा रियासत का नाइब बनाया गया। अंग्रेज़ी काल की बहुत सी बातें प्रबन्ध व्यवस्था अन्तर्गत जन कल्याण हेतु प्रचलित की गई। उदाहरण स्वरूप पुलिस का प्रबन्ध उत्तम प्रकार से किया गया, परिणाम स्वरूप चोरों तथा लुटेरों की गतिविधियों अत्याचारों पर नियन्त्रण किए जा सका। चिकित्सालय और डाकखाने, अंग्रेज़ी पाठशालाएं प्रत्येक परगने और मुख्यालय (सदर) में खोले गए। नगरपालिकाएं भी स्थापित की गईं।

द्वितीय संवैधानिक काल के सदस्य

(1) अमीनुद्दौला वज़ीरुलमुल्क हिज़ हाइनेस नवाब सर मोहम्मद इब्राहीम अली खां बहादुर सौलतेजग, प्रेसिडेन्ट।

(2) इफ्तेखारूल उमौरा फख़रूलमुल्क साहिबज़ादा सर मोहम्मद उबैदुल्ला खां बहादुर, फिरोज़ जंग, वाईस प्रेसिडेन्ट।

परन्तु जब सन् 1906 ई में नाईब साहिब का देहान्त हो गया तो नजमुल उमौरा अहतेशाम-मुल-मुल्क साहिबज़ादा हाफ़िज मोहम्मद अब्दुल वहाब खां साहिब बहादुर, सफ़दर जंग, रियासत के नाईब बनाए गए। आप नवाब के सगे छोटे भाई थे।

(3) शमसुल-उमौरा उमदातुल मुल्क साहिबज़ादा अहमदयार खां बहादुर फताह-जंग, जनरल सेना व मंत्री सेना।

(4) खान् साहिब मोहम्मद नजफ खां साहिब पंजाबी जो अंग्रेज़ सरकार के सेवा निवृत न्यायधीश थे, जूडिशियल सदस्य बनाए गए। आप टोंक के न थे।

(5) बाबू विनायक राव राय बहादुर फिनानशियल (वित्तीय) सदस्य।

(6) खान् साहिब मिर्ज़ा हामिद अली खां देहलवी एतेमाद-जंग प्रतिनिधि या वकीले रियासत।

इस शासनकाल में न्यायिक प्रबन्ध पुलिस विभाग जिन्सी (माईंस) वन निर्माण और विशेष रूप से व्यापार लाभ अनुभाग में अन्य अनेक सुधार हुए फलस्वरूप अभिशंसनीय विकास हुआ और रियासत की आय में वृद्धि हुई। मतबअ-ए-मोहम्मदी (उर्दू, अंग्रेज़ी मुद्रणालय) भी इसी काल में स्थापित हुआ। इससे सरकारी गज़ट और सरकारी विज्ञापन के प्रकाशन में अत्यधिक सहायता मिलने लगी। काल निरन्तर विकासोन्मुख था। इसी सन्दर्भ में रियासत की प्रबन्ध व्यवस्था के सुधार के तरीका में और भी परिवर्तन चाहे जाने लगे जिसको अमीनुद्दौला बहादुर की जागरूकता और ज़माने की समझ ने पहचाना और सन १८९२ ई में कौंसिल आलिया का पुनर्गठन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार है—

(1) अफ़ज़लुलउमरा मुअतमदुलमुल्क साहिबज़ादा अब्दुर्रहीम खाँ साहिब मुज़फ़्फ़र जंग मेम्बर माल (आप भी नवाब के सगे भाई थे।

(2) मुमताज़ुलउमरा मोअज़्ज़मुलमुल्क साहिबज़ादा मोहम्मद सिद्दीक़ खाँ साहिब, दिलेर जंग होम (मेम्बर) आप नवाब के चाचा[1] थे

(3) मिर्ज़ा मोहम्मद अली खाँ साहिब बहादुर देहलवी, एतमाद जंग मेम्बर जुडिशियल, एवं

(4) राय बहादुर बाबू दामोदर राव मेम्बर फिनान्शियल (वित्त)

तीन वर्ष के पश्चात् फकीर सैयद इफ़्तेखारुद्दीन साहिब की सेवाएं पंजाब सरकार से डेपुटेशन पर प्राप्त करके उन्हें मेम्बर माल बनाया गया। फिर एक वर्ष पश्चात श्री फक़ीर साहिब को अंग्रेज़ सरकार की ओर से राजदूत नियुक्त करके काबुल भेज दिया गया तब ख़ान साहिब मेहबूब आलम खाँ साहिब पंजाबी को उनके स्थान पर चयनित किया गया। बाबू दामोदर राव के सेवा निवृत्त होने पर राय बहादुर मोती लाल पंजाबी मेम्बर फिनानशियल नियुक्त किए गए। सन् १९०४ ई में जब मेहबूब आलम खाँ अपनी मूल सेवा पर पंजाब वापस चले गए तो बाबू मोतीलाल जी को मेम्बर माल बना दिया गया। वित्त विभाग भी उन्हीं के पास रहा। इसी काल में कोषालय भवन निर्मित होकर उस पर सेना का पहरा नियुक्त किया गया। कोर्ट आफ वार्ड की स्थापना और मुद्रा

---

[1] साहिबज़ादा मोहम्मद सिद्दीक़ खाँ, नवाब इब्राहीम अली खाँ के चाचा नहीं वरन् भाई थे। इस तथ्य को पुस्तक के लेखक मोहम्मद एजाज़ खाँ ने मूल पुस्तक के पृष्ठ स ८७ पर स्वय लिखा है।

का प्रारम्भ भी इसी काल की यादगार है। जनता इस मुद्रा को कलदार रूपया कहती थी। पुलिस का सम्बन्ध निज़ामत से हटा लिया गया और सदर तथा परगनात का पुलिस फोर्स एक अधीक्षक आरक्षी के अधीन किया गया। इस पद पर सर्वप्रथम ख़ान साहिब मोहम्मद खां अजमेरी नियुक्त हुए और फिर सैयद जलालुद्दीन हैदर खां बहादुर जो यू पी सरकार के अत्यन्त प्रसिद्ध सेवा-निवृत्त अधीक्षक आरक्षी थे, नियुक्त किए गए। उनका देहान्त टोंक ही में हुआ। आपकी पक्की समाधि मय एक छतरी के कब्रस्तान पार नाले पर अब भी स्थित है। उनके पश्चात् ख़ान् बहादुर मुन्शी गुलाम क़ादिर खा और अनवारूल हक़ साहिब, वकील देवली क्रमश अधीक्षक आरक्षी नियुक्त हुए। तब से पुलिस का सम्बन्ध होम मेम्बरी से हो गया यद्यपि तत्पश्चात् अंग्रेज़ आई. जी पी आने लगे। पुलिस-विभाग जूडिशियल मेम्बरी के साथ कर दिया गया।

सुधार के चतुर्थ दौर में ख़ान बहादुर मीर सैयद हुसैन खां साहिब (अलीगढ़) मथरावली, एक्स्ट्रा-असिस्टेन्ट कमिश्नर, अजमेर की सेवा बरतानिया सरकार से, रियासत में स्थानान्तिरित करवा ली गई और उन्हें जूडिशियल मेम्बरी का पद दिया गया। मीर साहिब ने अपनी स्वयं की उच्च क़ानूनी क्षमता और अनुभव से रियासत को इस प्रकार लाभान्वित किया कि निम्नांकित क़ानूनों को अंग्रेज़ी से उर्दू में स्वयं अनुवाद करके प्रकाशित किया। उदाहरणस्वरूप, मियादे समाअत कानून (सुनवाई अवधि का कानून), क़ानून स्टाम्प, क़ानून रजिस्ट्री, क़ानून सर्टिफिकेट, क़ानून उत्तराधिकारी (जानशीनी), क़ानून पैशा हलफनामा (शपथ-पत्र) आदि का नाम लिया जा सकता है।

सैयद साहिब रमज़ानुल मुबारक में कुछ दिन रोग ग्रस्त होकर टोंक में ईदुल्फितर के दिन परलोक सिधार गए। समस्त टोंक वासियों को इसका दुख हुआ। उनकी शुभ चर्चा अब तक भी होती है। आधुनिक सुधारवादी दौर का श्री गणेश भी इसी दौर में हुआ। इसक प्रबन्धक एम. कहीन[1] साहिब थे। उनकी सेवा रियासत ने बरतानिया सरकार से प्राप्त की थी। बन्दोबस्त कार्य की समाप्ति पश्चात्, माल-विभाग के कार्यकर्ताओं अर्थात् अहलकारों के मार्ग दर्शन के लिए नियम पटवारियान और नियम गिरदावरान नामक दो पुस्तकें मि एम. कहीन साहिब ने दरबार की स्वीकृति से प्रकाशित कीं।

अमीनुद्दौला बहादुर ने पुलिस विभाग में और सुधार की आवश्यकता को महसूस करते हुए अपनी रियासत में एक आयरिश अंग्रेज़ मि हॉलेन्स को सेवा सन् 1915 ई में यू पी. सरकार से स्थानान्तिरित करवाई। उन्होंने पुलिस और जनता के उस समय के हालात का गहनता से अध्ययन किया और फिर पुलिस विभाग के

[1] सम्भवतः कीन है।

सगठन का काम प्रारम्भ किया पुलिस के वेतनों में दुगनी बढ़ोतरी की और कलदार सिक्का मिलने लगा जो नवाबशाही सिक्के से दो-तीन आने अधिक था इन्सपेक्टर जनरल का पद स्थापित किया गया और उन्होंने मेन्युल ऑफ पुलिस रियासत टोंक के नाम से एक बहुत ही लाभदायक पुस्तक सम्पादित की तथा इस रियासत ही के मुद्रणालय में मुद्रित करके प्रकाशित कराई। थानेदारों के आशार्थीयों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए रियासत के व्यय पर मुरादाबाद भेजा जाने लगा और इस प्रकार की अभिशसनीय कार-गुजारियों के पश्चात् मि हॉलेन्स सन् 1918 ई मे पदोन्नति पर यू पी वापस चले गए। उनके काल मे टोंक के पठानों के एक बड़े बहादुर खूंखार और क़ानून की अवहेलना करने वाले खान् साहिब अहमद सईद खा ने रियासत के रईस के आदेशों की अवहेलना की। तब उनको बन्दी बनाने के लिए बड़े बहादुर, शक्तिशाली और दायित्वों के प्रति सजग मि हॉलेन्स स्वय आगे बढ़े और पुलिस के एक दल को साथ लेकर उनके आवास गृह को जिसमें वह डटे हुए थे, जा घेरा प्रारम्भ में मिस्टर हॉलेन्स ने नीम के एक वृक्ष की आड लेकर उन्हें दरबार के अधीन रहने की प्रेरणा दी परन्तु खान् साहिब नहीं माने तब उनके और मिस्टर हॉलेन्स के मध्य बन्दूक की गोलिया चलने लगी। गोली चलाने का प्रारम्भ खान् साहिब की ओर से किया गया। सौभाग्यवश मिस्टर हॉलेन्स ने नीम के एक वृक्ष की आड लेकर स्वय को बचा लिया परन्तु इसके उत्तर में मिस्टर हॉलेन्स की गोली ने उनके एक साथी का काम तमाम कर दिया। कहा जाता है कि पुलिस ने उनको बन्दी बनाने से पहले उनके मेगाजीन (शस्त्र) में उनके किसी विश्वास पात्र मित्र के द्वारा खराब कारतूस पहले से रखवा दिये थे। खान् साहिब के फायर अप्रभावी होने लगे तब उन्होंने जान लिया कि भाग्य ने साथ छोड दिया है इसलिए अपनी बन्दूक हॉलेन्स साहिब के सामने के चौक में फैंक कर स्वय को बन्दी बनाए जाने हेतु पैश कर दिया।

हॉलेन्स साहिब ने उनकी वीरता और जातीय शौर्यता के प्रकाश में बिना हथकडी डाले उन्हें आवास-गृह से बाहर ले आए और बन्दीगृह मे बन्द कर दिया। तब उन पर विद्रोह का मुकदमा चलाया गया। जिसके निर्णय में उन्हें दस वर्ष कैद बा-मशक्कत का आदेश सुनाया जा कर उन्हें केन्द्रीय-जेल, अजमेर भेज दिया गया जहां उन्होंने अत्यन्त सदाचार से स्वयं का जीवन व्यतीत किया फलस्वरूप निर्धारित अवधि से पूर्व ही उन्हें मुक्त कर दिया गया। मुक्त हो जाने पर वह टोंक ही में आकर शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। परन्तु इस घटना से हॉलेन्स साहिब की शालीनता, शिष्टता और शौर्यता की धाक टोंक में बैठ गई। मुक्त हो जाने पश्चात् खान् साहिब को नवाब की ओर से क्षमा कर देने पश्चात् नवाब ने उनका निर्वाह भत्ता अथवा निर्वाह पेन्शन जारी कर दी।

इस काल में मिस्टर ईश्वरनय, यू. पी. के प्रसिद्ध सैशन जज को रियासत में जुडिशियल मेम्बरी के लिए बुलाया गया और कुछ अवधि पश्चात् उनके वापस चले जाने पर मिस्टर एस. टी. हालेन्स को जुडिशियल मेम्बर के पद पर बुलाया गया। उनकी सेवाएं पुनः यू. पी. सरकार से डेपुटेशन पर ली गयीं। नवम्बर 1930 ई. से अन्तिम मार्च सन् 19[illegible] ई. तक जुडिशियल मेम्बर के पद पर कार्य करते हुए उन्होंने एक जुडिशियल मैन्योल तैयार किया।

इसी [illegible] की जनता ने प्रथम बार खाद्यान्न की महंगाई के विषय में अपनी आवाज़ तत्कालीन शासन और उसके अधिकारी राय बहादुर मोती लाल जी पंजाबी की प्रबन्ध व्यवस्था के विरुद्ध उठाई। परन्तु जागरूक तथा स्थाई मानस रखने वाले रईस की अभिभावकीय [illegible] के मैदान को विद्रोह शान्त कर दिया गया। [illegible] को [illegible] नियुक्त कर दिया गया तथा विद्रोहियों के नेताओं [illegible] कर दिया गया। नव माल विभाग के लिए कप्तान डब्लू. [illegible] मेम्बरी के लिए हासिल की गई।

[illegible] (आबकुर स्थल) दहान पर [illegible] अमीरिया [illegible] से मुक्ति और इनके [illegible] मामलात के लिए पंचायत की स्थापना इसी शासन काल की यादगार है। [illegible] भवन वाईस प्रेसिडेन्ट की पहाड़ी कोठी और पहाड़िया [illegible] और [illegible] कौंसिल भी इसी काल की यादगार हैं। [illegible] गिरदावर, तहसीलदार एवम् अभिभावकों की परीक्षा का [illegible] भी इसी दौर में स्थापित हुआ। और जब साहिब अंग्रेज के [illegible] दौर के पश्चात् [illegible] साहिब मेम्बर माल बनाये गए और इनका दौर समाप्त होने के पश्चात् पुनः [illegible] मेम्बर माल एवम् वाईस प्रेसिडेन्ट के पद पर बुलाये गए। पुलिस विभाग में [illegible] साहिब के जुडिशियल मेम्बर हो जाने के पश्चात् [illegible] साहिब [illegible] इन्स्पेक्टर जनरल नियुक्त हुए और [illegible] साहिब के यू. पी. सरकार में [illegible] पर चले जाने पर कर्नल एन. डी. ओसवाल साहिब और फिर फ़रज़ुल्लिन साहिब जुडिशियल मेम्बर बनाये गए। माल विभाग में जब साहिब की सेवा समाप्त हो जाने पर सर मिचेल साहिब अंग्रेज़ को मेम्बर माल और वाईस प्रेसिडेन्ट के पद पर नियुक्त किया गया।

[illegible] के [illegible] बेगमात [illegible] में थे। इनमें से साहिबज़ादा अब्दुल [illegible] साहिब [illegible] और [illegible] बेगम [illegible] बेगम, साहिबा से होने के कारण रियासत के उत्तराधिकारी समझे जाने लगे।

उनके शिक्षा काल का कुछ भाग अलीगढ़ (यू. पी.) के मोहम्मडन कॉलेज में व्यतीत हुआ था, इसलिए वह अंग्रेज़ी ज्ञाता थे। क्रिकेट खेल के प्रति अत्यन्त रूचि रखते थे। उन्हीं की संगत में उनके छोटे भाई साहिबज़ादा हाफ़िज मौलवी सआदत अली खां साहिब को क्रिकेट का शौक़ हो गया था। वलीअहद[1] अर्थात साहिबज़ादा अब्दुल हफ़ीज खां साहिब हैज़े के रोग में ग्रस्त होकर रमज़ान शरीफ (उपवास मास—इसमें मुसलमान पूरे माह तक उपवास करते हैं) में लगभग पचपन वर्ष की आयु में अपने पिता नवाब साहिब के जीवन में ही, परलोक सिधार गए। उनकी कच्ची क़ब्र भी मोतीबाग के क़ब्रस्तान में है।

तिरेसठ साल की लम्बी आयु तक एक अभिशंसनीय बादशाहत का शासनकाल पूर्ण करके जून 1930 ई. में नवाब सर अमीनुद्दौला बहादुर रियासत टोंक कुछ समय बिमार रहकर 82 वर्ष की आयु में परलोक सिधार गए।

उक्त नवाब साहिब का समस्त दौर, ऐसे ज़माने में जबकि सल्तनते-बरतानियाँ की प्रसिद्धि का सूर्य उच्च स्तर (निसफुलनहार—वह फर्ज़ी ख़त जो कुतुबे-शुमाल से कुतुबे जुनूब तक खैंचे जाए या दोपहर का वक़्त) पर चमक रहा था, का रहा है और यही काल था कि रियासत की बागडोर अधिकतर समय में अंग्रेज़ सम्भालते रहे।

परन्तु दरबार टोंक के वरिष्ठ और प्रभावी व्यक्तियों और अत्यधिक अधिकार होने की वजह से अंग्रेज़ी सभ्यता को इस रियासत में उन्नति नहीं हो सकी। जिसका प्रभाव यह हुआ कि जनता अंग्रेजी शिक्षा की उच्च उपाधियों अर्थात वकालत, डाक्टरी, इन्जीनियरिंग आदि से वंचित रही। नगर टोंक में केवल एक हाई स्कूल एक लम्बे समय तक चलता रहा और इसमें भी केवल कला के विषय पढ़ाए जाते थे। प्रति वर्ष मेट्रिक उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों की संख्या दस या बारह से अधिक न रही और इस कमी पर किसी ने भी कोई ध्यान ख़लील काल तक नहीं दिया। यही नहीं वरन् नगर टोंक को और सिरोंज को रेल से कोसों मील पर पड़े रहने दिया गया और नए युग के प्रकाश के चिह्न दृष्टिगोचर न होने पाए। टेलिफोन सरकारी अधिकारियों के निवास पर अवश्य था परन्तु जनता की दुकानों और आवास गृहों पर न था। नल का पानी और विद्युत की रौशनी और पंखे भी न थे। मोटर की सवारी केवल रईस या बड़े अधिकारी या साहिबज़ादों तक ही सीमित थी। साईकिलों का प्रचलन सामान्य था। बैलगाड़िया जिन्हें टोंक की विशेष भाषा में तांगे कहा जाता था, नगर के अमीरों की विशेष सवारी थी. पर्दा करने वाली महिलाओं के लिए भी तांगा गाड़िया पर्दा पड़ी हुई किराए पर मिलती थीं।

---

[1] युवराज

इस्लामी धार्मिक शिक्षा, अरबी फारसी, हिफ़्ज़े कुरान व क़िरआत इस काल में उच्च शिखर पर थे जिसके कारण टोंक के विद्वान व हाफ़िज़ सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के नगरों पर छा गए थे।

नवाब अमीनुद्दौला बहादुर रबीउलअव्वल (अरबी साल का तीसरा महिना) को अत्यन्त श्रद्धापूर्वक, धूम-धाम के साथ मीलाद शरीफ़ का समारोह आयोजित करते थे। जिसके व्यय का वार्षिक बजट लगभग तीन लाख रुपया था। हुज़ुर सलल्लाहओ-अलेहे वसल्लम के जन्म की रात्री के अन्तिम भाग में एक सौ एक तोपें चलाई जाती थीं। यह समारोह सामान्य रूप से सभी के लिए आयोजित किया जाता था जो रात्री में नज़रबाग़ की कोठी में मनाया जाता था। इस आयोजन में मीलादे-ख़लील नामक पुस्तक पढ़ी जाती थी और देखने योग्य विद्युत साज-सज्जा से नज़रबाग, प्रकाशमान हो जाता था इस समारोह की समाप्ति पर प्रत्येक दिन प्रत्येक व्यक्ति को पाव भर लड्डू (मिठाई) वितरित किया जाता था। जिसमें जाति, रंग और सम्प्रदाय में कोई भेद भाव नहीं किया जाता था। पुरुषों के अतिरिक्त महिलाएं भी इस समारोह को देखने तथा मिठाई से लाभान्वित होती थीं। अतिथि गृह हिन्दुस्तानी, अफ़ग़ानी अतिथियों से भरे रहते थे। मक्की, मदनी व बगदादी अरबों को आवागमन के व्यय के अतिरिक्त समुचित नक़द उपहार भी दिए जाते थे।

नोट— *टोंक के तमाम नवाबों ने वैसे सेवा तो भरपूर की परन्तु हज्जे-बैतुल्लाह किसी एक ने भी अदा नहीं किया। वैसे अन्य महाशयों को स्वय के व्यय से हज कराते रहे।*

टोंक को बनास नदी पर बसे होने के कारण उपजाऊ भूमि के समस्त लाभ उपलब्ध रहे। गेंहू, ज्वार अत्यधिक पैदा होने के कारण प्रत्येक वस्तु मिलती थी। फलस्वरूप टोंक निवासियों को दरिद्रता का अहसास न हुआ।

ख़रबूज़े की कृषि यहां भी समस्त उपजों में प्रसिद्ध है। क्योंकि काबुल के बीज को यहां बड़ी सावधानी से बनास नदी में उगाया जाता है इसलिए ख़रबूज़ा यहां अत्यधिक पैदा होता था। टोंक से बाहर जयपुर, अजमेर तथा दिल्ली में टोंक के ख़रबूज़े बहुत बिकते हैं क्योंकि मीठे होने के अतिरिक्त ये बडे तथा देर तक रहने वाले भी होते हैं।

इस दीर्घकालीन शासनकाल में असंख्य कलाकारों ने कुल हिन्द (अखिल भारतीय) प्रसिद्धि अर्जित की, यूनानी उपचार पद्धति (इल्मे-तिब), तर्क (मन्तिक़) विद्या और दर्शनशास्त्र (फलसफ़ा) में विद्वान हकीम बरकात अहमद साहिब (र अ) का नाम

चोटी पर था। हदीस विद्या में मौलाना हैदर हसन खां साहिब प्रसिद्ध थे क्योंकि एक अवधि तक वह नदवतुल-उलौमा, लखनऊ में प्रधानाचार्य रह चुके थे। इसी भांति मौलवी मुफ्ती अब्दुल रहीम (र अ) ख़ान् साहिब भी प्रसिद्ध हदीस विद्वान थे। इल्मुलरिजाल में मौलाना महमूदुल हसन (र अ) साहिब का हिन्दुस्तान में कोई उदाहरण न था। हकीम अली हसन (र अ) साहिब अमरोही भी अपने समय के एक दक्ष हकीम थे। शरीअत के क़ानून और ताज़ीराते हिन्द में शैख़ नज़ीर साहिब सचिव कौंसिल औलिया भी बडे और पूर्ण मुन्शी माने जाते थे। क़ानूने माल और वित्तीय मामलात में मुन्शी फ़ैज़ अहमद साहिब भी अपने समय के एक गुरू और अहलकार थे। उस्दात सैयद असग़र अली साहिब "आबरू" एक उत्तम सुलेखक एवम् ख़त्ताती (केलीग्राफी) के उस्ताद थे। हकीम सैयद अहमद सईद साहिब एक विद्वान तबीब (वैद्य) होने के अतिरिक्त फारसी के बडे विद्वान थे। फारसी एवम् उर्दू में उत्तम श्रेणी के कवि थे। आपने फारसी के अमीरनामे का उर्दू में अनुवाद भी किया था। मेरे[1] चाचा मुन्शी नियाज़ अली खां साहिब उसी काल के प्राचीन अंग्रेज़ी ज्ञाताओं में गिने जाते थे। आप की गणना उस्ताद कवियों में की जाती थी। प्रारम्भ में 'असअद' काव्य नाम था और बाद में 'मोमिन' बदल लिया था। खान् साहिब मोहम्मद युसुफ खां साहिब छः (हफ्त) भाषाओं के विद्वान और फारसी के टोंक में बेमिसाल साहित्यकार थे। मुन्शी मुस्तफ़आ साहिब एक उच्च कोटि के ज्योतिषी थे। सादुल्ला खां और केसर सिंह नामक पहलवान थे और मौलवी मौला बख़्श साहिब टोंकी एम ए आक्सफोर्ड थे जो एक अवधि तक रियासत हैदराबाद दक्कन के उच्च अधिकारी, वन विभाग भी रह चुके थे। फर्स्ट आफिसरी से सेवा निवृत होने के पश्चात् टोंक में नवाब सआदत अली खां के शासनकाल में मम्बर नसिक्कयात (निकास) भी बना दिए गए थे। शम्सुल उलेमा हाफिज़ मौलवी अब्दुल्ला साहिब टोंक की मोमिन बिरादरी के एक प्रसिद्ध व्यक्ति इसलिए थे कि आप पंजाब विश्वविद्यालय की ओरिएन्टल लेंग्वेजेज़ (भाषा) के चेयरमैन और अरबी फारसी मकाय के अध्यक्ष हो गए थे। मि महमूद शीरानी (स्व. श्री [illegible] (कवि) अख्तर शीरानी साहिब कवि, के पिताश्री थे उर्दू के प्रोफेसर थे प्रोफेसर उमर खां साहिब भी फ़ारसी के पद पर प्रोफेसर थे। हाफिज़ों की टोंक में इतनी बहुतायत थी कि प्रत्येक मस्जिद की नमाज़ की पंक्तियों में कई-कई हाफ़िज़ इमाम के पीछे खड़े होने वालों में शामिल होते थे.

धार्मिक विद्या का जो पौधा नवाब वज़ीरुद्दौला ने लगाया था वह नवाब इब्राहीम अली खां के शासनकाल में फल-फूल रहा था। इसी काल के कवियों में (स्व.) कैफ़ साहिब का स्थान विशेष रूप से शायरी कलाम में बहुत ऊंचा है

---

[1] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एजाज़ खाँ के चाचा।)

शजराह-पुरुष सन्तान हाफिज़ नवाब मोहम्मद इब्राहीम अली खां साहिब, ख़लील

रामपुरी-बेगम व लाड़ली बेगम से

(1) साहिबज़ादा अब्दुल हफीज़ खाँन् साहिब, वली अहद (उत्तराधिकारी)।

(2) साहिबज़ादा हाफिज़ सआदत अली खां साहिब उर्फ मन्झले मियां।

(3) साहिबज़ादा अब्दुर्रशीद खां साहिब उर्फ भूरा मियां।

रामपुरी बेगम हाजरा बेगम से

(4) साहिबज़ादा फारूक अली खां साहिब।

(5) साहिबज़ादा उस्मान अली खां साहिब।

अन्य बेगमात (रानियों) से

(6) साहिबज़ादा अब्दुल वाहिद खां।

(7) साहिबज़ादा मसूद अली खां।

(8) साहिबज़ादा इफ़्तेख़ार अली खां।

(9) साहिबज़ादा अब्दुल्ला खां।

(10) साहिबज़ादा इस्माईल अली खां।

(11) साहिबज़ादा मासूम अली खां।

(12) साहिबज़ादा याकूब अली खां।

नवाब अमीनुद्दौला बहादुर के शासनकाल के अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्त्व

नवाब अमीनुद्दौला हाफिज मोहम्मद इब्राहीम अली खां साहिब का शासनकाल टोंक के इतिहास में शाहजहानी काल के स्वर्णमयकाल की याद को पुनर्जिवित कर देता है. यह नवाब स्वभाव, आचार-विचार, व्यवहार तथा रूचि आदि के प्रकाश में शाहजहां द्वितीय कहलाने योग्य है कारण कि इनका शासनकाल रियासत टोंक में स्वर्णिम काल कहलाने का अधिकारी है। अन्तर केवल यह है कि अन्तिम आयु में शहशाह शाहजहां अपने सुयोग्य पुत्र औरंगजेब के आगे प्रतिष्ठा में कम पड गया था और कठिनाइयों में फस गया था, जबकि नवाब इब्राहीम अली खां की उन्नत प्रतिष्ठा के सामने उनके

पिता की प्रतिष्ठा चकाचौंध होकर नज़रबन्दी में आ गई थी। इसी काल में रियासत ने हर क्षेत्र में उन्नति की और टोंक रेल से बीस मील दूर होने के बावजूद भी स्वर्ग का नमूना बन गया था और टोंक की प्राचीनता[1] पर नव प्रकाश और पाश्चात्य सभ्यता की झलक न पड़ सकी।

नवाब को शायरी में अत्यधिक रूचि थी और नअ़त व मन्क़ेबत (धर्म से प्रेरित शायरी) अपना काव्य नाम "ख़लील" रख कर अच्छे अशआर (पद्य) कह लेते थे इसीलिए अत्यधिक शायरों ने नवाब की संरक्षता प्राप्त करके उपहार प्राप्त किए, उनमें उस्ताद ज़हीर देहलवी बिस्मिल ख़ैराबादी, मुज़्तर ख़ैराबादी, नवाब सुलेमान ख़ान् असद लखनवी और फितना लखनवी थे।

जिन उच्च कोटि के विद्वानों का पूर्व में वर्णन आ चुका है उनके अतिरिक्त मौलाना रूही (र अ), साहिबज़ादा अहमद अली खां 'रौनक', साकिब देहलवी और नवाब मौलवी सिद्दीक हसन खां भी थे और नवाब के भ्राताओं में साहिबज़ादा मोहम्मद इस्हाक़ खां साहिब, साहिबज़ादा अब्दुर्रहीम खां साहिब और साहिबज़ादा अब्दुल वहाब खां साहिब भी विद्वान थे।

साहिबज़ादा या नवाबज़ादा अहमद अली खां 'रौनक'।

इन का स्थान नवाब के सम्बन्धी विद्वानों में सबसे ऊंचा था। आप नवाब मोहम्मद अमीर खां, रियासत के संस्थापक के सुपुत्र और नवाब इब्राहीम अली खां के दामाद भी थे। आपके जयपुर आवास के दौरान ज़हीर देहलवी और अनवर देहलवी आप से लाभान्वित रहे। दाग देहलवी को भी कुछ समय तक आपने अपने यहां अतिथि बनाया था। तब ही आपके दीवान (काव्य संग्रह) के लिए उस्ताद दाग देहलवी ने चार पंक्तियां (कतआ) तारीख़ लिखा था। आपका देहान्त वृद्धावस्था में नवाब इब्राहीम अली खां के शासन काल में हुआ।

शमसुल-उलेमा मौलाना अब्दुल्ला साहिब टोंकी।

अपने समय के बेमिसाल विद्वान और उच्च स्तर के भाषणकर्ता थे। तर्क शास्त्रार्थ (मुनाज़ेरा) वार्ता एवं वाद-विवाद करने में दक्ष थे। मौलाना आज़ाद (स्व.) से भी आपका वाद विवाद हुआ था। जिसकी पुष्टि मौलाना आज़ाद ने अपनी एक रचना में की है। बरतानिया सरकार की ओर से आपको शैक्षणिक योग्यताओं, क्षमताओं और साहित्यिक सेवाओं के प्रकाश में शमसुल उलेमा की उपाधि प्रदान की गई थी। पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर में पहुंच कर आप प्रोफ़ेसर अरबी व फ़ारसी से ओरिएन्टल फ़ैकल्टी के चैयरमेन नियुक्त किए गए थे और इसीलिए आपने लाहौर में आवास किया और वहीं पर आपका देहान्त हुआ।

---

[1] क़दामत पसंदी

मौलवी महमूद हसन खां साहिब (र.अ.) ।

आपकी गणना हिन्दुस्तान के विद्वानों और रचनाकारों में होती है। आप टोंक में ही जन्मे थे और वृद्धावस्था में देहान्त पश्चात् यहीं पर आपको दफ्नाया गया। आपकी क़ब्र मोतीबाग के क़ब्रस्तान में है।

आपने टोंक ही में शिक्षा ग्रहण की और प्राच्य विद्या (उलूमे शर्किया) की हर कला में आपको दक्षता प्राप्त थी। फिर टोंक से बाहर जाकर रियासत हैदराबाद के शिक्षा विभाग में उलूमे शर्किया में नौकरी कर ली फिर वहाँ आप मौजमुल्मुसन्नेफ़ीन के सम्पादन में व्यस्त हो गए। यह पुस्तक लोगों के नाम (असमाउर्रिजाल इस्लामिया) की एनसाइक्लोपीडिया है जिसकी प्रसिद्धि समस्त इस्लामी विश्व में फैली। यह बेमिसाल पुस्तक आपके गहन अध्ययन और उच्च कोटि की शोध विद्या के फलस्वरूप ही रचना के रूप में सामने आई। इस पुस्तक की बहुत बड़ी बड़ी जिल्दे (खण्ड) हैं इसमें विश्व की प्रत्येक भाषा के रचनाकार और उसकी सेवाओं को अंकित किया गया है। आपने पाठकों को इस पुस्तक के साहित्यिक स्तर से परिचित कराया है। इसकी कुछ जिल्दे सरकार निज़ाम हैदराबाद की ओर से प्रकाशित करवाई गई थीं।

इस प्रकार गागर में सागर भरकर शेष आयु व्यतीत करने अपनी मातृ भूमि टोंक ही में आ गए थे जहां आपको रियासत हैदराबाद की ओर से पेंशन भी मिलती रही। आपमें सादगी और हंस-मुख रहने की विशेषताएं अच्छे अंदाज़ की थीं। आपका परिवार मौलवियों का परिवार कहलाता था, जिसका प्रत्येक व्यक्ति विद्वान होता था। यहा तक कि महिलाएं भी विद्वान होती थी। हिन्दुस्तान के विभाजन के समय इस परिवार के नव-युवकों ने यहाँ से प्रस्थान कर लिया और इस परिवार के वृद्धों को यह दिन देखने को ही न मिला, यहा तक कि एक के बाद एक इस परिवार के सभी विद्वानों का देहान्त हो गया। आपकी रचित पुस्तकों में से एक अस-सैयद अरबी में है।

मौलवी हैदर हसन खां साहिब (र. अ.) ।

आप मौलाना महमूदुल हसन खां साहिब (र. अ) के सगे छोटे भाई थे। हिन्दुस्तान में हदीस व फिकह में अपना जवाब न रखते थे इसलिए आपको टोंक से बुलाकर नदवतुल उलैमा, लखनऊ का प्रधानाचार्य बनाया गया। वहां रहकर आपने दस वर्ष तक हदीस शरीफ की शिक्षा दी और दर्जनों विद्वान बनाए। आपके स्वभाव में गम्भीरता और स्थायित्व था। टोंक में दारूल उलूम फुरकानिया की आधारशिला आपने ही रखी थी जो अब तक स्थित है।

साहिबज़ादा मौलवी हाफ़िज अब्दुल वहाब खां साहिब।

अमीरिया परिवार के बेमिसाल विद्वान थे। सूफ़ी मत के समर्थक और शासन के उच्चतर पदों पर रहने के बावजूद सादगी और दया के बादशाह थे यद्यपि आप नवाब के अत्यन्त प्यारे, आज्ञाकारी और सद्भावी भाई थे। आप अपने सेवा काल में

नायबुरियासत के पद पर भी रहे और वित्तीय सदस्य भी। आपका देहान्त नवाब के जीवन काल में ही हो गया था उस समय नवाब ने कहा कि अब मैं भी आता हूं तुम्हारे पश्चात् अधिक जीवित न रहूंगा। इस प्रकार नवाब छः माह पश्चात् ही परलोक सिधार गए।

साहिबज़ादा साहिब न केवल विद्वान वरन् आत्मिक जगत् में भी किसी उच्चतर स्थान पर नियत थे। अत्यन्त सादा वस्त्र धारण करते थे और महलों में जीवन व्यतीत करने के बजाए मिट्टी से बने (सिफ़ालापोश) बंगले में निवास करते थे सेवक एवम् कर्मचारी होने के बावजूद अपने सभी कार्य स्वयं ही करते थे दान और विद्या प्रेमी होने में अपना जवाब सम्पूर्ण अमीरिया खानदान में नहीं रखते थे। आप विद्वान रचनाकार भी थे अरबी, फारसी और उर्दू अर्थात् तीनों भाषाओं में आपका अत्यधिक दक्षता प्राप्त थी। इसलिए कई पुस्तकें भी प्रत्येक भाषा में लिखी हैं। जो टोंक के राजकीय पुस्तकालय में अब भी उपलब्ध है। आपकी हवेली मौहल्ला काली पल्टन में थी

साहिबज़ादा अब्दुर्रहीम खां साहिब (स्व.) ।

आप नवाब के भ्राताओं में सबसे अधिक व्यवस्थापक (मुन्तज़िम) और धनवान थे आप एक समय तक सेना के जनरल भी रहे परन्तु आपको पुस्तकालय के जनरल होने में अधिक रूचि थी इसलिए आपको अपने पिता नवाब मोहम्मद अली खां की विद्या तथा कला का उत्तराधिकारी कहना अधिक उचित होगा। शारीरिक रूप में भी आप अपने सब भ्राताओं से अलग नज़र आते थे। मेरे[1] कवि व अंग्रेज़ी, फारसी ज्ञाता, चाचा मुन्शी नियाज़ अली खाँ साहिब 'मोमिन' आप ही के विशेष मित्रों (मुसाहिब) में से थे। इसी काल में परी-चार्ट नामक एक जर्मनी जाति का अंग्रेज़ रियासत में राजनीतिक सेवाओं पर अधिकारी होकर आ गया था और नवाब इब्राहीम अली खाँ साहिब के विरूद्ध हो चला था, नवाब की पदावनति के पक्ष में था। यह देखकर साहिबज़ादा अब्दुर्रहीम खाँ ने मुन्शी नियाज़ अली खाँ को उसके पीछे लगा दिया। मुन्शी जी ने वीरता, साहस तथा धैर्य से उसके विरूद्ध सूचना एवम् सामग्री एकत्रित करना प्रारम्भ किया, हिन्दुस्तान के वायसराय और मलिका विक्टोरिया शहशाह सल्तनत बरतानिया से उसकी शिकायत का क्रम प्रारम्भ कर दिया, जिस पर उससे उत्तर लिए जाने लगे और उसके आज्ञाकारी अंग्रेज होने पर सन्देह किया जाने लगा। यहां तक

---

[1] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एज़ाज खां के चाचा।

कि प्रथम विश्व युद्ध के समय उसे जर्मनी माना जाकर बन्दी बनाने के लिए दिल्ली बुलाया गया परन्तु अपने अपमान और कठिनाइयों का विश्वास होने पर भयभीत होकर इसने सांगानेर स्टेशन के समीप चलती रेल से कूद कर आत्महत्या कर ली। टोंक आवास के समय में वह प्राय कहा करता था कि वह छोटे कद का मुन्शी अत्यन्त खतरनाक है। इसकी मृत्यु पश्चात नवाब के विरोध का कांटा निकल गया तो साहिबज़ादे ने नवाब की इच्छा से मुन्शी जी को मालामाल करना चाहा परन्तु आत्मसम्मान धारक तथा आज्ञाकारी मुन्शी साहिब ने अपने पठान होने का प्रमाण देते हुए उपहार लेने से यह कहकर मना कर दिया कि इस संघर्ष में धन राशि आपकी थी और कलम मेरा जिसे मैंने नमक का हक अदा करने के लिए काम में लिया।

मौलाना हकीम बरकात अहमद साहिब (र. अ.) ।

वैसे तो आप परिवार की पारम्परिक प्रथानुसार नवाब टोंक के विशेष वैद्य [illegible] निजी अभिरुचि से पठन पाठन व्यस्त एक सूफी मत के विद्वान मुफ्ती और दार्शनिक थे। [illegible] दर्शन विद्या में आप सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में एक [illegible] थे। आपके शिष्य, विद्यार्थी न केवल हिन्दुस्तान में वरन् [illegible] कन्धार, [illegible] बुखारा, इराक, मिश्र और तुर्किस्तान में भी [illegible] और लोगों के नाम [illegible] के व्याख्याताओं के नाम अर्थात [illegible] में विख्यात हुए थे। इसके अतिरिक्त सूफी विद्या अर्थात तसव्वुफ [illegible] में भी आपका अनूठा स्थान था। यह कुतुबखाना का ही [illegible] मदरसा [illegible] ने इन्होंने अपने पोषक नवाब इब्राहीम अली खाँ खलीलुल्लाह की यादगार में [illegible] आज भी विद्यालय का केन्द्र है और हकीम बरकात अहमद साहिब की [illegible] में जो [illegible] की मस्जिद के उत्तर में स्थित है आप ही ने [illegible] आपकी अरबी में बहुत सी पुस्तकें हैं।

[illegible] भाषा [illegible] अर्थात जमाले मक्का[1] के दर्शन पर आपने [illegible] था और [illegible] आपने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी है। [illegible] जीवन के [illegible] में अपनी मातृभूमि टोंक का नाम ही उज्ज्वल कर गए और इसी की भूमि में लीन होकर परलोक सिधार गए।

[1] टाईम पत्र [illegible]

प्रोफेसर महमूद शीरानी।

हिन्दुस्तानी प्रसिद्धि के रचनाकार, उर्दू भाषा के बेमिसाल शोध कर्ता, खत्ताती के दक्ष कलाकार थे। भाषाओं के उच्च कोटी के विद्वान होने के कारण आपकी तनकी दात (टीकाएँ) फिरदोसी की शेरूलअजम (लेखक शिबली नआमानी) पर प्रसिद्ध हैं। उर्दू भाषा का जन्म पजाब से होना प्रमाणित किया है और कुराने पाक की उर्दू व्याख्या अर्थात तफसीरात पर "मक़ालाते-शीरानी" आप की चिरस्थायी एवं साहित्यिक रचना है।

मौलाना शिबलो नोअमानी पर ऐसी विद्धतापूर्ण आलोचना की है कि आज तक किसी को उसका उत्तर देना न बन पड़ा। इस विषय में बरतानिया सरकार की ओर से कई पदक (मेडल) और पारितोषिक आदि मिलते रहे। आप न केवल प्राच्य विद्या अर्थात् उलूमे शर्किया के विद्वान थे वरन् अंग्रेजी भी आप भलि-भांति बोल और लिख सकते थे इसलिए लन्दन जाकर वहाँ की शैक्षणिक सस्थाओं का निरीक्षण भी किया था। लन्दन में काफी दिन आवास कर अंग्रेजी विद्या का गहन अध्ययन भी किया था वापसी पर पूर्वी शहरों अर्थात बलादे शर्किया का भ्रमण करते हुए लाहौर अपने विद्या केन्द्र आ पहुचे और सेवा निवृति की आयु तक लाहौर ही में आवास किया परन्तु सेवा निवृत्त हो जाने के पश्चात् अपनी मातृभूमि टोंक आ गए थे और यहीं देहान्त हुआ इनका आवासगृह मौहल्ला मेहन्दी बाग मे तेलियों के बीच था। इनका परिवार कभी मारवाड़ के ग्राम छोटी बड़ी खाटू मे आया था और इनके पिता नवाब की एक बेगम के कामदार अर्थात कार्यकर्ता थे इस हवेली में अब निज़ाम बीड़ी फैक्ट्री है। यह इनके परिवार को शीरानी पठान परिवार बताते थे इनके अलभ्य अर्थात नादर पुस्तकों और विभिन्न हुकूमतों अर्थात राज्यों के पुराने सिक्के (मुद्रा) एकत्रित करने में अत्यन्त अभिरूचि थी परन्तु इनके देहान्त के पश्चात् शीघ्रता से इनके प्रसिद्ध पुत्र कवि अख़्तर शीरानी[1] टोंकी ने इनको इस सब पूंजी पर पानी फेर दिया था। यू कहना चाहिए कि उसे पी-पी कर खत्म कर दिया और खूब ही मस्ती ली प्रोफेसर साहिब का देहान्त सन् 1949 ई में हुआ। गालिब के कथनानुसार, अख़्तर साहिब हमारे फुटबाल खेल के साथी मित्र का यह कथन था कि—

यद्यपि पीते थे और कहते थे 'हाँ रंग लाएगी हमारी ख़ामा-मस्ती (लिखना) एक दिन' और प्राय, यह पद्य भी उनकी जुबान पर रहता था।

---

[1] इन का देहान्त 1948 ई में हो गया। (वाज़याफ़त पृ स. 74)

مے سے غرض نشاط ہے کس روسیاہ کو

ایک گونہ بے خودی مجھے دن رات چاہیے

मै से गरज़ निशात है किस रू-सियाह को,

इक गोना बेख़ुदी मुझे दिन-रात चाहिए।

अर्थ— मदिरा पीने से किस पापी को आनन्द आता है, मुझे तो दिन-रात एक बेखुदी (अपने-आप से अन्जान हो जाना) चाहिए।

और कभी गर्व के साथ यह पद्य भी पढ़ने लगते—

صبح کو خوب ہی پی شام کو توبہ کر لی

رند کے رند رہے ہاتھ سے جنّت نہ گئی

सुबह को ख़ूब ही पी, शाम को तौबा कर ली

रिन्द के रिन्द रहे हाथ से जन्नत न गई।

अर्थ— प्रातः तो मदिरा पी और सायं को भगवान् से तोबा कर ली। इस प्रकार शराबी के शराबी रहे और स्वर्ग भी हाथ से न गया।

नवाब इब्राहीम अली ख़ाँ के अत्यन्त दीर्घ शासनकाल में उनके सेवक चौबदारान ने जो अधिकतर मौहल्ला शागिर्द पैशा में अब भी निवास करते हैं, नवाब का अत्यन्त विश्वास प्राप्त कर लिया था और इसी के फलस्वरूप अत्यधिक धन दौलत कमाई थी। परन्तु अधिकतर लोग विद्या की पूंजी से वंचित रहे।

मास्टर अब्दुस्सलाम साहिब, एम. ए.।

आप हकीम सैयद सरवर शाह विलायती दीवाने रियासत (नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ साहिब के शासनकाल से) के सुपुत्र थे। अत्यन्त सुन्दर, बुद्धिमान्, प्रवीण और हसमुख थे। परन्तु प्रकृति क्रोधी थी। एंग्लो मोहम्मडन कालेज़ अलीगढ़ से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर टोंक के हाई स्कूल में मास्टर से प्रधानाध्यापक बना दिए गए परन्तु किसी आज्ञा की पालना न करने के कारण नवाब के अप्रसन्न हो जाने पर टोंक से निष्कासित कर दिए गए। तब जयपुर आकर वकालत की और बहुत शानदार की फ़लस्वरूप न्यायधीश के पद पर नियुक्त कर दिए गए और फिर उस पद से सेवा निवृत्त होने पर जयपुर में देहान्त हुआ।

सईदुद्दौला-वज़ीरूलमुल्क-नवाब हाफिज़ सर सआदत अली खाँ साहिब बहादुर, जी. सी. आई. ई.

(1930 ई. से 1947 ई. तक)

साहबज़ादा अब्दुल [illegible] खाँ [illegible] सिंहासन चूंकि अपने पिता नवाब इब्राहीम अली खाँ साहिब के जीवन में [illegible] किये गए थे इसलिए नवाब [illegible] के [illegible] जिन्हें मझले मियाँ भी कहा जाता था, सिंहासन पर आसीन हुए।

[illegible] मोहम्मद इस्हाक़ खाँ साहिब [illegible] सर सैमुअल के [illegible] मेजर फ्रेजर साहिब पुलिटिकल अधिकारों के साथ टोंक में आए और टोंक की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए उन्होंने अपने विशाल अधिकारों का अत्यधिक तन्मयता से उपयोग किया। बनास नदी पर फ्रेजर ब्रिज (पुल) का निर्माण उनकी बड़ी यादगार है। इससे वर्षा ऋतु में यात्रा करने अथवा माल [illegible] की जो कठिनाइयाँ थीं और अधिक व्यय होता था उससे मुक्ति मिल गई [illegible] में सुविधा बढ़ी [illegible] वृद्धि हुई। सआदत अस्पताल के [illegible] भवन भी इसी दौर की [illegible] है जो मेजर फ्रेजर की महानता और नवाब की [illegible] और [illegible] के प्रति उदारता की एक जीती जागती यादगार है। [illegible] प्रकार ने कुछ ध्यान दिया और हाई स्कूल के हेडमास्टरी के पद पर [illegible] एक बड़े अनुशासन प्रिय और योग्य ऐंग्लो इण्डियन मिस्टर [illegible] को नियुक्त किया। इससे पूर्व नूरुल हसन बरलास [illegible] लम्बे समय से हेडमास्टर चले आते थे। मिस्टर फिलिप्स के हेडमास्टरी के समय में उच्च कक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्या और अच्छे परिणामों में प्रशंसनीय प्रगति होने लगी और शब्द 'अनुशासन' की शान स्कूल में पहली बार दृष्टिगोचर होने लगी।

सईदुद्दौला-वज़ीरूलमुल्क-नवाब हाफिज़ सर सआदत अली खाँ साहिब बहादुर, जी. सी. आई. ई.

(1930 ई. से 1947 ई. तक)

इस पुस्तक के लेखक अर्थात् मेरी[1] नियुक्ति असिस्टेन्ट के पद पर भी इसी समय में जौलाई 1934 ई. में हुई। अक्टुबर 1956 ई में हैडमास्टरी का चार्ज मैंने उनके सेवा-निवृत हो जाने पर लिया।

साहिबज़ादा मोहम्मद इस्हाक़ खां साहिब होम मेम्बर के सेवा निवृत्त हो जाने पर उनका चार्ज उनके भतीजे साहिबज़ादा खान् बहादुर अब्दुत्तव्वाब खाँ साहिब पुत्र साहिबज़ादा अब्दुल वहाब खाँ साहिब (स्व) ने लिया। आप होम मेम्बर होने से पूर्व सेना के जनरल के पद पर नियुक्त थे इस समय में खान् बहादुर मोहम्मद शफ़ी खाँ सेवा निवृत्त डिप्टी कलेक्टर, यू. पी मेम्बर माल थे और ख़ान् बहादुर शैख रहीम बख़्श साहिब पंजाबी, मेम्बर जूडिशियल थे।

नवाब सर सआदत अली खाँ साहिब बुद्धिमानी में अद्‌भुत थे। नवाब का प्रारम्भिक समय, अपने दादा नवाब मोहम्मद अली खाँ साहिब के पास बनारस में व्यतीत हुआ था। वहीं के धार्मिक शिक्षालय में अध्ययन किया और कुराने पाक को कण्ठस्थ किया तथा अरबी विद्या भी ग्रहण की। फिर दादा साहिब के देहान्त पश्चात् टोंक आ गए थे और अपने बड़े भ्राता साहिबज़ादा अब्दुल हफीज़ खाँ की संगत में रहकर आखेट खेलने और क्रिकेट खेलने का शौक़ उनमें उत्पन्न हो गया था। बाए हाथ से गेंदबाज़ी करके स्पनिंग कला में दक्षता दर्शायी इसके अतिरिक्त टोंक के मित्रों की संगत के परिणाम स्वरूप विशेष असील[2] मुर्ग़बाज़ी, बटेरबाज़ी शतरंज, मच्छली के शिकार, शेर के शिकार के शौक़ भी बढ़-चढ़कर करते थे. तैराकी में नवाब को इतनी दक्षता थी कि बनास नदी जब चढ़ाव की स्थिति में होती, उस समय बनास नदी के अत्यन्त चौड़े पाट होने के बावजूद, तैर कर पार कर लेते थे। आप को अन्तिम शासनकाल में उर्दू काव्य-कला और नाटक तथा छविगृह देखने का शौक़ भी हो गया था। शुक्रवार के दिन जब कि सारे रियासत के अधिकारी प्रणाम के लिए प्रातःकाल कोठी गुलज़ार बाग़ में एकत्रित होते थे, तो असील मुर्ग़ों, बटेरों की चालों से नवाब आनन्द उठाते थे.

---

[1] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एजाज़ खाँ।

[2] असील मुर्गे विशेष लड़ाका होते थे, सो इनको ही लडाया जाता था.

मेजर फ्रेज़र, एडवाईज़र के चले जाने के पश्चात् मेजर बॉरनेट, एडवाईजर होकर आए। उनके समय में नवाब ने अपनी नीति अंग्रेज़ अधिकारियों को प्रसन्न रखने की अपनाई और रियासत के काम काज में कभी भी अवांछनीय हस्तक्षेप नहीं किया। नवाब की इस बुद्धिमानी के फलस्वरूप अंग्रेज़ अधिकारियों, देशी अधिकारियों और परदेसी अधिकारियों को उनसे सम्बन्धित विभागों को संचालित करने और उनको विकसित करने का पर्याप्त अवसर मिला। इससे पूर्व के शासन कालों में यह बात न थी और इसीलिए रियासत और जनता पिछडी अवस्था से ग्रस्त रही और आधुनिक कार्यों को अवांछनीय दृष्टि से देखा जाता था।

इस समय के जुडिशियल मेम्बर ख़ान् बहादुर रहीम बख़्श साहिब पूर्वानुसार मेम्बर कौंसिल थे और शिक्षा विभाग के मिनिस्टर भी थे। ख़ान् बहादुर असादुल्ला खा साहिब बदायूनी, मेम्बर माल थे और आई जी पुलिस मिस्टर फॉक्स थे।

नवाब परगना सिरोंज का दौरा प्रत्येक वर्ष अत्यन्त रूचि से करते थे और मालवा की जनता को मार डालने वाले शेरों को समाप्त करके वन को भय-रहित बना आते थे, ताकि फिर नवाब की जनता अपने धन्धों को भय-रहित एवम् सुरक्षित होकर पूर्ण कर सकें।

शासन के मुख्य और उच्च दायित्वों को अति उत्तम ढग से संचालित करने, अपनी जनता को प्रत्येक प्रकार से सुरक्षा एवम् संरक्षण प्रदान करने और उनके कल्याण तथा विकास चाहने की प्रसिद्धि मे नवाब का स्थान अंग्रेज़ अधिकारियों और बरतानिया सरकार की दृष्टि में अत्यन्त ऊंचा हो गया था।

बरतानिया सरकार की ओर से नवाब को नाफिट हुड[1] अर्थात जी सी आई ए. की उपाधि दी गई थी। इस पर जनता और नवाब ने अत्यन्त खुशियां मनाई। यह वास्तविकता सभी स्वीकारते हैं कि ख़ानदाने अमीरिया में नवाब सआदत अली ख़ॉ अत्यन्त बुद्धिमान, राजनीति एवम् कूटनीति में दक्ष, जनता प्रिय, सादा मिजाज, दयालु, न्यायप्रिय और अत्यन्त सफल शासक हुए हैं। इसलिए आज तक भी टोंक की जनता उन्हें अत्यन्त सम्मान और आदर से याद करती है। यह बात मानना पड़ती है कि जन-सेवा से मनुष्य भगवान् का प्यारा और उसके बन्दों का प्रिय बन जाता है। मेजर बारनेट साहिब एडवाईज़र के चले जाने के पश्चात् एडवाईज़री समाप्त कर दी गई और लेफ्टीनेन्ट कर्नल एण्डरसन साहिब कौंसिल औंलिया के वाईस प्रेसिडेन्ट बन कर आए। उस समय के नवाब को

[1] Knight Hood (मुहिम सर करने वाला)

अब एक अधिकारी (बाईइख़्तियार) बना दिया गया। वह शासनकाल था अब जनता की आवाज़ शासन को प्रभावित करने लगी थी।

हिन्दुस्तानी हुकूमत के राज के अनुसार स्वच्छ एवम् जागृत मस्तिष्क रखने वाले नये ज़माने को पहचानने वाले शासक ने टोंक में विकास विभाग अलग हेतु प्रारम्भ कर दिया, जिसके मिनिस्टर [illegible] बहादुर मौलवी [illegible] साहिब [illegible] एम ए [illegible] नियुक्त [illegible] नियुक्त किए गए। इस समय के [illegible] मेम्बर [illegible] साहिब [illegible] साहिब अजमेर में रहते थे। उनकी [illegible] अजमेर में [illegible] हो गई। [illegible] मेम्बर खान बहादुर [illegible] मौलवी शम्सुल हसन साहिब थे। आप सेवा निवृत्त सब न्यायाधीश थे और यू पी सरकार में कौंसिल और [illegible] के पश्चात इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस [illegible] यह भी यू पी सरकार के एक सेवानिवृत्त उप-पुलिस अधीक्षक थे।

[illegible] समय पश्चात टोंक में मेम्बरी माल के पद पर एक [illegible] बहादुर [illegible] साहिब [illegible] आए। यह भी यू पी सरकार के सेवानिवृत्त [illegible] कलक्टर थे। आपके पिता कभी टोंक में अधीक्षक [illegible] पुलिस के उच्च पद पर नियुक्त थे और उनका देहान्त टोंक ही में हुआ। [illegible] के कब्रिस्तान में एक [illegible] कब्र में दफन किए गए। इसी भावना से प्रेरित होकर टोंक वासियों की सेवा के लिए यहां आए थे। वह अपनी सही कार्य प्रणाली, दयालुता और सद्व्यवहार से शासन एवम् जनता की दृष्टि में एक सफल मिनिस्टर की छवि अर्जित करने में सफल रहे। मुझ [illegible], पर उनकी कृपा बनी रही थी। मैं भी उन्हें अपना शुभचिन्तक मानता था। उनसे मेरा वास्ता उस समय पड़ा था जबकि वह मिनिस्टर इन्चार्ज नगरपालिका टोंक थे। मैं उनके अधीन एक्ज़ीक्यूटिव ऑफिसर के पद पर कार्यरत था, उनके व्यवहार में कुछ ऐसा आकर्षण था और वार्तालाप में मृदुलता थी कि प्रत्येक व्यक्ति उनसे मिलकर प्रसन्न हो जाता था और वह ही एकमात्र परदेसी मिनिस्टर ऐसे थे कि जनता का हृदय उनसे साफ था। यही नहीं वरन् उनकी प्रशंसा जनता की ज़ुबान पर सामान्य रूप से थी, आप भी जनता की भलाई, हमदर्दी, आदर और सत्कार में कोई कसर उठा न रखते थे। नगर के आदरणीय व्यक्तियों के साथ समानता पूर्वक भेंट करते थे। समस्त परदेसी मेम्बरान कौंसिल में केवल आपको टोंक वालों की [illegible] और पिछड़ेपन का पूर्ण अहसास

था। इसलिए आप हर समय इनका दिल हाथों पर लिए चलते थे। जनता के खुशी एवम दुख में पूर्ण सम्मिलित होते थे। [illegible] से किया था यद्यपि दुल्हा की बारात अलीगढ़ यू. पी. से [illegible] आई थी। ऐसी मिलनसारी का प्रमाण आपसे पूर्व किसी भी पारसी मेम्बर कौंसिल ने नहीं दिया था।

सैयद साहिब [illegible][1] दृष्टिगोचर होती थी। [illegible] वर्ष तक रियासत [illegible] आप ने हृदय रोग बढ़ने के कारण [illegible] लेकर अपने भ्राता [illegible] साहिब के पास उपचार हेतु बुलन्दशहर चले गए और वहीं देहान्त हो गया।

आप की कब्र [illegible] प्रसिद्ध [illegible] और आपकी [illegible] साहिब की कब्र भी है। [illegible] जिन्दगी में भी [illegible] में ऐसी प्रतिष्ठा और [illegible] भी प्रदान हो।

आप इस बात से [illegible] आवश्यकता [illegible] प्रत्येक [illegible] एवम् इस्लामी त्यौहार पर अपनी कोठी में [illegible] भोजन) [illegible] था [illegible] होते थे। [illegible] भी आप अपने [illegible] आर्थिक सहायता करते थे। नमाज़ पांचों समय और रोज़े के अत्यन्त पाबन्द थे। [illegible] पान अत्यन्त शौक़ से [illegible] थे। [illegible] पहनते थे [illegible] और अलीगढ़ [illegible] धारण करते थे। अर्थात आप [illegible] अलीगढ़ के एक सही नमूना थे। [illegible] के उन विद्यार्थियों से जो [illegible] शिक्षा प्राप्त करने अलीगढ़ जाते थे उनसे अत्यन्त सहानुभूति रखते थे। यहाँ तक कि [illegible] स्वयं अपनी कोठी पर [illegible] जाते थे तो टोंक के विद्यार्थियों को [illegible] थे और अपने प्रभाव से इनकी कठिनाइयों का निवारण करते थे।

आपके बड़े भ्राता खान बहादुर सैयद सज्जाद हैदर साहिब यल्दरम थे जो कभी डिप्टी कलेक्टरी के बाद मुस्लिम यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार भी रह चुके थे।

---

[1] सय्यदों में कुछ विशेष पारम्परिक गुण होने से आशय है।

उस समय के जुडिशियल मेम्बर ख़ाँन् बहादुर मौलवी शमसुल हसन साहिब सेवा निवृत सत्र न्यायधीश अलीगढ़ (यू. पी.) भी उल्लेखनीय हैं। शरई सूरत के अत्यनत पाबन्दे शरा, नमाज़ जमात सहित पढने वाले, रात्री को अल्लाह की इबादत करने वाले और अत्यन्त निर्भीक, बेलाग, मुतक्की (संयमी) व न्यायप्रिय थे।

होम मेम्बरी पर साहिबज़ादा ख़ान् बहादुर अब्दुत्तव्वाब खां साहिब पूर्वोनुसार नियुक्त थे। यह अत्यन्त सादा स्वभाव और सूफ़ी मत के मानने वाले विलक्षण सरदार थे। परन्तु नियमित जीवन के चाहने वाले थे। दाढ़ी तो न रखते थे परन्तु नमाज़ व रोज़े के अत्यन्त पाबन्द थे आप रचनाकार भी थे। टोंक के इतिहास व सभ्यता पर आपने एक पुस्तक **'तज़करा-ए-टोंक'** लिखी, जिसकी भाषा उनकी विशेष शैली का प्रमाण है।

जनरल इंस्पेक्टरी पुलिस पर मिस्टर जे. लन्दन बूम पूर्वानुसार नियुक्त रहे और वाईस प्रेसिडेन्ट व फ़िनानशियल मेम्बर मिस्टर डी ई. ओ जेम्पर साहिब, स्वीडन जाति के अंग्रेज़ नियुक्त थे। यह अत्यन्त परिश्रमी, प्रबन्धक और कुछ हिन्दुस्तानी आदतों के ऐसे थे कि दीर्घकाल तक नीमच में अफ़ीम के विभाग के अधिकारी रह चुके थे और वहां से सेवा निवृत होने पर रियासत ने आपकी सेवाएं प्राप्त कर ली थीं। नगर टोंक की नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी पद से सआदत हाई स्कूल सिरोंज हैडमास्टरी पद पर मेरा[1] स्थानान्तरण आप ही के समय में सन् 1940 ई. में हुआ था।

इस काल की यादगार में घण्टाघर, म्यूनिसिपल टाउन हाल, सिविल लाईन जिसमें एक प्राथमिक शाला है और गुलज़ार बाग़ की कोठी जिसमें अब कन्या-हायर सैकण्ड्री स्कूल है एवं नाटक घर जो बाद में राज टाकीज़ सिनेमा में परिवर्तित कर दिया गया सम्मिलित है। इस काल की एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि प्रथम बार टोंक नगरपालिका को चयनित (इलेक्टेड) बोर्ड बनाया गया और इसका हैड, प्रशिक्षित अधिशासी अधिकारी, इस पुस्तक के लेखक अर्थात मुझे[2] अजमेर में प्रशिक्षण दिलाए जाने पश्चात् नियुक्त किया गया।

दूसरी विशेषता यह है कि कौंसिल ऑलिया से कानून मुल्की अधिकार[3] प्रारम्भ किया गया, जिससे टोंक व परगनात के निवासियों के रोज़गार के अधिकार सुरक्षित कर दिए गए और देशी नव युवकों को योग्य एवम् पात्र बनाने के लिए उनके प्रतिनिधि मेम्बर खाँ बहादुर मौला बख़्श साहिब टोंकी एम ए. को, मेम्बर तरक़्क़ियात (विकास) व शिक्षा मंत्री बनाया गया।

---

[1] मूल पुस्तक के लेखक।
[2] मूल पुस्तक के लेखक।
[3] प्राथमिक अधिकार।

उन्होंने दीन व होनहार विद्यार्थियों को रियासत से छात्रवृत्ति दिलाकर मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ में शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजा। जहां से वे वकील बनकर एक उज्ज्वल दौर की जिम्मेदारियां सम्भालने के योग्य बन गए। तब इस शिक्षित नव-युवकों ने "अन्जुमन रियाया-ए-टोंक" की स्थापना की।

दूसरा विश्व युद्ध इसी काल में हुआ था। तब मिस्टर ओजियर ने इस संकट के समय में अपने सुप्रबन्ध एवम् सजगता से टोंक में महगाई न होने दी और साथ ही साथ सरकारी कोष को भी समृद्ध कर दिया। देशी चवंर-शाही मुद्रा, विशुद्ध चांदी के कम होने पर बन्द कर दी गई। हिन्दुस्तानी सरकार का सम्मिश्रित चांदी का सिक्का "कलदार" प्रचलित कर दिया गया। इससे रियासत को कई लाख रूपये का लाभ हुआ।

इस दौर के जुडिशियल मेम्बर रायबहादुर नारायण दास पंजाबी थे। मेम्बरी तरक्कियात (विकास) को कम कर दिया गया और साहिबज़ादा अब्दुलरज्जाक खाँ साहिब होम मेम्बर के सेवा निवृत हो जाने पर छबड़े के नाज़िम साहिबज़ादा मोहम्मद तोफीक खाँ साहिब को होम मेम्बरी पर पदोन्नति दी गई। युद्ध के इस आपातकाल में भी नवाब टोंक और टोंक की जनता ने अपनी सीमाओं से अधिक बरतानिया सरकार की सहायता की। सन् 1941 ई की जनगणना भी इसी दौर में हुई थी। क्रिकेट पवेलियन का सुन्दर भवन जो बरांडे में स्थित है नवाब सईदुद्दौला की यादगार है। टोंक की सरकारी टीम सआदत क्लब ने निरन्तर तीन वर्ष तक राजस्थान की विख्यात टीमों और अजमेर के कालेजों की टीमों को पराम्त कर कालीन शील्ड[1] जीता था

जुडिशियल मेम्बरी के अतिरिक्त एक आधुनिक कोर्ट स्थापित किया गया। जिसका मुख्य न्यायधीश मोहम्मद अमीर खां पठानी को बनाया गया और ओजियर साहिब अंग्रेज़ के सेवा निवृत होने पर मीर साहिब ही को वाईस प्रेसिडेन्ट रियासत टोंक बना दिया गया।

इस प्रकार एक दीर्घ काल पश्चात यह उच्चतम पद एक हिन्दुस्तानी को सौंपा जा सका। इससे रियासत में अंग्रेज़ गर्दी का दौर समाप्त हुआ, परन्तु देशी मन मुटाव तथा भेद-भाव प्रारम्भ हो गए।

---

[1] सम्भवतः यह काल्विन शील्ड है।

मोहम्मद मीर साहिब का देशी दौर आपसी खेंच-तान ही में व्यतीत हुआ। सैयद नसीरूद्दीन साहिब हैदर मेम्बर माल और जे लन्दन बूम साहिब आई जी पी का सेवा निवृत कर दिया गया। मुख्य न्यायधीश के पद पर ख़ान बहादुर ज़मीरूल इस्लाम साहिब बहादुर, सेवा निवृत सत्र न्यायधीश (यूपी) अलीगढ़ को नियुक्त किया गया मेम्बरी माल के लिए खान बहादुर सैयद अल्ताफ अहमद साहिब शेरी की सेवाए रियासत जयपुर से ले ली गई। मेम्बरी तरक्क़ियात (विकास) को पुन स्थापित किया गया इसके लिए लेफ्टिनेन्ट खान् साहिब मोहम्मद अहमद खाँ साहिब फारूकी एम ए की सेवाएँ अजमेर सरकार से प्राप्त की गई। इस किताब के लेखक अर्थात् मेरा स्थानान्तरण हैडमास्टरी सिरोंज से हैडमास्टरी टोंक पर सईदुद्दौला बहादुर की इच्छा से इसी दौर मे किया गया। परन्तु यह दौर अधिक समय तक न रहा। इस काल की विशेष बात जनता मे स्वतन्त्रता की लहर थी, जिसके पीछे कुछ आन्दोलन और निजि दृष्टिकोण अथवा स्वार्थ जैसे तथ्य गतिशील थे।

मोहम्मद मीर साहिब से इस आपात् दौर की व्यवस्था सम्भल न सकी। तब समय को समझने वाले नवाब ने एक अत्यन्त गम्भीर, अनुभवी, चतुर एवं दूरदर्शी अधिकारी खान बहादुर रहमान बख़्श साहिब क़ादरी बदायूनी की सेवाएँ यू पी सरकार लखनऊ से हासिल की, तब क़ादरी साहिब की नीति विधि ने स्थानीय आन्दोलन को अत्यन्त चतुरता से दबाया। सईदुद्दौला के मन मे क़ादरी साहिब का सम्मान इतना बढ़ गया कि वर्णन नहीं किया जा सकता। जनता की दृष्टि में भी उनका आदर एक सदाचारी एवम् बुद्धिमान् अधिकारी का बन गया इस दौर के मेम्बर माल खान साहिब मुजफ्फर मोहम्मद खाँ साहिब सेवा निवृत, डिप्टी कलेक्टर, यू पी थे खान बहादुर ज़मीरूल इस्लाम खाँ के चले जाने के पश्चात् लम्बी अवधि तक मुख्य न्यायधीश के पद पर किसी अधिकारी का भी चयन नहीं किया गया। इन्सपेक्टर जनरल पुलिस के पद पर हमीदुल्ला खाँ साहिब पंजाबी सेवा निवृत दिल्ली पुलिस की नियुक्ति की गई फारूकी साहिब मेम्बर तरक्क़ियात के वापस अजमेर चले जाने के पश्चात मेम्बरी तरक्क़ियात को दूसरी बार समाप्त किया गया।

सईदुद्दौला बहादुर की अभिरूचियाँ

नज़र बाग के प्रासाद की जलवायु जब सईदुद्दौला के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल

में आवास किया। प्रातः उठकर दर्शनाभिलाषियों और प्रार्थियों को समान भेंट अवसर प्रदान करना, किसी विशेष आदरणीय व्यक्ति या अधिकारी से किसी विशेष विषय में अकेले में वार्ता करना, प्रत्येक वादी के दुख दर्द को सुनना, उनकी दैनिक गतिविधियाँ थीं जो एक शासक का प्रथम दायित्व है। इससे निवृत्त होकर फिर रियासत के कार्यों को गति देने के लिए बंगला, वाईस प्रेसिडेन्ट या कमरा कौंसिल आलयों को पधारना उनका नियम था। मार्ग में यदि कोई वादी मिल जाता तो मोटर रुकवाकर उसकी बात ध्यान से सुनते और तत्काल दरबार सेक्रेटरी से उसके आवेदन पत्र पर कोई आदेश लिखवा देते अथवा कार्यालय पहुँच कर सम्बन्धित अधिकारी से मिलकर कुछ सुझाव कहते थे। निर्धारित दिनों और समय पर पेशी अपने ही प्रासाद में या कार्यालय हुजूरी में करते। इस पेशी को रियासत की भाषा में पेशी हुजूरी कहते थे।

क्रिकेट और आखेट में विशेष रुचि रखते थे। हिन्दुस्तान के ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों को टोंक बुलाकर [illegible] क्रिकेट क्लब के नाम से एक [illegible] में अपने जेब खर्च से खोल रखी थी। जिसने अपने समय में राजस्थान [illegible] को परास्त कर कालविन शील्ड अजमेर में जीती थी। यही नहीं [illegible] में भी क्रिकेट खेलने के शौक को अपना अधिक सहायता से [illegible] था और टोंक में प्रत्येक वर्ष क्रिकेट का एक टूर्नामेन्ट आयोजित किया जाता था जिसमें मईदुद्दौला [illegible] अपने व्यय से टीमों को आमंत्रित करते [illegible] और उन्हें प्रोत्साहित करते थे।

क्रिकेट नवाब के मनोरंजन और अपने [illegible] की पूर्ति का एक साधन बन गया [illegible] पहुँचा था। [illegible] ध्येय था और इसी कारण वह अपने [illegible] जनता के दिल के [illegible] बन गए थे।

तीसरे पहर को [illegible] ख्वास्टन क्लब, फिरोज बाग [illegible] में [illegible] वृद्धावस्था के बावजूद [illegible] का स्वयं भी अच्छा [illegible] करते थे परन्तु अन्य शक्तिशाली खेल यथा फुटबाल, वालीबाल और हॉकी का मात्र नवयुवकों को प्रोत्साहित करने के लिए इन

खेलों के मेचों को देखने पर ही सन्तोष करते थे। बाह्य प्रदर्शन के पाबन्द तो न थे, परन्तु धार्मिक विद्वानों और शरआ का अत्यन्त आदर करते थे और ऐसा ही पण्डित महाशयों का उर्दू, हिन्दी के कवियों का भी। मुशायरों में सम्मिलित होते और स्वयं का कलाम (रचना) किसी अन्य से पढ़वाते थे। पहले आपका काव्य नाम "सईद" था और बाद में "मुख़्तार" कर लिया था। हिन्दी (हिन्दुस्तानी) भाषा में "राज" काव्य नाम था। शायरी में आपके गुरू मौलवी हाफिज "जाम"[1] साहिब थे जो अत्यन्त सदाचारी (मुत्तकी) होने के साथ-साथ ड्रामा लेखक भी थे। रात्रि में नाटक ग्रह में प्रायः नाटक या सिनेमा देखा करते थे जो अपनी निजि व्यय से स्थापित किया था। जनता को भी इसमें निर्धारित दिनों में जाने की अनुमति टिकट लेकर होती थी। शेरों का शिकार प्रत्येक वर्ष मार्च अप्रैल में पतझड़ के मौसम में सिरोंज परगना के वन लटेरी में जाकर खेलते थे और सैकड़ों शेर मार लेने पर भी यह शौक कम न होता था। मछली वह अत्यन्त चाव से खाते थे जिसे स्वयं शिकार करते थे। उद्यान लगवाने और सुन्दर रंग और मधुर आवाज परिन्दों को पालने और शिकारी परिन्दों यथा बाज के शिकारी करतबों को देखने का भी शौक रखते थे। हैजे के प्रकोप के समय में अपनी नींद और राहत को त्याग कर मौहल्ला-मौहल्ला औषधि लेकर फिरते थे और उनकी यह विशेषता ऐसी है जिसका उदाहरण नहीं मिलता।

इसी प्रकार दूसरे विश्व युद्ध के समय में खाद्यान्न की कमी को और उसकी महगाई को दूर करने के उद्देश्य से गाँव-गाँव फिरते और खाद्यान्न एकत्रित करते थे। कृषकों से महगे दामों पर खाद्यान्न क्रय करके जनता को सस्ते दामों में विक्रय कराते थे। यह एक वास्तविकता है जिसके गवाह टोंक के निवासी स्वयं हैं। इस प्रकार बहुत सी विशेषताओं में वह अमीरुद्दौला बहादुर नवाब मोहम्मद अमीर खाँ का उदाहरण थे और कुछ में उनसे भी बढ़-चढ़कर थे। अंग्रेज़ों के हिन्दुस्तान छोड़ देने से पूर्व ही रियासत के अंग्रेज़ों को एक-एक करके यहा से रवाना करना और फिर समस्त प्रबन्ध अपने हाथ में लेकर सर्वाधिकार राजनीति के साथ शासन करना इनकी जग ज़ाहिर विशेषताएं थी, जो उनसे पूर्व के नवाबों में किसी में न थी। विद्वान होने के कारण वह एक अच्छे वक्ता थे, आवाज भारी और ऊंची थी। हज़ारों की भीड़ में बिना हिचकिचाए भाषण देते थे और जनता की ओर से कैसा भी एड्रेस प्रस्तुत किया जाए

[1] 'जाम' का देहान्त वर्ष 1949 में हुआ (वाक़यात पृष्ठ सं [illegible])

उसके बिन्दुओं को मस्तिष्क में रखकर समय पर तत्काल एक गम्भीर और प्रभावयुक्त भाषण करते थे। स्मरण शक्ति इतनी अच्छी थी कि किसी व्यक्ति को एक बार देख लिया तो उसकी शक्ल और नाम भी मस्तिष्क में सुरक्षित कर लेते थे। शहर के प्रत्येक अच्छे और बुरे व्यक्ति से न केवल जानकारी रखते थे वरन् उसके मौहल्ले और घर और उसकी गतिविधियों से भी जानकारी रखते थे। बुरे व्यक्तियों के सम्बन्ध में प्राय पुलिसवालों का भी मार्ग-दर्शन करते थे। अधिकतर महत्त्वपूर्ण अपराधों का पता भी उनके अनुमान से सही तौर पर लग जाता था। आदमी की पहचान करने में आपका कोई उदाहरण नहीं मिलता। प्रत्येक व्यक्ति की हृदय-दशा को पहचानने में अत्यन्त दक्षता रखते थे क्षमा करना और देखते हुए भी अनदेखा करना ऐसे गुणों से बड़े और छोटे सभी लाभान्वित होते रहते थे। मानवता के देवता थे। किसी के काम को रद्द कर देना या उसके मुँह पर नहीं कहना तो जानते ही न थे चाहे उसके काम को पूरा कर देने में कोई अनियमितता ही क्यों न करना पड़े। बालकों पर वात्सल्य भावना इस सीमा तक थी कि जब अपनी रियासत के किसी स्कूल में पधारते तो मुँह मांगा और उचित अवकाश भी प्रदान करते थे और मिठाईयाँ भी वितरित कराते। अपने सेनिमा का एक शो भी विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क कर देते, स्वभाव में गम्भीरता युक्त खुश मिज़ाज़ी भी थी। अप्रसन्नता के समय में भी सभ्यता को ज़बान और हाथ से न जाने देते थे, वरन् अपने विरोधियों और बुरा चाहने वालों के साथ भी अत्यन्त अच्छा व्यवहार करते थे। जब किसी से किसी बात पर दुःख पहुँचता तो, दूसरे समय उसके सामने आते ही उसे गले लगा लेते और उसकी भूल को माफ़ कर देते थे। इस प्रकार आपका शासनकाल टोंक के इतिहास में सच्ची आज़ादी का स्वर्णिम काल कहलाने का अधिकारी है।

इसी प्रकार अपना स्वर्णिम शासनकाल व्यतीत कर मसाने के रोग से ग्रस्त होकर 23 मई सन् 1947 ई को लगभग दो बजे दिन शुक्रवार को परलोक सिधार गए। कब्रस्तान मोतीबाग़ में आपको दफ़नाया गया। इस पुस्तक के लेखक अर्थात मैंने भी आपकी नमाज़े जनाज़ा (मृत्यु पर पढ़ी जाने वाली नमाज़) में जो जामा मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे पढ़ी गई, सम्मिलित हुआ था। आपके शव के चेहरे से जीवन जैसी रौनक़ दफ़न करते समय भी देखी गई—

ख़ुदा बख़्शे बहुत सी ख़ूबियाँ थीं मरने वाले में।।

خدا بخشے بہت سی خوبیاں تھیں مرنے والے میں

इनकी बड़ी बेगम से जो साहिबज़ादा मोहम्मद इस्हाक़ ख़ाँ साहिब अर्थात आपके चाचा की पुत्री थी कोई सन्तान नहीं हुई जो राजस्थान में प्रचलित कानून के अनुसार रियासत का उत्तराधिकारी होता। शेष पुत्रगण सन्तान का ब्योरा निम्न प्रकार है।

शजरा मौलवी हाफ़िज़ नवाब सर सआदत अली ख़ाँ साहिब बहादुर

(1) *साहिबज़ादा सादिक़ अली ख़ाँ*

(2) *साहिबज़ादा मज़हर अली ख़ाँ*

(3) *साहिबज़ादा अशफ़ाक़ अली ख़ाँ*

(4) *साहिबज़ादा मोहम्मद अली ख़ाँ*

(5) *साहिबज़ादा मुबारक अली ख़ाँ*

(6) *साहिबज़ादा साबिर अली ख़ाँ*

(7) *साहिबज़ादा मुख़्तार अली ख़ाँ और*

(8) *साहिबज़ादा अनवर अली ख़ाँ*

रियासत के क़ानून के अनुसार और टोंक की जनता की सर्वसहमति से नवाब (स्व) के सौतेले भाई साहिबज़ादा मोहम्मद फ़ारूक़ अली ख़ाँ साहिब को हिन्दुस्तान की अंग्रेज़ सरकार ने 31 मई, 1947 ई को वैध उत्तराधिकारी स्वीकारते हुए सिंहासन आसीन कराया। यह दरबार, अंग्रेज़ एजेन्ट देवली के नेतृत्व में कोठी

नवाब सईदुद्दौला बहादुर के दौर के प्रसिद्ध व्यक्ति

इस दौर से कुछ पहले ही दौर इब्राहीमी या खलीलों में हकीम मौलाना बरकात अहमद साहिब (र.अ.) का वर्णन आ चुका है। परन्तु इस परिवार द्वारा विद्या प्रदान एवं प्रसार का कल्याणकारी कार्य इस दौर में भी जारी रहा इसलिए हकीम साहिब के जीवन का और वर्णन सहित उल्लेख करना यहाँ आवश्यक समझा गया।

धार्मिक तथा सामाजिक मूल विद्याओं तथा उनकी शाखाओं के ज्ञाता एवं अपने काल के एक मात्र विद्वान एवं दक्ष मौलाना सैयद बरकात अहमद साहिब बिहारी व टोंकी का जन्म टोंक में सन् 1280 हिजरी में हुआ। आपके पिताश्री हकीम दाईम अली साहिब (र.अ.) टोंक रियासत के विशेष हकीम थे। मीर नगर जिला पटना प्रान्त बिहार के सादात (सैयद) परिवार के आदरणीय सदस्य थे। आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने सम्बन्धी और बिहार के प्रसिद्ध विद्वान मौलाना मोहम्मद अहसन गीलानी से ग्रहण की थी। हदीस अर्थात मोहम्मद साहिब के शुभ कथनों की विद्या मौलाना आलम अली नगीनवी मुरादाबादी से ग्रहण की थी। हिकमत (वैद्य विद्या) की शिक्षा ग्रहण करने के लिए टोंक आए और अपने पिता हकीम दाईम अली साहिब से यह विद्या पढ़ना प्रारम्भ की।

नवाब मोहम्मद अली खाँ (स्व.) के शासन काल में **हकीम दाईम अली साहिब (र.अ.)** को नवाब के उत्तराधिकारी का संरक्षक भी बनाया गया। फिर जब नवाब इब्राहीम अली खाँ (स्व.) उत्तराधिकारी नवयुवक अवस्था में नवाब घोषित किए गए तो हकीम साहिब न केवल विशेष हकीम बने वरन् मुख्यमंत्री के पद पर भी नियुक्त किए गए। आपको खान् की उपाधि भी प्रदान की गई। एक गाव जागीर में भी दिया गया। सैयद साहिब का विवाह ज़िला मुज़फ्फर नगर के कस्बा फुलत के उस परिवार में हुआ था जिसका सम्बन्ध इमामुल-उलैमा हज़रत शाह वली

उल्लाह साहिब मोहद्दिस देहलवी (र.अ.) से था, और उन ही (शैख) बीबी साहिबा से हकीम बरकात अहमद साहिब (र.अ.) पैदा हुए, जो अपने समय में एशिया के गौरवमय विद्वान बनकर चमके। हकीम दाईम अली साहिब ने अपने होनहार सुपुत्र की उच्च शिक्षा के लिए बिहार के प्रसिद्ध विद्वान मौलाना लुत्फ़ अली साहिब को टोंक बुलाया था। आपने मौलाना मोहम्मद साहिब टोंकी[1] से हिदाया का अध्ययन किया। टोंक के सीमित क्षेत्र में शिक्षा पूर्णत ग्रहण करने पश्चात् फिर आप शमसुल-उलोमा मौलाना अब्दुल हक़ साहिब खैराबादी के विद्यालय रामपुर चले गए ऐसे प्रख्यात गुरु की सेवा में ऐसे आज्ञाकारी शिष्य ने पन्द्रह वर्ष व्यतीत किए और धर्म विद्या पूर्णत ग्रहण की।

माकूलात[2] की विद्या पूर्ण करने के पश्चात् गुरु की अनुमति से अपने वास्तविक मामा मौलाना मोहम्मद अय्यूब साहिब मोहद्दिस फुलती काज़ी, रियासत भोपाल की सेवा में हदीसे-नबवी (स. अ. व.) के लिए पहुंचे, एक वर्ष से अधिक समय भोपाल में ठहर कर टोंक आ गए। आयु के अन्तिम भाग में एक सूफी विद्वान हज़रत मच्छली शाह हैदराबादी से सम्बद्ध (बेअत) हो गए थे जब आप धर्म विद्या से निवृत हुए तो आपके पिता श्री हकीम दाईम अली साहिब की आयु पचास वर्ष हो चुकी थी। शरीर के अंग सुदृढ़ थे, परन्तु सूफ़ी मत के अनुयायी होने के फलस्वरूप एकान्त में पूजा-अर्चना, ज्ञान ध्यान करने से स्वभाव एकान्त में रहने का हो गया था। उन्होंने नवाब साहिब से निवेदन करके अपने भाग्यवान सुपुत्र को अपने स्थान पर हकीम नियुक्त करा दिया और इसी पद पर हुकूमत के हकीम साहिब ने भी आजीवन सन्तोष किया। आपकी आयु 67 वर्ष की हुई। प्रारम्भ में अध्यापक थे, फिर रचनाकार हुए और अन्त में एक सूफ़ी साफ़ी सन्त सद्भावी, धर्म पालक और ज़ाहिद बन गए थे। रसूल (स.अ.) की श्रद्धा में "हज्जे-बेअतुल्लाह" से निवृत होकर मदीना शरीफ़ पहुँचे और हुज़ूर

---

[1] मौलाना मोहम्मद हसन साहिब, मौहल्ला छावनी, मस्जिद के पीछे वाले मकान में निवास करते थे।

[2] हिकमत विद्या अथवा फ़लसफ़े की (दर्शन शास्त्र) विद्या।

सलल्लाहो-अलेहे वसल्लम् की समाधि (रोज़ए अक़दस) पर उपस्थित होकर दुरूद-व-सलाम भेंट स्वरूप अर्पित किए। दुरूद-व-सलाम का अर्थ है वो प्रार्थना एवम् नमन जो नबी (स अ) की शान में पढ़े जाते हैं। फिर वहीं से मिश्र व फ़िलस्तीन की यात्रा करके हिन्दुस्तान वापस आ गए। इस प्रकार से आपको दो बार हज यात्राए करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ समय ईख़तेलाज अर्थात हृदय गति बढ़ने के रोग से ग्रस्त होकर टोंक ही में देहान्त हुआ। टोंक में उनके शिष्यों में मौलाना मोइनुद्दीन साहिब (र.अ), मौलाना मोहम्मद अली ख़ाँ साहिब (र.अ) उपनाम मौलवी नन्ने साहिब, मौलाना मोहम्मद इरफ़ान साहिब (र.अ), हाफिज़ मौलवी अब्दुसत्तार ख़ाँ साहिब (र.अ) और मेरे भ्राता मौलवी फय्याज़ ख़ाँ साहिब (र.अ) विशेष हैं।

हकीम साहिब के केवल एक सुपुत्र हकीम मौलाना मोहम्मद अहमद साहिब थे जो अपने पिता के वास्तविक उत्तराधिकारी थे। इसलिए आपके पिता के देहान्त पश्चात् आप नवाब टोंक के हकीम नियुक्त हुए। पठन-पाठन भी प्रारम्भ कर दिया परन्तु आपकी आयु ने आपका साथ न दिया और दो-तीन वर्ष पश्चात् हैज़े के रोग से ग्रस्त होकर परलोक सिधार गए।

आपके तीन सुपुत्र थे। एक महमूद मियाँ, दूसरे अहमद मियाँ[1] और तीसरे मसूद मियाँ। देहली में हकीम विद्या और अन्य शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् तीनों नवयुवक एवम् भाग्यशाली महानुभावों ने टोंक से प्रस्थान किया और पाकिस्तान चले गए। तब से इस परिवार के सुपुत्र हकीम सैयद जहीर अहमद साहिब बरकाती है।

मौलाना मोईनुद्दीन साहिब (र. अ.) टोंकी व अजमेरी—

आप यू पी के एक नो-मुस्लिम परिवार में जन्मे थे। आपके पिता मुन्शी अब्दुर्रहमान साहिब बलियापुर के नो-मुस्लिम तेली थे। आपने अपनी पत्नि सहित इस्लाम धर्म स्वीकार किया था और दानापुर (बिहार) में आपका घर था। वहाँ से किसी तरह आप अजमेर आए और अपनी नौकरी के सम्बन्ध में सरकार बरतानिया-हिन्द की ओर से अजमेर से देवली आए। और वहाँ से सेक्रेटरी कौंसिल आलिया, बन कर

[1] सही नाम अख़्तर मियाँ था। इन का देहान्त पाकिस्तान में हो गया है।

टोंक आ गए। सन् 1309 हिजरी में मौलाना मोईनुद्दीन का जन्म हुआ और टोंक ही में विद्या ग्रहण, धार्मिक विद्या, ज्ञान अर्जन पूर्ण करके शैक्षणिक क्षेत्र से निवृत हुए, आप अल्लामा हकीम बरकात अहमद साहिब (र.अ.) के ऐसे शिष्य थे जिन पर गर्व किया जाता था। जब आपने पठन पाठन का क्रम प्रारम्भ किया तो ढाई वर्ष तक मदरसा नोअमानिया लाहौर के प्रधानाचार्य रहे इसके पश्चात् अजमेर शरीफ़ आकर दरगाह शरीफ़ की सीमा में अकबरी मस्जिद में मदरसा मोईनुलहक स्थापित किया और एक समय तक उसमें पढ़ाते रहे।

फिर जब स्व. नवाब उस्मान अली खाँ निज़ाम साहिब हैदराबाद दरगाह शरीफ के दर्शन को अजमेर पधारे तब उन्होंने आपके धार्मिक मदरसे का भी निरीक्षण किया और आपके अध्यापन से प्रभावित होकर खिलअत शाहाना अर्थात शाही परिधान से आपको सम्मानित किया और एक हजार रुपये नकद अर्पित किए। तब से मौलाना ने अपने मदरसे का नाम मोईनिया उस्मानिया रख दिया। फिर निज़ाम साहिब या रियासत हैदराबाद की ओर से रु 12,500 मासिक की सहायता नियत कर दी गई।

फिर जब मदरसे के कार्य कर्ताओं से आपका विरोधाभास बढ़ने लगा तो आपने त्याग-पत्र दे दिया और एक दूसरा मदरसा हनीफ़िया सूफिया के नाम से स्थापित किया। आपकी आयु के अन्तिम समय में आप जिहादी भावना से प्रभावित होकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध हो चले थे। इसलिए आपको खिलाफ़त कमेटी राजस्थान की अध्यक्षता स्वीकारने के अपराध में दो साल तक अंग्रेजों की कै़द में रहना पड़ा परन्तु न किसी शक्ति से कभी भयभीत हुए और न सत्य कहने में कभी हिचकिचाए।

इब्राहीमी शासनकाल के पश्चात् सईदी काल[1] का प्रारम्भ सईदुद्दौला नवाब सर मोहम्मद सआदत अली खाँ साहिब के काल से प्रारम्भ हुआ। वैसे तो इस काल में इब्राहीमी दौर के प्रसिद्ध विद्वान और व्यक्तित्व थे परन्तु इस जागरूक नवाब ने भी

---

[1] नवाब सआदत अली खाँ का शासनकाल।

कुछ स्थानीय एवम् बाह्य महाशयों को उच्च पदों पर नियुक्त करके राज्य शासन व्यवस्था में चार चाँद लगा दिए। रियासत की शासन प्रणाली की प्रक्रिया भूतकाल से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नत हो गई। इस प्रकार सईदी दौर को रियासत टोंक में स्वर्णिम दौर समझा जाने लगा। इसलिए कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों का विवरण अंकित किया जा रहा है।

मौलवी हाफिज मोहम्मद सआदत अली खां को उनके पिताश्री के परलोक सिधारने के पश्चात ही नवाब बनाया गया एक विख्यात अंग्रेज मेजर फ्रेज़र को आपका सलाहकार और कौंसिल औलिया का वाईस प्रेसिडेन्ट नियुक्त किया गया। इसके साथ ही फाईनेन्स मेम्बरी का पद भी रहा। उस समय मेजर साहब के फाइनेन्स असिस्टेन्ट, राय बहादुर कुलदीप चन्द थे। जो पूर्व एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना के हैड-आफिस अजमेर के सेवा निवृत्त ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट भी रह चुके थे इसलिए उन्होंने फाइनेनशियल व निर्माण विभागों में अत्यधिक उन्नति करके दिखाई बनास नदी पर फ्रेज़र ब्रिज जिसने टोंक के जीवन एवम् व्यापार में अत्यन्त लाभदायक अध्याय जोड़ा है, अब तक भी मौजूद है।

मेजर फ्रेज़र के पश्चात नवाब के दूसरे सलाहकार और वाईस प्रेसिडेन्ट मेजर बारनेट थे। उनके ज़माने में नवाब को हिन्दुस्तानी सरकार ने नाईट हुड अर्थात सी. एस. आई. का सम्मान प्रदान किया था।

मेजर बारनेट के तीन वर्ष के दौर के पश्चात् एडवाईज़री का पद समाप्त कर दिया गया। मेजर एण्डरसन वाईस प्रेसिडेन्ट कौंसिल औलिया और फाईनेन्स मिनिस्टर बनकर आए परन्तु इस दौर में जनता की आवाज में कुछ प्रभाव पैदा हो चला था इसलिए मेम्बरी तरक्कियात का एक नवीन विभाग अस्तित्व में आया। जिसके प्रथम मेम्बर टोंक ही के एक गौरवमय, देशभक्त मौलवी मौला बख्श साहिब, एम. ए. थे। आप अलीगढ़ मोहम्मडन कालेज के जमाने के एम. ए. और आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी इंग्लैण्ड से भी एम. ए. थे। रियासत हैदराबाद दक्कन की फॉरेस्ट ऑफिसरी के ज़माने

---

[1] नवाब सआदत अली खाँ का शासनकाल।

में आपको बरतानिया सरकार की ओर से खान बहादुर की उपाधि प्रदान की गई थी, इसलिए ख़ान् बहादुर हाजी मौला बख़्श साहिब कहलाते थे (हाजी हज का कर्तव्यपूर्ण करने के कारण और मौलवी शेरीअते इस्लाम मे पूर्ण जानकारी होने, धर्म विद्या मे प्रेम होने और शरआ की पालना करने वाले तथा सूरत व वस्ता मे भी सुन्नते रसूल (स.अ.) के अनुपालक होने के कारण मौलवी कहे जाते थे) इस प्रकार धर्म और दुनिया की समझ उनमें अत्यन्त अधिक थी। इसलिए उन्होंने अपने कुछ वर्षीय दौर मे अपनी मातृ-भूमि और उसके सुपुत्रों अर्थात नई नस्ल के विकास तथा उन्नति के लिए मात्र प्रेरक का काम किया। आगे चलकर अंग्रेजों के बाद विकास, निर्माण शिक्षा वन तथा चिकित्सालय विभाग भी इन ही विद्वान को सौंप दिये गए थे।

हैदराबाद की सेवा से निवृत होने के पश्चात मातृभूमि की सेवा भावना मे टोंक आए और अपनी शालीनता और साहस से मेम्बरी नायकवयान का पद प्राप्त किया। योग्यता व परिश्रम से रियासत के महत्वपूर्ण विभागो की प्रबन्ध व्यवस्था में भी अभिशंसनीय सुधार कर दिखाया। और प्रत्येक विभाग मे उन्नति की। ऐसा उन्होंने अकेले ही नहीं किया वरन् एक एक करके विदेशी अधिकारियो को टोंक से चलता किया और उनके स्थान पर टोंक के निवासी जो अपनी योग्यता के आधार पर विदेशों में विभिन्न पदों पर थे उन्हे मातृभूमि की सेवा भावना की प्रेरणा देकर अपने साथ काम करने के लिए टोंक आमन्त्रित किया और टोंक की पिछड़ी जनता में पक्का इरादा और विकास की भावना जागृत की जिसका श्रेय इस चिरागे अलादीन अर्थात खान् बहादुर हाजी मौला बख़्श साहिब को जाता है, टोंक की भावी नस्लों को उन्नतिशील बनाने के लिए हाई स्कूल को उन्नत कर इन्टर कालेज बनाया। डिग्री कालेज की योजना तैयार की। प्रत्येक विभाग के प्रशिक्षण की योजना के लिए छात्र वृत्ति प्रदान कर व्यक्तियो को विभिन्न स्थानों पर भेजा। अभिभाषक की डिग्री लेने तथा मास्टरी का प्रशिक्षण लेने अधिक विद्यार्थियों को मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ (यू पी) भेजा। इस दौर के अभिभाषक टोंक में आज भी चमक रहे है जो मौलवी मौला बख़्श साहिब (स्व) ही की देशभक्ति का प्रतिफल है। अन्त में कुछ हासिद ईर्षालु, अशिक्षित तथा

स्वार्थी, प्रभावी, स्वतन्त्र जनता के हाथों अपने विरोध और अपमान से तंग आने लगे और तत्कालीन नवाब की ओर से सहयोग भी न मिलने के कारण अपने पद से त्यागपत्र दे दिया वह अपने भव्य लक्ष्य पूर्ण न कर सके। परन्तु अपने देशवासियों को आने वाले समय से सतर्क करके अपनी बड़ी जायदाद जो रियासत हैदराबाद के शहर हैदराबाद दक्कन में थी, आपने अपनी इस सम्पत्ति के पांच सौ रुपये मासिक किराए को वहाँ के और टोंक के धार्मिक विद्यालयों में वक्फ़ (दान) कर दिया और कुछ स्थानीय अनाथालयों को भी देते रहे। आप टोंक के मौहल्ला रजबन के निवासी थे और अपने पूर्वजों के पैशे मे चौबदार थे। परन्तु आपने कभी चौबदारी नहीं की। आपके पिता शैख खुदा बख्श साहिब रियासत की सेना में मेजर थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा टोंक के हाई स्कूल में हुई जहाँ अब क्लेक्ट्री का कार्यालय है और कालेज की शिक्षा अलीगढ़ कॉलेज में हुई। आपने अपने मेम्बरी के दौर में नवाब के महल नज़रबाग के पास जो एक भव्य इमारत नातमाम कोठी के नाम से वीरान पडी थी उसकी मरम्मत करवाई और विकास विभाग उसमें स्थापित किया। आपके दौर के बाद जब यह विभाग समाप्त किया गया तो इसके कार्यालय भी हटा दिए गए। तब से इस विशाल भवन में हाई स्कूल और हायर सैकेण्डरी स्कूल की कक्षाए स्थापित की गई। आपके सईदिया दौर का सबसे बडा कारनामा देशी आन्दोलन के साथ टोंक के निर्धन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर शिक्षा एवम् प्रशिक्षण लेने के लिए भेजना था। ये धर्म का काम आपके चले जाने पश्चात् समाप्त हो गया। फिर विदेशी हवा चल पडी और यह तत्कालीन नवाब की नीति के अनुसार था। आपने जागरूक और शिक्षित नई नस्लों को रियासत में रोज़गार की ओर आकर्षित करने के लिए पेंशन का क़ानून बनवाया और अपने दौर मे सभी उच्च पदों पर आसीन विदेशी अधिकारियों को टोंक से बाहर पहुचवाया और उनके स्थान पर स्थानीय योग्य व्यक्तियों को अवसर प्रदान किये। टोंक के विख्यात सपूतों की सूची में आपका शुभ नाम, प्रथम स्थान पर है। अल्लाह तआला आपको परलोक में अच्छा स्थान व सम्मान प्रदान करे।

दुख यह है कि आप टोंक छोड़ने के बाद हैदराबाद चले गए यद्यपि टोंक भी आते-जाते रहे। परन्तु पिता प्रेम-वश एक बार अपनी पुत्री से जिनका नाम डॉ. अरशियाँ, था से मिलने कराची (पाकिस्तान) चले गए और वहीं कुछ दिन बीमार रहकर परलोक सिधार गए। मृत्यु तिथि 28 अगस्त, 1964 ई. है। तब आपकी आयु 95 वर्ष थी। इस प्रकार आप न हैदराबाद में दफ़न हो सके और न टोंक में।

परन्तु अधिक आश्चर्य और दुख यह है कि उनकी इतनी महत्वपूर्ण जीवन यात्रा पर अब तक न किसी ने उनकी जीवनी लिखी और न उनके नाम से कोई सदक़-ए जारिया (ऐसा नेक काम जिसके फलस्वरूप उसका सवाब उनको पहुँचे) नामज़द हुआ यद्यपि उनके प्रशंसक, आभारी अब भी टोंक में बहुत से हैं।

ख़ान बहादुर अब्दुत्तव्वाब ख़ाँ साहिब–

आप होम मेम्बर भी रहे सईदीया दौर के चन्द्रमा हैं आप अत्यन्त विशिष्टताओं के मालिक थे और साहिबज़ादा अब्दुलव्वाब ख़ान साहिब (स्व.) सदस्य कौंसिल के सुपुत्र थे। इसलिए स्वयं भी अत्यधिक विशिष्टताओं से परिपूर्ण थे होम मेम्बर बनने से पूर्व आप सेना के जनरल और नवाब के समीपस्थ गिने जाते थे आपको रियासत की ओर से "क़मरुल उमरा सदीक़ुल मुल्क सालार जंग" की उपाधि मिली हुई थी नवाब के चचेरे भाई होने के कारण विशेष सम्मानित भी थे। आपमें अहंकार क्रोध दिखावा दुख पहुँचाने और बदला लेने जैसी बुराईयाँ लेशमात्र भी न थीं। न ईर्षा और न ही किसी से मन में गांठ रखने की प्रवृत्ति थी। बस मीठे जल की भांति प्रत्येक तन मन में समा जाते थे। आप ही वह एक मात्र व्यक्तित्व था जो मेम्बरों के इन्क़िलाबात (आने वाले परिवर्तन) से सुरक्षित रहा यद्यपि इसके योग्य और भी अमीरिया परिवार में मौजूद थे किन्तु कारण यह था कि नवाब आपसे अत्यन्त प्रसन्न थे और अंग्रेज़ भी प्रसन्न थे अमीरिया परिवार तथा जनता भी सन्तुष्ट थी और यह सब कुछ इसलिए था कि आपसे अल्लाह तआला भी प्रसन्न था।

आपकी प्रतिष्ठा लगभग 50 वर्षों तक दो नवाबों के काल में उच्च शिखर

पर रही और आप वांछित आयु पर पहुंचने पश्चात् रियासत के नियमों के अनुसार सेवा निवृत्त हुए। आप अंग्रेज़ी ज्ञाता तो न थे परन्तु आपकी बुद्धिमानी और समझ-बूझ अत्यन्त तीव्र थी। धार्मिक विद्वान तो न थे परन्तु आपका मन और मस्तिष्क शरीअत व तरीक़त के सिद्धान्तों से लाभान्वित था। अत्यन्त चरित्रवान ईश्वर से डरने वाले, दयालु, सूफ़ी, धार्मिक नियमों के पालक और नमाज़ व रोज़े के कठोरता से अनुपालक थे अर्थात् अमीरिया परिवार में अपनी विशेषताओं में अपना उदाहरण आप थे।

यद्यपि खान बहादुर साहिबज़ादा अहमदीन खां साहिब (स्व.) [illegible] रियासत के नाईब (उप) करनाई (मालवा) भी इनकी विशेषताओं के मालिक थे परन्तु अंग्रेज़ी ज्ञाता होने के कारण इनमें शासन और शाही परिवार का अहंकार अधिक था और सूफ़ी मन का प्रभाव कम। इसलिए इनमें इतने न थे [illegible] थे। अपने विचारों पर अड़े रहते थे परन्तु आपके जैसे न थे [illegible] अंग्रेज़ों को भी गरदानते न थे। आपको उर्दू भाषा की पुस्तकों का अध्ययन [illegible] था। कार्यालय काम के समय पश्चात् अपने [illegible] में [illegible] कुतुबखाना में बैठ उर्दू की पुस्तकों का अध्ययन करते थे। [illegible] जानकारी अच्छी थी। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन को कभी [illegible] बाज़ी बटेर बाज़ी और दूसरे शौक़ों में नहीं लगाया। आपने एक पुस्तक [illegible] विशेष भाषा में [illegible] भी लिखी है [illegible] इतिहास है। आपकी [illegible]

[illegible]

बड़े संकट की समाधियों पर भी जाते रहते थे। दीन-दुखियों की सहायतार्थ गुप्त रूप से दान राशि निर्धारित कर रखी थी। आपको गिरे पड़े कागज़ात चुनकर अपने थैले में भरकर इन्हें कभी अनुपयोगी पानी के कुँए में ठण्डा करने का भी शौक था। चूंकि आपका शरीर कसरती न था इसलिए आयु के अन्तिम समय में आप [illegible] रोग से ग्रस्त हो गए थे। आश्चर्य की बात यह है कि [illegible] देने सामर्थ्य होने के बावजूद आप हज न कर सके और दाढ़ी रखने की सुन्नते रसूल [illegible] पर भी अमल[1] न कर सके। सन [illegible] ई० में आपका देहान्त हुआ और अपनी विशेषताओं से युक्त सुपुत्र साहिबज़ादा अब्दुल [illegible] खां साहिब को अपनी यादगार छोड़ा। इन्हें युवा अवस्था में तो शिकार में अभिरुचि थी और फिर अपना [illegible] [illegible] [illegible] प्राचीन पुस्तकों और अन्य [illegible] सामग्रियों तथा हस्तकलाओं के [illegible] और उन्हें सहेजने में अभिरुचि थी।

साहिबज़ादा खान बहादुर अहमदीन खां साहिब—

आप भी अपने [illegible] में सत्पुरुष[2] एवम् प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आप टोंक के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] पर [illegible] सदस्य थे। आपकी शिक्षा [illegible] [illegible] में हुई थी। शिक्षा ग्रहण पश्चात् आप यहीं [illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible] अध्यापक बना दिए गए। फिर राजकुमार के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बना दिए गए। इसी दौर में आपको गवर्नमेन्ट हिन्द की ओर से खान बहादुर की उपाधि प्रदान की गई। फिर इस पद से [illegible] निवृत्त होने पश्चात् आप अपनी मातृभूमि की सेवा की भावना से [illegible] [illegible] [illegible] और समय की नाड़ी पहचानते हुए [illegible] [illegible] अर्थात्

[1] पालन

[2] सद्पुरुष।

मौलवी मौला बख़्श के प्रस्ताव पर विशिष्टताओं से पूर्ण और आदमी को पहचानने में दक्ष टोंक नवाब ने आपको सिरोंज का नाजिम (प्रबन्धक) नियुक्त किया

सिरोंज (मालवा) के निवासी घूस देने और अधिकारियों को इसका अभ्यस्थ करने में अत्यन्त प्रसिद्ध थे परन्तु आपने अपनी निजामत के काल में वहा की हवा ही बदल डाली क्यों कि आपका न्यायालय घूस और सिफ़ारिश जैसी सामाजिक कुरीतियों में लिप्त न था।

आपकी प्रकृति में शुद्धता, अच्छे वस्त्र धारण करना, अच्छा भोजन करना, प्रसन्नचित्त रहना गम्भीरता रखना, सद्भाव रखना और सद्व्यवहार से लोगों के साथ व्यवहार करना आदि विशेषताएँ कूट-कूट कर भरी हुई थी। आपका कद (लम्बाई) मध्यम श्रेणी का था। शरीर गठा हुआ एवम् स्फूर्तियुक्त, आवाज़ भारी और ऊंची थी। नमाज़ रोज़े के अत्यन्त पाबन्द थे। नमाज़ जमात के साथ पढ़ते थे। टोंक में ठहरते समय और यात्रा में भी नमाज़ कभी नहीं छोडते थे। प्रत्येक नमाज़ी स प्रसन्न रहते थे। इसलिए कुछ धोखेबाज़ अपने स्वार्थ पूर्ती हेतु कुछ दिन पहले स साहिबज़ादा के साथ अस्थायी रूप से दिखावे की नमाज़ पढ़ना प्रारम्भ कर देते थे आप बड़े सत्यवादी थे। प्रतिज्ञा के धनी, स्थायी प्रकृति और समय के पाबन्द थे। नमाज़ी मुसलमान को लाभ और सम्मान देकर प्रसन्न होते थे, सिद्धान्तवादी इतने थे कि जब शिकार करने के लिए किसी स्थान का चयन कर लेते थे तो वहीं पहुँचकर शिकार खेलते थे। मार्ग में यदि कोई शिकार मिल भी जाता तो उसे छोड़ देते थे और उस पर गोली नहीं चलाते थे, यद्यपि वह कितनी ही ज़द (निशाने) पर ही क्यों न हो।

उस समय के अंग्रेज़ वाईस प्रेसिडेन्ट मिस्टर डी ई. ओजियर से किसी प्रबन्ध व्यवस्था के विषय में आपका वाद-विवाद हो गया था। परन्तु आप दबे नहीं त्याग-पत्र दे दिया। तत्कालीन नवाब के कहने पर भी आपने पुन नौकरी की ओर ध्यान नहीं दिया। शेष आयु एकान्त में रहकर व्यतीत की। इबादत (पूजा) एवम् तक़वा (संयम) में व्यतीत की। आपके कोई सन्तान न थी। अपने एक सेवक

के पुत्र को लेकर पाला था। अपनी सम्पत्ति का अधिकतर भाग दान कर गए और शेष अपने दत्तक पुत्र को दे गए। कुछ समय बीमार रहकर टोंक में ही देहान्त हुआ और मोतीबाग के क़ब्रस्तान में दफ़नाए गए। युवाकाल में क्रिकेट खेलने के अत्यन्त शौकीन थे, परन्तु नमाज की पाबन्दी इस हालत में भी करते थे। ज़ौहर (दोपहर) तथा असर (दोपहर पश्चात्) की नमज़ा पवैलियन के किसी भाग में पढ़ लिया करते थे। हृदय से मोमिन (सच्चे मुसलमान) और विचार से न्याय प्रियः और बोलने में अत्यन्त उत्तम भाषा का प्रयोग करते थे। सुनते सब कुछ थे परन्तु बोलते बहुत ही सम्भले हुए अन्दाज़ में एक विशेष मुस्कुराहट के साथ।

सैयद मोहम्मद उमर मियां—

सहायक अभियन्ता। आप सआदात (सैयद-वंश) क़ाफ़ला के प्रसिद्ध हसनी परिवार से थे। स्कूल स्तर की शिक्षा टोंक के हाई स्कूल में ग्रहण की। आगे चलकर स्नातक स्तर की शिक्षा में अत्यन्त होनहार साबित हुए। आपके बड़े भ्राता सैयद ज़ुबैर मियां ने आपको मोहम्मडन कॉलेज में शिक्षा दिलवाई। फिर आपने जर्मनी जाकर इन्जीनियरी की शिक्षा ग्रहण की और शिक्षा ग्रहण के पश्चात् आप रियासत भोपाल में और जूनागढ़ में भी इन्जीनियर रहे। जीवन के अन्तिम भाग में अपनी मातृ भूमि की सेवा हेतु मुख्य अभियन्ता बनकर टोंक रियासत में पधारे। आप गाज़ी मौलाना सैयद अहमद साहिब शहीद (र. अ.) की सुपुत्री की नस्ल[1] से थे। आप अत्यन्त अतिथि सत्कार करने वाले, अच्छा बोलने वाले किन्तु सादा आचार-विचार के व्यक्ति थे। लाभ पहुँचाना आपकी प्रकृति थी। उस समय देशी गर्दी (स्थानीय पक्षपातपूर्ण प्रचलन) से प्रभावित होकर रियासत की अव्यवस्था को देखते हुए त्याग पत्र दे दिया। वापस जूनागढ़ चले गए और वहीं देहान्त हुआ। आपने जापान की यात्रा भी की थी। आपके अनुज सैयद तलहआ मियां ओरिएन्टल कालेज लाहौर में अरबी के प्रोफेसर थे। मोलवी फाज़िल और अरबी में

---

[1] वंश

एम ए होने के कारण वहा की दुनिया में प्रसिद्ध थे। यह भी अत्यन्त खुश-मिज़ाज सदाचारी (मुत्तकी), वली और सूफ़ी विशेषताओं मे युक्त, अनूठे प्रकार के उदाहरण देने योग्य, मोमिन (सच्चे मुसलमान) थे। भारत के विभाजन के समय सम्पूर्ण परिवार टोंक से पाकिस्तान पलायन कर गया।

मुंशी मोहम्मद इब्राहीम साहिब। भ्रमण कर्ता जापान—

आप भी मौहल्ला काफ़ला के निवासी थे, स्कूल स्तर की शिक्षा टोंक ही में ग्रहण की थी। फिर दस्तकारी या हस्तकला और कारीगरी (सनअत व हरफत) के लिए निजि रूचि से आपने जापान की यात्रा और भ्रमण किया था। कुछ समय वहा रहकर सूती उद्योग का कार्य सीखा और अपनी मातृ भूमि टोंक आकर निजि पूजी मे एक छोटा-सा वस्त्र बनाने का कारखाना मीरसामान साहिब, जो मौहल्ला शोरगरान टोंक में स्थित है, में खोला और कई नव युवकों को कपड़ा बुनना सिखलाया। आपको टोंक के नव युवकों में शिक्षा जागृत करने का अत्यन्त शौक था और वास्तव में अत्यन्त लगन भी थी विद्या ग्रहण करने पश्चात् नौकरी करने के स्थान पर दस्तकारी तथा व्यापार करने की प्रेरणा दिया करते थे। आपकी विद्या सेवा भाव इतना जागृत था कि प्रतिदिन हाई स्कूल प्रारम्भ होते ही आ बैठते थे और कुछ देर तक सम्बन्धित स्कूल की प्रत्येक ग़लती या उदासीनता को एक पन्ने पर नोट करके हैड मास्टर को दे दिया करते ताकि सुधारात्मक कार्यवाही की जा सके। उस समय तक टोंक में एम. ए की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था और विद्यार्थियों को कालेज शिक्षा ग्रहण करने टोंक से बाहर जाना पड़ता था। आपने भी स्वय की ज़िम्मेदारी पर रात्री के समय सरकारी स्कूल ही के एक बडे कमरे मे लाईट का प्रबन्ध करके एम ए की शिक्षा की कक्षाए खोलीं और उसका व्यय रियासत के विकास विभाग के ज़िम्मे डाल दिया। जिसके लिए मौलवी मौलाबख़्श साहिब, मेम्बर विकास व शिक्षा ने अत्यन्त सहयोग प्रदान किया। मुशी साहिब बिना किसी अलाउन्स के उस नाईट कालेज की निगरानी निरन्तर स्वयं ही किया करते थे अभिशन्सनीय बात यह है कि कालेज के विद्यार्थियों का परिणाम विश्वविद्यालय की परीक्षा में शत-प्रतिशत ही रहा करता था. आपने लगभग 50 वर्ष की आयु में प्राण त्याग दिए और अपने जीवन काल में ही अपने दो पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलवाई।

साहिबज़ादा मोहम्मद इल्यास खाँ साहिब। शिकार अधिकारी—

आप नवाब सईदुद्दौला बहादुर के वास्तविक चाचा साहिबज़ादा मोहम्मद इस्हाक़ खां साहिब के बड़े पुत्र थे आप चूंकि विनायती बेगम अफ़गान नस्ल से थे इसलिए शानदार व्यक्तित्व और सुन्दर शक्ल सूरत और लाल और सफेद रंग के सुदृढ़ और स्वस्थ शरीर के अत्यन्त मद्‌भाषी व हंस मुख व्यक्ति थे। उर्दू फारसी भाषा भलि भांत बोल सकते थे। तृतीय अफगान युद्ध के पश्चात् हिन्दुस्तान की बरतानिया सरकार ने पठान रियासतों और प्रान्तों के चुने सरदारों का एक दल सद्‌भावना एवम् मित्रता हेतु सम्बन्ध बढ़ाने के लिए काबुल भेजा था, जिसमें रियासत टोंक की ओर से आपका चयन किया गया था तब आप इस हिन्दुस्तानी दल के साथ कई महिनों तक काबुल में अफगानिस्तान सरकार के अतिथि रहे थे। शिकार का आपको बाल्यकाल से ही शौक़ था। इसलिए आपने शिकारी कुत्ते पाल रखे थे और अपनी शिकारी दक्षता के कारण, आपने आला नवाब के साथ प्रत्येक वर्ष शिकार खेलने सिरोंज लटेरी व छबड़ा परगनात (मालवा) जाया करते थे। आपके कोई सन्तान न थी इसलिए अपने सेवकों के बालकों का पोषण किया करते थे। आपके वास्तविक अनुज साहिबज़ादा सरदार मोहम्मद खां टोंक के एक अंग्रेज़ी शिक्षित और अंग्रेज़ी सभ्यता के सूचक थे। मेओ कालेज की शिक्षा से निवृत होने पश्चात् कालेज के प्राचार्य की सिफारिश पर आपने हिन्दुस्तान की बरतानिया सरकार की सेवा स्वीकार कर ली थी। राज्य वित्त अधिकारी से निरन्तर उन्नति करके बम्बई सीमा की राजकीय सेवा में कराची चले गए और सिंध के कलेक्टर भी हो गए थे। सेवा निवृत होने के पश्चात् जूनागढ़ रियासत के दीवान भी रहे और अन्त में अपनी मातृ भूमि टोंक आकर बस गए।

आपको अंग्रेज़ी भाषा के समाचार पत्र इल्लसट्रेटेड वीकली के पढ़ने और दुर्लभ वस्तुओं के जमा करने का अत्यन्त शौक़ था। वर्ग पहेली हल करने में व्यस्त रहते थे। सेवा निवृत जीवन में आपने अपनी हवेली की सीमा में एक आधुनिक प्रकार की कोठी बनवाई जिसके हर रोशनदान और दरवाज़े पर अंग्रेजी में एस. एम. के. शब्द

का मोनोग्राम लगा हुआ है। यह शब्द उनके नाम का संक्षिप्त है। उच्च स्तर के अंग्रेज़ों से आपके अच्छे सम्बन्ध थे।

शानदार जीवन व्यतीत किया, राजपूताना की राजपूत रियासतों में आपका बड़ा मान सम्मान था। आपके सन्तान भी थी। अन्जुमन रिआया[1] की भावना से आप प्रभावित थे और इसलिए उसकी सहायता भी करते रहते थे और सम्भवतः यह भावना जनता को नवाब के विरूद्ध उठाने के लिए थी क्योंकि नवाब ने उनके सेवा-निवृत्त काल में उन्हें किन्हीं कारणवश वाईस प्रेसिडेन्ट्री रियासत टोंक पर नियुक्त करना उचित नहीं समझा था। आप सम्पर्क, सम्बन्ध और व्यवहार में अत्यन्त सद्भावी तथा व्यवहारकुशल और अतिथि सत्कार में अग्रणीय थे परन्तु अनुशासित थे। प्रकृति में रख-रखाव एवम् प्रदर्शन भी था। अपना पूरा जीवन टोंक से बाहर रहकर अत्यन्त सफलता से व्यतीत किया और आयु के अन्तिम भाग में जब टोंक आकर रहे तो मस्तिष्क की दशा निरन्तर बिगड़ती चली गई। यहां तक कि अपने ही हाथों से अपने मूल्यावान अजायब खाना[2] तथा कोठी को बरबाद कर डाला। आपके मस्तिष्क पर फॉलिज[3] के प्रभाव से ब्रेन हेमरेज हुआ और इसी के दुख से देहान्त हुआ।

साहिबजादा अब्दुल शकूर खाँ साहिब—

आप नवाब मोहम्मद अली खाँ के सुपुत्र साहिबजादा मोहम्मद मिदाक खाँ साहिब के बड़े पुत्र थे। इसलिए सईदुद्दौला के चाचा के लड़के (चाचा जाद भ्राता) और जीजा भी थे स्वभाव में सादगी और व्यवहार में सद्भाव ऐसे गुणों में आप अतुल्य थे। आपने प्रारम्भिक शिक्षा टोंक ही के स्कूल में ग्रहण की और

[1] जनता की पार्टी जो नवाब, टोंक के सामने जनता की समस्यायें रखती थी। अध्यक्ष श्री हबीबुद्दीन खाँ, एडवोकेट एवं महामंत्री श्री मन्जुरूल आलम एडवोकेट थे

[2] म्यूजियम।

[3] लकवा (PARALYSIS)

शिकार का शौक बाल्यकाल से ही लग गया था परन्तु इसमें आपने उच्च स्तर की दक्षता अर्जित कर लेने के अतिरिक्त उसका अध्ययन एक कलाकार की भांति किया। अपने मूल्यवान अनुभवों से शिकार के शौक़ीनों को एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक "राहनुमा-ए-शिकार" की रचना से लाभान्वित किया। यह रचना उर्दू में है। इसका अनुवाद उन्होंने अंग्रेज़ी में करके एक दूसरी पुस्तक की रचना अनुवाद के रूप में की। आप अत्यन्त सद्व्यवहारी थे और शिकार के निजि कार्यक्रमों के अतिरिक्त नवाब के साथ प्रायः शिकार के मार्ग दर्शक के रूप में जाते थे। एक अत्यन्त रोमांचकारी शेर के शिकार की घटना पर आलेख आपने पत्रिका "हुमा" अथवा "हुदा" के कार्यालय को भी प्रेषित किया था जो प्रकाशन पश्चात् अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। आपने दीर्घ आयु पाई और चारों नवाबों के शासनकाल को शिकार के दृष्टिकोण से देखा किए। परन्तु कभी कोई शासकीय पद प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त नहीं की। इसलिए कि स्वयं एक आत्मनिर्भर जागीरदार थे। आपकी प्रसिद्धि राजपूताना के राजपूत सरदारों में अत्यधिक थी। इसलिए कि आपने राजपूताना के हर शिकारी भू-भाग को छान मारा था। निशाना आपका टोंक में सबसे सही माना गया था। उड़ते पक्षी को गिराना एक साधारण सी बात थी। वन के बादशाहों अर्थात बाघों को मार गिराने वाला शूरवीर और बुद्धिमान् अवश्य था परन्तु सुदृढ़ शरीर और लम्बे क़द का न था वरन् दुबला-पतला और नाटे क़द का था इसलिए आप शिकार करते समय स्फूर्तियुक्त एवम् चतुर हो जाते थे।

प्रोफेसर महमूद शीरानी—

आप टोंक के विख्यात कवि अख़्तर शीरानी के पिता थे। उर्दू के साहित्यिक जगत् में पूरे हिन्दुस्तान में आपकी प्रसिद्धि थी। चूंकि आपका विवरण ख़लील शासनकाल में भी आ चुका है, इसलिए और अधिक विवरण विस्तार से नहीं दिया जा रहा है। आपने उर्दू भाषा का जन्म पंजाब में होना अपनी प्रसिद्ध रचना में प्रमाणित किया है और उसकी महत्वता को स्वीकारते हुए आपको **डाक्टर ऑफ आर्ट्स** की मानद उपाधि पंजाब की लाहौर यूनिवर्सिटी की ओर से प्रदान की गई थी। आपने इस विचार का खण्डन किया है कि उर्दू का जन्म देहली में हुआ है। तुर्कों के प्रारम्भिक दौर में उर्दू का घर पंजाब को प्रमाणित किया है। चाहे उसकी शायरी का प्रारम्भ दक्षिण में हुआ

हो या देहली में।

प्रोफेसर मौलवी मज़हर हसन खाँ साहिब—

आप अपने दोनों विद्वान भ्राताओं (मौलवी मेहमूद हसन खाँ व मौलवी हैदर हसन खाँ साहिब) के अनुज थे और अरबी साहित्य में उच्च कोटि की श्रेणी में आते थे। इसलिए मैसूर विश्वविद्यालय में अरबी प्रोफ़ेसर पद पर नियुक्त हुए।

आयु के अन्तिम भाग में टोंक आकर अपनी बचत से बाज़ार क़ाफला में कुछ दुकाने क्रय कर लीं जिसमें इक़बाल नामक होटल भी अधिक अवधि तक रहा परन्तु आपकी तलाक़शुदा बेगम सकीना, निवासी जयपुर ने अपने मेहर सवा लाख रुपये की डिक्री प्राप्त करके आपकी कुल सम्पत्ति नीलाम करवा डाली। इस बरबादी और भुखमरी का कारण लोग यह बताते हैं कि मौलाना अपनी हलाल (वैध) दौलत से लोगों को ऋण दिया करते थे और दान को कन्जूसी से अच्छा समझते थे। जिसकी वजह से अन्तिम आयु में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा और फिर अन्य अनेक रोगों से ग्रस्त होकर देहान्त हुआ।

प्रोफेसर मौलवी अब्दुर-रहमान खाँ साहिब—

आप भी टोंक के अफगान जाति के पठान परिवार से थे। अत्यन्त सुन्दर व सुन्दर वस्त्र धारणकर्ता तथा अच्छा भोजन करने वाले एक मोमिन (सच्चे) मुसमलान थे। चेहरा अत्यन्त प्रकाशमय था और उस पर दूधिया रंग की सफ़ेद शरई दाढ़ी उन्हें हज़ारों व्यक्ति में अलग से प्रदर्शित करती थी। आप सेवा आयु तक रियासत हैदराबाद दक्कन के प्रिंसपर कालेज में अरबी के अध्यापक रहे। वहा से सेवा निवृति पश्चात् और स्वंय सेवियों द्वारा गड़बढ़ी के बाद अपनी मातृ-भूमि टोंक आ गए। मौलवी अब्दुल्ला खाँ साहिब विलायती जो आपके मामा थे और जिनकी हवेली चौकी कुम्हारन में स्थित है आकर आवास किया।

आप अत्यन्त व्यवहार कुशल, भोले और अतिथि-सत्कार करने वाले थे। अन्तिम आयु में सहायता करने के उद्देश्य से एक सम्भ्रान्त पठान विलायती परिवार की विधवा से विवाह कर लिया था और उसके कुछ समय पश्चात् ही आपका देहान्त हो गया। मोतीबाग़ के क़ब्रस्तान में आपको दफ़नाया गया। उस समय आपकी आयु 72 वर्ष थी।

शायरों के क्षेत्र में भी कुछ सम्पूर्ण गुरु इसी दौर में हुए थे। इनमें से एक साहिबज़ादा मोहम्मद सईद खाँ "आशिक़"[1] भी थे। जो दाग देहलवी के शिष्य भी रह चुके थे। इश्क़िया (श्रृंगार रस) शायरी में कमाल रखते थे। भाषा अत्यन्त टकसाली दिल्ली की भांति थी। अपने ज़ोरे कलाम, भाषा की रवानी और रंगे तगज़्ज़ुल (गज़ल कहना) में न केवल टोंक में वरन् सम्पूर्ण भारत में उनके स्तर का शायर कोई दूसरा न समझा जाता था। आपके बायें हाथ पर फालिज़ गिरा हुआ था। पान अत्यधिक खाते थे। सर पर साधारणतया बारीक मल्मल की टोपी और शरीर पर कुर्ता, शरई पायज़ामा, सलीम शाही जूता और कभी कत्थई रंग का जूता उपयोग करते थे। आपने नवाब इब्राहीम अली खाँ साहिब "ख़लील" के शासनकाल में शायरी प्रारम्भ की और सन् 1940 ई में अर्थात नवाब सआदत अली खा साहिब के प्रारम्भिक दौर में टोंक के शायरों के गुरू बन गए और तब उनका देहान्त हो गया। आप टोंक में दिल्ली स्कूल के शायरों का एक अध्याय प्रारम्भ कर गए।

"कैफ़"[2] नवाब सुलेमान खा 'असद' लखनवी के शिष्य थे। कलाम में परिपक्वता, स्थायित्व और भाषा में प्रवाह था। टोंक में लखनऊ स्कूल के आप ही गुरु माने जाते थे। इस प्रकार "आशिक़" साहिब देहली की भाषा और शैली के तथा "कैफ" लखनऊ की भाषा और शैली के प्रमाणित शायर, इब्राहीमी दौर में हुए हैं। ये दोनों महानुभाव परस्पर अत्यन्त मित्रता रखते थे। परन्तु शायराना नोकझोंक भी चलती रहती थी। ये दोनों महाशय नाटा कद, एक-सी आयु, एक से रंग, आकृति एवम् स्वरूप के थे।

कैफ़ साहिब हाफिज़ आलमगीर साहिब 'कैफ़'

"कैफ़" साहिब एक मुत्तक़ी (धर्म पालक), नमाज़ी और रसूल (स अ) से प्रेम करने वाले, शायर थे। अधिकतर झालावाड में रहते थे, वहा के राजा भवानी सिह जी उन्हे कैफ भगवान् कहते थे। वहीं पर आपका देहान्त हुआ

[1] बाजयाफ्त पृ स 68 पर आपका नाम अहमद सईद खा 'आशिक़' अंकित है। इसी पृष्ठ पर आपकी मृत्यु का सन् 1940 ई लिखा है।
[2] 'कैफ़' का देहान्त वर्ष 1940 में हुआ (बाज़याफ़्त पृष्ठ 69)

वास्तविकता यह है कि ग़ज़ल के क्षेत्र में तो आपने गालिब के बाद कमाल ही कर दिखाया। नआत व मन्क़ेबत (रसूल, स. अ. की शान में कहे हुए शैर) में अपना जवाब नहीं रखते थे। आपकी प्रकृति एक सिपाही की भांति थी यद्यपि आपकी जाति का कार्य सिपाही का पेशा न था। चलते-चलते हर समय हाथ में तलवार या लाठी अवश्य रखते थे। मौलवियों की भांति, साफ़ा बांधते थे।

मौलवी सैफ़[1] साहिब—आप 'सैफ़' शायर के नाम से प्रसिद्ध हैं और सआदत शासन काल के गुरुओं में आपकी गणना की जाती है। आप ही के सुपुत्र हैं जो सारी उम्र हाई स्कूल में अरबी के अध्यापक रहे।

जाम साहिब—हाफिज मोहम्मद "जाम" साहिब अत्यन्त मुत्तकी (धर्म पालक) और नमाज़ी थे। अपनी शायरी, व्यवहार कुशलता तथा योग्यता ऐसे गुणों के कारण ही नवाब सआदत अली खां के विशेष मित्रों में सम्मिलित हुए, तत्पश्चात उनके उस्ताद भी हुए। तब नवाब ने आपको "मुशीरे-मुख्तार" तथा अपने नाटक व ड्रामे का इन्चार्ज भी बना दिया।

शैक्सपियर की भांति आप में शायरी और ड्रामा लिखने के दोनों गुण एक साथ थे और इनमें आपको कमाल हासिल था। आप अपने उस्ताद "आशिक़" साहिब के ऐसे शिष्य थे, जिन पर गर्व किया जाता था। अत्यन्त आबिद व ज़ाहिद (पूजा करने वाले, दुनिया मे दिलचस्पी रगबत, न रखने वाले) होने के साथ ड्रामा के प्रतिकूल वातावरण में रहकर मदिरा और उसके सौपरस्थ कार्यों से बचे रहना, बस उनही का काम था। रात्री को जागना पड़ता था परन्तु इस दुनिया की व्यस्तता को धार्मिक व्यस्ता अर्थात नमाज़ में परिवर्तित कर देते थे। सारी रात अल्लाह की इबादत (पूजा) में व्यतीत कर देते थे। क़द ऊँचा, शरीर सुडौल, ऊँचा आकृति व स्वरूप, गहरे-गेहूँआ रंग में आकर्षक किताबी चेहरा रखते थे। आवाज़

---

[1] पूरा नाम मोहम्मद शरीफ 'सैफ़' है, देहान्त सन् 1954 में हुआ (बाज़यािफ्त पृष्ठ 68)

में मिठास थी और कुरान शरीफ़ क़िरआत (पढने की विशेष कला जो गले से विशेष ध्वनि निकाल कर पढ़ी जाती है) से पढते थे और सुनने वालों को ध्यान मग्न कर देते थे अर्थात् वह खो जाते थे। आपके ललाट पर सजदों की अधिकता के कारण एक दिखता हुआ निशान बन गया था, जिसे कुरान-पाक में[1] स्वर्ग में जाने वालों की पहचान बताया गया है। आपकी दाढ़ी शरई प्रकार की तो न थी परन्तु खशखशी अवश्य थी। सम्भवत. आप पर यह वातावरण का प्रभाव था। आपके मुस्कुराते हुए चेहरे पर व्यवहार कुशलता, स्वच्छ हृदय, दयालुता और तक़वा आदि गुणों के चिह्न दिखाई देते थे। हाफ़िज होने के अतिरिक्त मौलवी भी थे। सम्भवत हकीम बरकात अहमद साहिब (र अ) के शिष्यों में से थे। दिन में सरकारी नाटकघर के प्रबन्ध में व्यस्त रहते थे। रात अल्लाह की इबादत में और वज़ीफ़ों में व्यतीत करते थे। आपकी नफ़्ली नमाज़ का क़याम एक घण्टे से कम न होता था। सम्भवत इसी में कुरान शरीफ पढ़ते थे और सजदा भी पन्द्रह मिनट से अधिक का होता था।

आपके शैरों में देहली की भाषा और लखनऊ की शौख़ी (चचलता) का आनन्द आता है। आपकी शायरी का एक दीवान भी सम्पादित किया गया, परन्तु वह लापता है। वस्त्र में शैरवानी, ऊंची बाढ की काली मख़मल या अच्छे पशमीने की टोपी और तंग मोरी का पायजामा पहनते थे। व्यवहार अत्यन्त उत्तम और खुशमिजाज़ (ज़राफ़त), अच्छे कपड़े पहनने वाले और पारम्परिक व्यक्ति थे आपने बाल्यकाल में पहलवानी भी की थी इसलिए शरीर अत्यन्त गठीला तथा सुडौल था ललाट ऊचा, स्वभाव खुशमिजाज़ और हसमुख किन्तु गम्भीरता युक्त आदि आपके विशेष गुण थे। जाति के एतबार से न सैयद थे न पठान बस मुसलमान थे।

---

[1] सीमा हुम फी वजुहिम मिन असरस्सुजूद। سیماہم فی وجوہہم من اثر السجود

साहिबज़ादा हाजी मौलवी मोहिन्दस[1] आमिल हाफ़िज़ अब्दुल क़ददूस ख़ान साहिब वकील। आपने आयु के अधिकतर भाग में वकालत की परन्तु हजबैतुल्ला कर लेने के पश्चात् वकालत छोड दी। आप अपने समय के मोहिन्दस (गणितज्ञ), ज्योतिषि एवम् रमल व जफर ज्ञान में दक्ष व्यक्ति थे। बटेर पालने, लडाने, शतरंज खैलने का शौक़ जीवन भर रहा। परन्तु इसके साथ ही नमाज़ रोज़े की पाबन्दी, दरूद व वज़ाईफ, अमलियात तथा तावीज़ व गण्डे का भी शौक़ जारी रखा। क़द मध्यम और शरीर सुडौल था क्योंकि युवाकाल में कसरत (व्यायाम) करते थे। चेहरा अत्यन्त तेजमय व किताबी था। आँखे गिलाफ़ी तथा नरगिसी थी। दाढ़ी लम्बी और घनी थी। सर पर पट्टे कभी न रखने, कतरे हुए बाल रखते थे। चाल धीमी और सोच-विचार की होती थी जैसे किसी विचार में मग्न हों। वार्तालाप में बातें अत्यन्त गम्भीरता से प्रत्येक विषय पर कर लेते थे। बटेरबाज़ी और तीतरबाज़ी पर स्वयं के माहिराना अनुभवों से सुनने वालों का मन प्रसन्न कर देते थे। आप ही के पडौस में एक मज्ज़ूब सिफ़त मौलवी हाफ़िज साहिबज़ादे रहते थे। जिन्हें कल्लु मियां वहजी साहिबज़ादा भी कहते थे। रमल व जफर विद्या में उनका उदाहरण राजपूताने में उस समय कोई नही था (रमल का अर्थ है एक विद्या जिसमें अको और खुतूत आदि के माध्यम से गैब की बात मालूम करते हैं या इल्मे उरूज की एक बहर का नाम और जफ़र का अर्थ है एक विद्या जिससे गैब का हाल बताया जाता है) कभी दीवानगी की दशा में नंगे सिर पैर भी हो जाते थे परन्तु बात का उत्तर कभी दे देते थे कभी मौन धारण कर लेते थे। हाजी वकील साहिब को वृद्धा अवस्था में फालिज का असर हो गया था तब से अपने घर में ही सीमित हो गए थे और कई सप्ताह बीमार रहकर देहान्त हुआ।

दीवान धन्नाला जी–

आप दिगम्बर जैनियों के मानक चौक, जो टोंक का प्राचीन मोहल्ला है, के सम्भ्रान्त व्यक्तियों में से थे। आप उर्दू व हिन्दी के एक अच्छे ज्ञाता, परन्तु उत्तर देने वाले होनहार, परामर्श दाता, प्रबन्धक, गम्भीर दूरदर्शी आदि विशेषताओं से परिपूर्ण अत्यन्त सभ्य व्यक्ति थे।

---

[1] गणितज्ञ।

पहले आप टोंक रियासत में तहसीलदार थे। फिर टोंक की सेवा छोड़कर बूंदी रियासत में उप-प्रबन्धक (नाइब नाज़िम) हुए। फिर नाजिम बने यहा तक कि बूंदी दीवान बना दिए गए। परन्तु आपके कदरदान राजा के परलोक सिधारते ही राजा के उत्तराधिकारी ने राजा बनने पश्चात दीवान धन्नालाल जी के प्रति विरोधी रूख अपनाया। जिसके कारण उन्हें रातों-रात बून्दी छोड़कर टोंक आना पड़ा। तब टोंक में शांति एवम् सुरक्षा का जीवन प्राप्त होने पर आपने अपने आवास गृह को बढ़ाया और सुखदायक भी बनाया। आप बड़े सजग मस्तिष्क और तुरन्त उत्तर देने वाले थे। आप व्यक्ति को पहचानने की कला जानते थे। अपने आवास में सीमित रहते हुए भी उस समय टोंक के नवाब, अधिकारी और शरीफ लोगो से अपने अच्छे सम्बन्ध बनाए रखे और टोंक की जनता के कल्याण में भी शान्तिपूर्वक प्रयत्नशील रहे। शरीर पुष्ठ और कद मध्यम श्रेणी का था। दाढ़ी राजपूतों जैसी रखते थे पगड़ी महाजनों जैसी बांधते थे। आवाज़ बहुत ऊंची थी। भाग्यशाली थे। वृद्धावस्था में कुछ दिन बीमार रहकर परलोक सिधार गए। आपने दो योग्य सुपुत्र छोड़े बड़े मिस्टर मनोहर लालजी जो होम मेम्बरी में सरिश्तेदार थे और छोटे मिस्टर चान्दमलजी जो अपनी प्रारम्भिक सेवा ही मे नवाब की कृपा और अपने परिवार की ख्याति के कारण से मजिस्ट्रेटी के पद पर नियुक्त किए गए। फिर आगे जीवन में आपने वकालत प्रारम्भ कर दी और अब जयपुर एडवोकेट्स् में शामिल हैं।

राय साहिब नारायण दास जी—

आप पंजाबी थे। पहले सैशन जज के पद पर बाहर जाकर नियुक्त हुए और अपनी योग्यता न्याय-प्रियता और अच्छी कारगुज़ारी से जूडिशियल मेम्बर बना दिए गए। आप सजग मस्तिष्क, व्यवहार कुशल और स्पष्टवादी थे सकुंचित दृष्टिकोण वाले बिल्कुल न थे। आपकी उर्दू इमला, इन्शा भी ठीक थी (इमला भाषा लिखने और इन्शा लिखने की कला को कहते हैं)। अंग्रेज़ी अत्यन्त अच्छी थी। रियासत में यह सर्वप्रथम जूडिशियल मेम्बर हुए रियासत में काफ़ी समय रहकर सेवा निवृत हुए और दिल्ली चले गए।

मोहम्मद मीर साहिब पंजाबी—

मुख्य न्यायधीश और वाईस प्रेसिडेन्ट। आप यू पी सर्विस के रिटायर्ड न्यायधीश थे। रियासत में एक समय तक वाईस प्रेसिडेन्ट के पद पर फौजी या सेवा निवृत अंग्रेज़ अधिकारी ही नियुक्त होते थे। डी ई ओंजियर साहिब के सेवा-निवृत होने पर मेम्बर साहिब मुख्य न्यायधीश को नवाब की तत्कालीन नीति के अनुसार वाईस प्रेसिडेन्ट नियुक्त किया गया और जे लन्दन ब्रूम साहिब के सेवा निवृत होने पर हमीदुल्ला ख़ाँ साहिब पंजाबी को जो सीनियर सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के पद से सेवा निवृत हुए थे, दिल्ली से बुलाया गया। मोहम्मद मीर साहिब यद्यपि नवाब के अत्यन्त विश्वासपात्र और विशेष परामर्शदाता थे परन्तु गम्भीर न थे। इसलिए उनके कार्यकाल में सब ही विभागों मे अव्यवस्था फैल गई। उनके अस्थायी मानसिकता अथवा दृष्टिकोण के कारण नवाब ने उन्हे पदच्युत कर दिया। जिसका उनके हृदय एवम् मस्तिष्क पर अत्यन्त कुप्रभाव पड़ा और इसी दुःख की हालत में अपनी कार की एक दुर्घटना से देहली में देहान्त हुआ।

ख़ान बहादुर रहमान बख़्श साहिब क़ादरी, एम. ए., एल. एल. बी., एडिशनल क्लेक्टर, लखनऊ—

आप बदायु (यू पी) के अत्यन्त सम्मानीय और विख्यात परिवार मे थे आप जब लखनऊ के कलेक्टर थे तब आपकी भेंट नवाब सआदत अली ख़ाँ से लखनऊ में हुई। वहां आपके सुप्रबन्ध को प्रसिद्धि सुनकर और आप के व्यवहार की कुशलता एवम् चारित्रिक गुण देखकर नवाब की व्यक्तियों को पहिचानने की दृष्टि, आप के चयन पर पड़ी और नवाब ने टोंक आकर आप को रियासत की प्रबन्ध व्यवस्था सम्भालने के लिए आमन्त्रित किया। जिसे क़ादरी साहिब ने स्वीकार कर लिया, तब नवाब ने आपकी सेवाएं यू पी सरकार से मांग ली। इस तरह मीर साहिब के हटने के कुछ माह पश्चात् ही रहमान बख़्श साहिब क़ादरी अत्यधिक अधिकार एवम् सम्मान सहित टोंक रियासत के वाईस प्रेसिडेन्ट के उच्च पद पर बुला लिए गए। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय जब अन्जुम रिआया टोंक तत्कालीन नवाब और विदेशी अधिकारियों के विरूद्ध संघर्षरत थी तब आपने

अपनी तीव्र बुद्धिमानी, सदाचार और व्यवहार-कुशलता से इस संकट के समय, स्थिति को भली-भांति सम्भाला। संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि स्थिति पर इस प्रकार नियन्त्रण किया कि न लाठी टूटी और न सांप ही मरा।

परन्तु आन्दोलन तूफानी लहरों की भांति उमड़ रहा था, शीघ्र ही समय चक्र से कुछ होने की सम्भावना दृष्टिगोचर हो रही थी और वह यह कि सईदुद्दौला अचानक पेशाब रूक जाने के रोग में ग्रस्त होकर परलोक सिधार गए और नवाब ने पिघलती हुई राजनीति को क़ादरी साहिब को सौंप दिया।

तब बरतानिया सरकार ने उत्तराधिकारी को उसका अधिकार दिया और स्व नवाब के सौतेले भ्राता अर्थात हाजरा बैगम के सुपुत्र साहिबज़ादा मोहम्मद फारूक अली ख़ाँ साहिब को नवाब बनाया गया। आप जिस क़दर सआदत अली ख़ाँ साहिब (स्व) के विश्वासपात्र थे, उसी भांति नवाब फारूकअली ख़ाँ साहिब के भी हो गए। परन्तु नौ माह ही में इस नवाब का देहान्त अचानक हृदय गति बन्द हो जाने से हो गया।

तब दूसरे क़द्र करने वाले नवाब का भी साथ छूट जाने से क़ादरी साहिब की कठिनाइयों में वृद्धि हुई। तीसरे नवाब के सिंहासन पर आसीन होने का समारोह भी इन ही के समय में हुआ। यहां तक कि दो-चार माह पश्चात् ही पन्द्रह अगस्त 1947 का स्मरणीय ऐतिहासिक दिन आ पहुँचा और फलस्वरूप कांग्रेस राज स्थापित होते ही नवाब की स्वायत्ता, स्वतन्त्रता और क़ादरी साहिब की प्रेसिडेन्टी भी समाप्त हो गई। अन्जुमन रिआया का ज़ोर भी घट गया, रियासत टोंक का फॉरमर राजस्थान के साथ सम्बन्ध हो गया और कांग्रेस सरकार के प्रतिनिधि डॉ. रामबाबू सक्सेना एडमिनिस्ट्रेटर अर्थात् प्रशासक बना दिए गए।

डॉ साहिब साहित्य के डाक्टर थे न कि चिकित्सा के। आपको उर्दू भाषा का इतिहास लिखने पर पी एच. डी. की डिग्री मिली थी, इसलिए आपकी गणना उर्दू के साहित्यकार विद्वानों में होती थी।

उस समय फॉरमर राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री श्री मानक लाल जी वर्मा

उदयपुरवासी बने। रियासत से सम्बन्ध विच्छेद हो जाने [illegible] अपनी मातृभूमि बदायूं चले गए और एक समय तक [illegible] जीवन व्यतीत करते रहे। वृद्धावस्था में देहान्त हुआ और [illegible] मित्रों [illegible] फारसी का निम्नांकित शेर पढ़ने और सुनने के लिए [illegible]

یاد داری کہ وقت زادن تو　　ہمہ خنداں بودند تو گریاں

آنچناں زی کہ ہر وقت مردن تو　　ہمہ گریاں بودند و تو خنداں

याद दारी की वक्त ज़ादन तू, हमा खन्दा बूदन्द तू गिरया।

आनचुना ज़ी कि हर वक्त मुर्दन तू, हमा गिरया बूदन्द व तू खन्दा।।

उपरोक्त फारसी शेर का अर्थ इस प्रकार है—

अर्थ [illegible]

[illegible]

पर सब रोये और तू हंसे।

[illegible] ईसाइयों [illegible] प्रसिद्ध व्यक्तियों में वर्णन योग्य हैं।

सर्वप्रथम रियासत [illegible] नियुक्ति [illegible] और [illegible] सर्वाधिक [illegible] मआदन [illegible] चिकित्सालय भवन बन जाने पर मुख्य [illegible] गया जिस पर मुस्लिम [illegible] साहिब [illegible] की [illegible] के सेवा निवृत्त सिविल सर्जन पद [illegible]

उनकी अस्वस्थता के कारण सेवा निवृत्त कर दिया गया। डॉ देसाई साहिब की सहायक सर्जनी क्या थी अस रोगी पठानों के मध्य एक शमा थी जो न केवल पुराने चिकित्सालय भवन में रोगियो से घिरी नजर आती थी वरन् चलती बग्घी में मार्ग और चौराहो पर भी यही स्थिति देखने में आती थी हंसते-हंसते डा साहिब सब की फरियाद ध्यानपूर्वक सुनते थे और उनका उपचार करते थे।

चिकित्सालय, पूर्व में उस भवन में था जिसमें आज दरबार सैकेन्ड्री स्कूल है। डॉ देसाई की पेशानी (ललाट) खुली हुई थी वल्ल भूरा वाले थे, सर बड़ा तथा गोल था एव गेहूआ रंग का चेहरा था। आप स्वस्थ सुदृढ़ और सुडौल शरीर के व्यक्ति थे। आपकी उर्दू बोली बम्बई वालो की भांति कच्ची उड़ी-उड़ी थी और मातृभाषा गुजराती न था वरन् अंग्रेजी थी

डॉ देसाई अपने कार्य और कला में इतने व्यस्त रहते थे कि उन्हे किसी मनोरंजन आनन्द अथवा सैर सपाटो के कार्यों के लिए कभी किसी भी व्यस्तता में अपने बंगले से बाहर नहीं देखा जाता था। इनका बंगला मआदिन चिकित्सालय के सामने था जहां अब उर्दू भाषा के व्याख्याता डॉ अबुल फैज़ उस्मानी साहिब [illegible] में सरकारी भवन में रहते हैं।[1] अपने समय में डॉ देसाई [illegible] के [illegible] विद्वान और लोकप्रिय व्यक्ति थे। दोपहर पश्चात वह टेनिस खेला करते थे और व्यायाम करते थे। इसके लिए उन ही के बंगले में उन्होंने एक टेनिस कोर्ट [illegible] रखा था [illegible] रविवार के दिन भी ईसाई होने के बावजूद अपनी ड्यूटी पूरी [illegible] से करते थे यह इसलिए था कि रियासत टोंक के सदर व [illegible] में [illegible] अवकाश का दिन शुक्रवार नियत था।

डा देसाई के सबसे अधिक विश्वासपात्र व प्रभारी औषधालय तथा भण्डार चिकित्सालय [illegible] [illegible] [illegible] के निवासी व जागीरदार रामपुरा, परगना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपनी [illegible] व्यवहारकुशलता मानव प्रेम और अपनी

[1] डा [illegible] उस्मानी दिनांक 31.1.[illegible] को सेवा निवृत्त हो चुके हैं और अपने मकान में [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] निवास करते हैं

कला चातुर्य के फलस्वरूप न केवल डॉ देसाई के सीधे हाथ बने रहे वरन उनके पश्चात् पधारे समस्त चिकित्सा अधिकारियों के विशेष विश्वासपात्र और चिकित्सालय के प्रबन्ध व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बने रहे। यहा तक कि नवाब सआदत अली खा के भी डाक्टर कम्पाउण्डर तथा स्वास्थ्य परामर्शदाता रहे। उनकी विशेष दीर्घकालीन सेवाओ का आदर करते हुए नवाब ने उनके होनहार सुपुत्र श्री बेनीप्रसाद चतुर्वेदी को रियासत के व्यय पर डाक्टरी पढवाई। सहायक सर्जन बनवाया। बेनीप्रसाद ने डॉ देसाई के ही पद चिह्नो पर चलकर उनसे भी अधिक लोकप्रियता व प्रसिद्धि अर्जित की।

दूसरे ईसाई रियासत की सेवा मे एक एंग्लो इंण्डियन पादरी मिस्टर वी वी फिलीप्स, हैडमास्टर थे। उस समय टोंक मे हाई स्कूल केवल मात्र एक ही था और मैट्रिक की परीक्षा अजमेर बोर्ड से दी जाती थी। स्कूल मे शुल्क माफ था और कार्यालय मे अंग्रेजी शिक्षा का प्रचलन था इसलिए जनता का ध्यान अंग्रेज़ी शिक्षा की ओर बहुत कम था। अंग्रेजी शिक्षा को रियासत मे उन्नती देने के लिए मेजर फ्रेजर एडवाइज़र ने नवाब सआदत अली खा के प्रारम्भिक दौर मे एक अनुभवी योग्य व प्रशसक एंग्लो इंण्डियन मिस्टर वी वी फिलिप्स को बाहर से बुलाकर हाई स्कूल का हेडमास्टर नियुक्त किया। यह अत्यधिक अनुशासित कठोर प्रकृति, क्रोधी और एकान्तप्रिय व्यक्ति थे, किसी ने उन को हसते न देखा था न किसी से मिलना पसद करते थे, न अनर्गल बाते करते थे। न सरकारी अधिकारियो के क्लब मे जाते थे, बस अपने काम से काम रखते थे, और किसी से प्रभावित न होते थे।

इस पुस्तक के लेखक अर्थात मैंने असिस्टेन्ट मास्टरी इन [illegible] साहिब के दौर मे प्रारम्भ की थी। आप मेरी प्रथम पदोन्नति [illegible] अधिकारी नगरपालिका टोंक में होने फिर सआदत हाई स्कूल [illegible] हैडमास्टर पद पर उन्नति होने पर मुझसे प्रसन्न रहे [illegible] मेहरबानी से जब उन्हें नवाब इस्माईल [illegible]

[illegible]
मोहम्मद अहमद काकड़ा [illegible] ने सन् [illegible] को हेडमास्टरी पर [illegible] के [illegible] हुए [illegible] मिडल स्कूल में हेडमास्टरी का [illegible]

[illegible] अंग्रेजी तथा प्रकृति के प्रति [illegible] तथा [illegible] शिक्षा देने वाले प्रमाणित हुए। [illegible] दूसरी [illegible] अपने अंग्रेजी माध्यम में ही पढ़ाते थे। [illegible] प्रकार [illegible] की हुई प्राप्ति से व्याख्यान कर दी [illegible] में भी अच्छा [illegible] संस्थाओं में [illegible] लगीं और [illegible] भी [illegible] होकर [illegible] में [illegible] की कचहरी, डाक की कार्यालय है। [illegible] था।

[illegible] के साथ तथा [illegible] विद्यार्थियों तथा [illegible] पर [illegible] माध्यम [illegible] के [illegible] थे। [illegible] का [illegible] कुछ [illegible] के कारण अप्रिय हो गया था। [illegible] अंग्रेजी में वार्तालाप करते थे। परन्तु अंग्रेजी न जानने वालों से [illegible] भाँति उर्दू [illegible] बोलते थे। [illegible] सेवा से मुक्त होकर उन्होंने [illegible] लिया था परन्तु [illegible] होने पर वह आर्थिक संकट में फँस गए थे। इस [illegible] में स्वास्थ्य [illegible] हो गया था। इस स्थिति में इनका देहान्त हुआ। उस समय इनके न कोई पत्नी थी न कोई सन्तान। "हेडमास्टर के कार्यकाल में वह [illegible] बंगले में रहते थे जब चुन्नीलाल के [illegible] के नाम से [illegible] थे [illegible] अब [illegible] रहा है।

[illegible] पन्द्रह वर्ष [illegible] आए थे, [illegible]

[illegible] करते थे। प्रथम [illegible] के लिए [illegible]

[illegible] भी आए। तत्पश्चात् अन्य [illegible]

[illegible] के इलाज भी [illegible] थे। [illegible]

[illegible]

[illegible]

अत्यन्त ही आनन्ददायक होती थी। यह भी अत्यन्त नमकहलाल और आज्ञाकारी थे। इनके विभाग के कर्मचारियों का सम्बन्ध टोंक स्टेट की मिलेटरी से था जनता की शादियों में यह मिलेट्री बैण्ड किराए पर बाद में लिया जाने लगा था उस समय तक टोंक ईसाई व्यक्तियों में केवल एक बेग्ता मि मानोलाल थे। जो बाल्यकाल में बाहर जाने पर ईसाई बना दिए गए थे। टोंक में रहते हुए यह अंग्रेजी पढ़ाने की ट्यूशन से अपना व्यय वहन करते थे। यह अंग्रेजी के सुन्दर लेखक (कैलीग्राफिस्ट) भी थे।

मौलाना सैयद महमूदुल हसन साहिब 'सौलत'[1]

टोंक के अपने समय के पुराने उस्तादों के उस्ताद शायर थे, आप अरबी जाति के थे। आपका जन्म टोंक में हुआ था। आपने विद्वान हकीम बरकात अहमद साहिब (र अ) से धार्मिक शिक्षा ग्रहण की थी और बाल्यकाल में दरबार हाई स्कूल टोंक में भी पढ़ चुके थे। उलूमे शर्किया अर्थात अरबी व फारसी के विद्वान होने के अतिरिक्त इल्मे उरूज (वह विद्या जिसमें नज़्म के नियम ज्ञात होते हैं) के भी सूक्ष्म दर्शी उस्ताद थे।

आपने इब्राहीमी दौर में शायरी प्रारम्भ की थी। हजरत आशिक (स्व) और ... न कैफ़ (स्व) से भी शिष्यता का लाभ उठाया था। मानस प्रारम्भ से ही शा... की ओर था इसलिए नाज़ुक विचारों का आगमन शीघ्र ही प्रारम्भ हो गया रंगे तगज़्ज़ुल (गज़ल कहना) में इनकी प्रसिद्धि वहा पहुँच गई जहा दीर्घकाल पश्चात् उस्तादों को पहुँचती है। नवाब सआदत अली खां के शासनकाल में अत्यधिक शायरों को उस्ताद की हैसियत से इस्लाह (शायरी में संशोधन एवम सुधार) देते रहे सचेत मस्तिष्क और विशाल विचारों की यह स्थिति थी कि एक ही समय में दो, तीन बहरों (शेरों का वजन) में भिन्न भिन्न अशआर (शेर का बहुवचन) लिखवाते जाते और बातें भी सुनते और करते रहते थे।

---

[1] "सौलत" साहिब का देहान्त सन् 1968 ई में हुआ (बाजयाफ्त पृष्ठ 73)

इनके विद्या लाभ की यह स्थिति थी कि कई दीवान दूसरों को लिखकर दे देते थे क्योंकि इस दौर में लोक शायरी से भरा पड़ा था और नवाब तर्ज़[1] पर जनता चल पड़ी थी। न केवल नवाब के यहां वरन अमीरों के यहां भी आए दिन मुशायरे होते रहते थे। मोहल्ले मोहल्ले शेरो व शायरी के साथ चार बैत की भी चर्चा थी इसलिए मौलवी साहिब की सम्पादना कला की आवश्यकता प्रत्येक शायर को नित्य दिन पड़ती थी। मौलवी साहिब भी इन साहित्यिक सभाओं को अत्यन्त सजगता तत्परता और तन्मयता से निभाते थे। तब शायद ही कोई मुशायरा ऐसा होता था जहां मौलवी साहिब (र. अ.) सभा अध्यक्ष न बनते हों

रात्री के समय मुशायरों में और दिन के समय चलते फिरते प्रत्येक [illegible] यहां तक कि चाय की दुकानों पर भी साहित्यिक [illegible] मध्यम कद दुबले पतले शरीर [illegible] चेहरा और खुशखुशी [illegible] अधिकता के फलस्वरूप एक निशान बन गया था।

आपने लगभग [illegible] वर्ष की आयु में [illegible] मृत्यु [illegible] निर्वाहित सन 1[illegible] हिजरी [illegible] मार्च सन 1[illegible] [illegible] और इतने आदी हो गए थे कि [illegible] और बरसों सबका अपने [illegible][2] से प्रत्येक व्यक्ति [illegible] करते थे।

सादा वस्त्रों की यह दशा थी कि [illegible] पर मलमल का एक कुर्ता और [illegible] में बना हुआ जूता पहनते थे [illegible] और स्वयं [illegible] अपने पिता का [illegible] है) देते थे।

---

[1] तरीका
[2] सत का पान ही मान है।

[illegible] साहिब 'नजर', साहिबजादा हामिद सईद खां 'साहिल'[2], [illegible] साहिब और [illegible] [3] [illegible] इस काल के प्रमुख [illegible] थे। [illegible] [4] और [illegible] शिगर्फ़ी[5] की गणना की जाती है।

हकीम सयद याहया मियां साहिब

[illegible]

[illegible]

[1] [illegible] सन् [illegible] ई० में हुआ [illegible]
[2] [illegible] सन् [illegible] ई० में हुआ [illegible]
[3] [illegible]
[4] [illegible] इन्तकाल सन् [illegible] ई० में हुआ (वाक़आत [illegible] पृष्ठ [illegible])
[5] [illegible] इन्तकाल सन् [illegible] ई० में हुआ (वाक़आत [illegible] पृष्ठ [illegible])

[illegible] हकीम [illegible][1] [illegible] प्रत्येक मोहल्ले में [illegible] हकीम [illegible] चिकित्सा [illegible] हकीम [illegible] था।

[illegible] स्कूल जयपुर में हुई।

[illegible]

[illegible] नहीं रही।

मौलाना, मौलवी, मुफ्ती, हाफिज, क़ारी, सूफी, खतीब, आमिल, हकीम, मोहम्मद अली खां साहब (स्व.)

आप मौलवी [illegible] खां साहब के नाम से प्रसिद्ध [illegible] भी अपनी विशेषताओं के कारण अपने समय के [illegible] मुसलमानों की धार्मिक [illegible] को साधारण भाषा में मौलाना कहा जाता है [illegible] धार्मिक [illegible] शैक्षणिक भावना से मुसलमानों का धार्मिक मार्ग और सुधार आदि के [illegible]

[1] हकीम [illegible] मियां का देहान्त दिनांक [illegible] हो गया है
[2] बिस्मिल [illegible] का देहान्त सन [illegible] ई. में हो गया है (साक्षात्कार [illegible])

प्रेरित करते थे । स्व. ने यह दायित्व अपनी दीर्घ आयु तक भलि-भांति निभाया। इसलिए आप अपने समय के अति-उत्तम भाषण कर्ता तथा धार्मिक इमाम माने जाते थे । अरबी में आपको इतनी दक्षता थी कि जामा मस्जिद काफला में शुक्रवार की नमाज में सम्बोधन (खुतबा) विभिन्न विषयों पर अपना ही सोचा हुआ जुबानी पढ़ते थे। लिखित सम्बोधनों का अन्य इमामों की भांति अपनी शान के खिलाफ समझते थे।

आपको अत्यधिक उत्तम विद्वान मानने में किसी को भी आपत्ति नहीं है क्योंकि आप विद्वान बरकात अहमद साहिब (र. अ.) के गौरवमय शिष्यों में से थे । शिष्य भी ऐसे कि दस्तारे फज़ीलत (शिक्षा पूर्ण होने पर बांधी जाने वाली पगड़ी) बंधवाने के पश्चात् जब आपने पंजाब विश्वविद्यालय से मौलवी फाज़िल की परीक्षा दी तो प्रथम श्रेणी में टॉप मोस्ट आए। फिर सारा जीवन ही दर्से निज़ामी को पढ़ाने में व्यतीत किया । इसके अतिरिक्त सैकड़ों विद्यार्थियों को पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर, यू. पी. विश्वविद्यालय इलाहबाद के उलूमे शर्किया (अरबी फारसी विद्या) की परीक्षाएं दिलवाकर उनके जीवन को उज्ज्वल बनाते रहे।

आपके पास फतवे (धार्मिक समस्याएं सुलझाने के लिए आवेदन पत्र) देने के लिए आवेदन-पत्र दूर दूर से आते थे और आप उनका उत्तर लिखने के लिए नगर के कुछ विद्वानों को दे देते थे । इन उत्तरों में सुधार संशोधन पश्चात् और उन्हें फाइनल लिखवाकर भेज देते थे। वृद्धावस्था में जामा मस्जिद काफला टोंक में जिसके आप इमाम भी थे मेहराब (रमज़ान में कुरान-शरीफ सुनाना) सुनाते थे और लगभग अस्सी वर्ष की आयु तक ऐसी मेहराबें सुनाई कि सुनने वालों को कुछ भी भ्रम दूर करने का अवसर नहीं दिया।

सूफी मार्ग में आप चिश्तिया खानदान के खलीफा थे । जयपुर के प्रसिद्ध सन्त हज़रत मिस्कीन शाह कश्मीरी (र. अ.) के ख़लीफा मोहम्मद अली साहिब जिनकी समाधि सड़क के समीप एक पक्के चबूतरे में है और उनके खलीफ़ा मौलवी रूही साहिब (र. अ.) थे। उनकी समाधि भी बहीर में है, और अपने पीर के समीप है । आप हज़रत रूही साहिब (र. अ.) के खलीफा थे और आपकी समाधि भी बहीर में अपने पीर के पहलू में कच्ची समाधि के रूप में है। कव्वाली की महफिल पहले तो आप बाजे व समआ के साथ सुन लेते थे, परन्तु बाद में समआ[1] के साथ सुनना छोड़ दिया था और इस पर भी प्रायः हाल (तल्लीनता में झूमने लगना) की दशा छा जाती थी। आपने आयु के चौरासी वर्ष पूर्ण किए।

---

[1] नाच-गाना।

जन्म तिथि सत्ताइस जमादी-उल-अव्वल सन् 1304 हिजरी, मृत्यु तिथि 20 ज़ीक़आद सन् 1388 हिजरी जिसके अनुसार 29 जनवरी सन् 1969 ई है। आपने ईल्मे तफ़सीर (कुरान की व्याख्या) हदीस (रसूल स अ व के उपदेश), फिक़, मन्तिक़ तथा फ़लसफ़े की शिक्षा मौलवी बरकात अहमद साहिब (र अ) से ग्रहण की थी हिक्मत विद्या भी इन ही से प्राप्त की थी, परन्तु विधिवत् हिक्मत नही की। दरिद्र एवम् दीन रोगियों को मांगने पर उपचार पर्चा लिख देते थे अपनी बुद्धिमानी के फलस्वरूप रोग पहचानने और उपचार करने दोनो मे चतुर थे तावीज़ लिखने और वज़ीफ़ों के अमलियात बनाने में भी आपको अत्यधिक प्रवीणता थी। आस्था रखने वाले लोग इससे भी लाभान्वित होते रहते थे प्रात नियमित रूप से तफ़सीर व हदीस की शिक्षा नासिरया मदरसे मे देते थे। ये मदरसा नवाब वज़ीरूद्दौला के काल मे मस्जिद काफ़ले की पूर्वी दिशा की दुकानो के ऊपर के कमरो और दालानों मे लगता था और अब तक भी वैसा ही है। जीवन पर्यन्त आप इस मदरसे के अध्यक्ष रहे परन्तु तावीज आप मदरसे के समय में कभी न लिखते थे।

मेरे[1] गवर्नमेन्ट सर्विस से रिटायर होने पर आप ही ने मुझे नासिरया मदरसे का मानद् सचिव बनाया था अति के पठान होने के कारण आपको क्रोध शीघ्र ही आ जाता था परन्तु प्रकृति से चूंकि दयालु थे इसलिए शीघ्र क्रोध उतर जाता था और सूफ़ी तथा शुद्ध होने के कारण अपना हृदय भी शीघ्र ही साफ़ कर लेते थे और बिगाड़ के पश्चात् साफ़ सफ़ाई में और दुख के पश्चात् क्षमा करने में पहल करते थे

आपका घर का नाम बाल्यकाल मे नन्ना था। इसलिए वह नाम सारे जीवन ही बोला जाता रहा। वृद्धा अवस्था मे भी यह नाम आपकी मासूमियत के कारण उचित ही प्रतीत होता था। हंसी मज़ाक़ और भोलापन आपके रोम रोम मे था। मदरसा नासिरया के मानद सचिव के रूप मे मुझे इनके साथ लगभग दस वर्ष तक कार्य करने और साथ रहने का अवसर मिला इसलिए मैं कह सकता हूं कि मौलवी नन्ने साहिब अपने समय के प्रसिद्ध और अपनी विशेषताओं के दुर्लभ व्यक्तियों में से थे। आपको मातृ-भूमि से इतना प्रेम था कि बाहर के बड़े-बड़े निमन्त्रण सदर मुदर्रिस पद के लिए आते रहते थे परन्तु आप उन्हे टालते रहते थे और अपनी मातृ-भूमि से प्राप्त अल्प

-

[1] मूल पुस्तक के लेखक मोहम्मद एजाज़ खाँ।

[illegible] और [illegible] भी [illegible] मन [illegible] रहते थे [illegible] और लोगों को [illegible] करते थे [illegible] [illegible]

[illegible] व्यक्ति थे।

काज़ी मुफ्ती मोहम्मद अय्यूब साहिब

[illegible] साहब, नाज़िम अदालत शरा शरीफ, के सम्बन्ध से [illegible] थे।

[illegible] व्यक्ति थे [illegible] परिपूर्ण होता था। आप लम्बे कद, भरे हुए शरीर, [illegible] चेहरे, घनी दाढ़ी [illegible] गहुआ रंग के व्यक्ति थे।

मौलवी हाफिज व मुन्शी [illegible] उर्फ मोहम्मद मिया

आपके पूर्वज [illegible] [illegible] सम्बन्ध [illegible] साहिब ने [illegible] कुरान-शरीफ [illegible] फिर वकालत प्रारम्भ कर दी [illegible] में की जाती थी। [illegible] नियुक्त किए [illegible] स्थानान्तरित कर दी गई। [illegible] में [illegible] बना कर भेजे गए। [illegible]

[illegible]

थी।

अब्दुल [illegible]

[illegible] मेजर जनरल, सेना टोंक, के सुपुत्र थे [illegible] [illegible] और [illegible] अब्दुर्रहीम साहिब [illegible] अभी [illegible] [illegible]

[illegible] दिए गए। आप दृढ़प्रतिज्ञ [illegible] थे। सेना पर आपने नियन्त्रण इस प्रकार [illegible]

लिए ईश्वर ने आपको तीव्र और दूर तक जाने वाली आवाज़ प्रदान की थी राजस्थान बनने पर जब सेना के विभाग में कटौती की गई तो आपका सेवा निवृत होना भी आवश्यक हो गया। तब ही से यह अपने घर तक सीमित हो गए। अकेले स्वयं ने अपने एक दो सेवकों के साथ अपनी कोठी में स्वय को सीमित कर दिया जो अब बड़े कुंए के पास सडके के किनारे है और जिस पर आपके पौते के नाम पर 'क़ादिर बिल्ड़िग' लिखा हुआ है। आपके पूर्वजों ने अपने सुप्रबन्ध और दूरदर्शिता से नगर में सम्पत्ति के रूप में दुकानें अत्यधिक छोड़ी हैं। आपने इसमें वृद्धि की। इसलिए आपको शहर टोंक का सबसे बड़ा साहिबे जायदाद अमीर माना गया। आप प्रकृति से सोशियल और मिलनसार थे। एकान्त को पसन्द करते थे और इसमें भी आपकी जीवन उन्नती का रहस्य था। आप अत्यन्त गम्भीर, दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ और सादा प्रकृति के थे। आपका रंग गेहूआ था। ललाट अत्यन्त ऊंचा, चेहरा भरा हुआ रूआबदार और शरीर कसरती सुडौल तथा क़द मध्यम श्रेणी का था। चेहरे पर दाढ़ी न थी अन्तिम आयु तक मुछवाले रहे परन्तु नामाज़ के पाबन्द थे और कल्याणकारी कार्य में दान नियामित रूप से एवम् बजट अनुसार प्रत्येक माह वितरित करते थे उनकी सबसे बड़ी दो विशेषताएं थीं। अपने स्वामी और नवाब की वफादारी और आदमी की पहचानना प्रत्येक उस व्यक्ति को जो आपके सम्पर्क में आता था। इसलिए हर कार्य के परिणाम पर विचार करना और फिर उसे करना या न करना आपका बड़ा कमाल था। आपकी प्राचीन हवेली मौहल्ला शार्गिद पैशा में है, जहां आपकी शिक्षित और होनहार नस्ल आज भी आबाद है।

आयु के अन्तिम भाग में आपका स्वास्थ्य एवम आखों की ज्योति खराब हो गई थी। आपने दीर्घ आयु पाई। 22 मई, 1969 ई को देहान्त हुआ और मोतीबाग के क़ब्रस्तान में दफ़नाए गए। आपके एक मात्र सुपुत्र साहिबज़ादा हाजी अब्दुल लतीफ खा साहिब है, मेयो कॉलेज मे शिक्षित हैं परन्तु निज़ामत टोंक से सेवा-निवृत होने पश्चात् घर तक की सीमित हो गए और तक़वा (धार्मिक) जीवन

व्यतीत कर रहे हैं। आपके दो पुत्र और दो पुत्रियां है, बडे लडके अब्दुल कादिर ने मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ से एम एस. सी (मच्छली विषय)उत्तीर्ण किया और राजकीय सेवा मे है। दूसरे पुत्र अब्दुल वहाब ने कश्मीर विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज से एम बी बी एस. की डिग्री प्राप्त की। आपकी बडी पुत्री ताजवर सुल्ताना ने इतिहास में एम. ए. तथा पी. एच. डी. राजस्थान विश्वविद्यालय से की छोटी पुत्री मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ में अध्ययनरत है और जिनका नाम फरज़ाना[1] है।

मौलवी व मुफती अब्दुल हमीद खाँ साहिब सिरोंजी

आप सिरोंज के अत्यन्त उच्च जागीरदारान पठान व मुगल खानदान के गौरवमय व्यक्ति थे। आपकी धार्मिक शिक्षा मदरसातुल उलूम देवबन्द (यू पी) में हुई वहा से निवृत होने के बाद आपको नगर की अदालत शरा-शरीफ का मुफती व काज़ी बना दिया गया।

नवाब सआदत अली खा ने अपनी आयु के अन्तिम भाग में आपकी भतीजी से निकाह पढ़ा और वह तब ही से सिरोंज वाली बैगम प्रसिद्ध हुई परन्तु तेरह वर्ष की विवाह अवधि पूर्ण होने पर भी उनसे कोई सन्तान उत्पन्न नही हुई

मुफती साहिब सूरत शकल के एतबार से सिरोंज के दूसरे युसुफ थे व्यवहार में मोहम्मद साहिब (स अ व) के नमूना थे। आपके व्यवहार एवम् सत्कार मे एक ऐसा आकर्षण है कि आपकी सगत मे देर तक बैठने को मन करता है। आपके इस आकर्षण के फलस्वरूप ही प्रत्येक दिन दोपहर पश्चात् परगाना के अधिकतर अधिकारी आपके निवास पर जो नगर से बाहर एक मील की दूरी पर है पहुँचते और सत्सग से लाभान्वित होते थे। आप स्वय भी हंस-हंसकर जिस विषय पर भी चर्चा हो अपना दृष्टिकोण प्रकट करते थे। पीठ पीछे बुराई

---

[1] फरज़ाना नियोजन अधिकारी के पद पर कार्यरत है .

(गीबत) करने से आपको अत्यन्त घृणा थी। किसी भी अनुपस्थित व्यक्ति की कोई भी बुराई प्रारम्भ करना तो [illegible] सद्भाव पूर्वक [illegible] करने से [illegible] थे और कहते मियां [illegible] भी अल्लाह इनसे मुक्ति फरमाए [illegible] के सत्कार में [illegible] [illegible] सिफारिश से।

[illegible] सुन्दर है।

मौलाना हाफिज़ उबैदुल्ला साहिब नेत्र-हीन, अल्वर्सार नागरखुर्गो (तिथि निकालने वाले)।

[illegible] अल्लाह का एक करिश्मा था [illegible] [illegible]

पश्चात् भी आप ज्यौति वाले बनकर ही जीवित रहे। धार्मिक शिक्षा विशेषकर अरबी में इतनी उन्नती की कि इस भाषा में मधुर काव्य व विद्धता पूर्ण काव्य रचने लगे और यही स्थिति उर्दू की शायरी में थी इसलिए आप कई पुस्तकों के रचनाकार हैं विद्या ग्रहण करने के साथ साथ आपने कलाम पाक भी हिफज (कण्ठस्थ) कर लिया था संख्याओं की विद्या, ज्यौतिष विद्या के साथ साथ रमल और जफर और नामों की तिथि निकालने की विद्या आदि सीखी और उनमें इतनी उन्नती की कि हिन्दुस्तान में आप जैसा दूसरा न था। आपने लगभग 50 वर्ष की आयु पाई अत्यन्त मुत्तकी (धर्म पालक) थे और आप शाफ़ई इमाम के मसलक को मानने वाले थे। यद्यपि आप हाफिज़ थे फिर भी आप कभी मेहराब सुनाने बाहर नहीं गए और कुरान शरीफ सदैव मौहल्ले की मस्जिद में सुनाया करते थे।

आपके चार पुत्र और कुछ पुत्रियां हैं। आपका कद मध्यम श्रेणी का गेहुआ रंग किताबी चेहरे पर शीतलामाता के दाग, बड़ी शरई दाढी थी और इस प्रकार आप एक अच्छे व्यक्ति थे। ललाट पर सजदों का निशान साफ तौर पर दिखता था। अत्यन्त सादा वस्त्र धारण करते थे। कपड़े की गोल टोपी सिर पर, बारीक मलमल का कुर्ता, टख़नों से ऊपर शरई पायजामा पहनते थे। हाथ में एक लम्बी लकड़ी अवश्य रखते थे जिससे मार्ग की टटोल स्वयं ही कर लिया करते थे। अर्थ यह है कि तिथि कहने में आपने अत्यन्त उच्च स्थान अर्जित किया था।

बाबू गम्भीरमल जी श्वेताम्बर जैन—

आप नवाब इब्राहीम अली खा के निजि सचिव थे, परन्तु आपके बड़े पुत्र बाबू चादमल जी को उनके पिता के परलोक सिधार जाने के पश्चात् युवावस्था ही में निजि सचिव बना दिया गया था परन्तु उनकी आयु ने उनका साथ न दिया और युवावस्था में नमूनिए की बीमारी से ग्रस्त होकर मर गए

यह परिवार सर्व प्रथम जैसलमेर से कोटा आया और कोटा से यह साहूकाराने रतलाम की सेवा में टोंक आ गया और मौहल्ला मालपुरा दरवाजे के भीतर बस गया। मालपुरा दरवाज़ा अब गिर गया है। बाबू गम्भीरमल जी ने टोंक के हाई स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। आप विद्यार्थी जीवन में मिर्ज़ा मोहम्मद अली खाँ साहिब देहलवी, प्रिंसिपल हाई स्कूल, टोंक के अच्छे शिष्यों में से थे,

[illegible] और अपना ख़ास होने के कारण नवाब [illegible] बना दिए गए। तब आपने अपनी योग्यता [illegible] किया कि [illegible] का प्रतिनिधि समझा जाने लगा [illegible] ने भी इन्हें अच्छा [illegible] पुत्र बाबू धादमल जी [illegible] बना दिया [illegible] अपना प्रभाव शीघ्र ही [illegible] और शिक्षा ग्रहण करने का क्रम [illegible] परीक्षायें उत्तीर्ण [illegible] भ्राता बाबू [illegible] ऑनरेरी [illegible] शासनकाल में [illegible] अधिकारी [illegible] अपने रिटायरमेन्ट [illegible] अपने घर में [illegible] जिसके [illegible] भवन में प्रारम्भ हुआ। यह चूंकि [illegible] इसलिए इस [illegible] के भवन में अत्यन्त सफलता से [illegible] सहायता[1] पर चल रहा है, जिसके सचिव बाबू फतेहमल जी[2] हैं।

[1] अब राजकीय सहायता पर नहीं चल रहा।

[2] [illegible]

राय साहिब मदनगोपाल जी श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट मेम्बर माल—

टोंक में बन्दोबस्त माल का कार्य पहली दफा होने पर यू पी के कायस्थो के कुछ परिवार टोंक ही में इस क्रम में या विषय में पधारे और फिर यहीं पर बस गए।

राय साहिब इन ही सम्मानित परिवारों के सबसे उन्नतीशील एक व्यक्ति थे। आपका जन्म शिक्षा दीक्षा टोंक ही में हुई। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करते ही माल विभाग में कार्यकर्ता बना दिए गए। फिर अपनी बुद्धिमानी व कार्यक्षमता से तरक्की करते हुए असिस्टेन्ट मेम्बर माल बने। इस पद पर रिटायरमेन्ट तक बने रहे। आपका पैतृक मकान बजार दरवाजे के भीतर लुहारों व टेसवालियों के मोहल्ले में स्थित है। आपकी सुयोग्य सन्तान अब तक भी इसी मकान में रह रही है और अपने पूर्वजों का नाम रोशन किए हुए है।

राय साहिब ठेठ (विशुद्ध) टोंक की मानसिकता पर आधारित सभ्यता एवम् संस्कृति युक्त थे और इसी के अनुसार उन्होंने शिक्षा ग्रहण की थी। आपके मकान पर कार्यालय समय के अतिरिक्त समय में मित्रो तथा मिलने वालों का [illegible] एकत्रित रहता था जिसमें अधिकतर मोहल्ले वाले होते थे और उनके [illegible] का ध्यान [illegible] रहती थी। बोलचाल में भी राय साहिब क्राथ [illegible] में टोंक शाही रवायात दें [illegible] थे और हुक्का पीने की और पान खाने के [illegible] में रियासत के हाल चाल पर निस्संकोच चर्चा करते थे। रियासत की [illegible] के समय में बरतानवी सरकार की ओर से आप को [illegible] से सम्मानित किया गया था। उनका व्यवहार एवम् [illegible] सबके साथ एक समान थे। इसलिए रियासत में और अपने मोहल्ले में अत्यन्त लोकप्रिय थे।

सेवा निवृत्ति पश्चात आपको मेवाड़ अजमेर की चीफ कमिश्नरी के अधीन मध्य प्रबन्ध जो कुछ बड़ी जागीरें कोर्ट ऑफ वार्ड्स की थीं, उनमें से एक में इलाका गलन्दर जिला उदयपुर मेवाड़ में था ली गई और वहां वह एडमिनिस्ट्रेटर अर्थात [illegible] में होकर चले गए थे। अन्तिम आयु में अपनी मातृ भूमि में आकर घर तक हो

सीमित हो गए थे और दमे के रोग से ग्रस्त होकर परलोक सिधार गए, क्योंकि जब उदयपुर में सेवारत थे तब से अधिक मदिरा पान के फलस्वरूप उनके फैफडे ख़राब होने लगे थे। वैसे शारीरिक रूप से लम्बे क़द के शक्तिशाली, सुर्ख़ व सफ़ेद रंग, चौड़ा चेहरा ऊंचा ललाट और ऊंची आवाज़ के व्यक्ति थे। पान अधिकता से सेवन के परिणाम स्वरूप उनके दांतों को भी क्षति पहुंची थी और वृद्धावस्था में होंटों से बाहर साफ़ दिखाई देने लगे थे। आप अत्यन्त खुश मिज़ाज़, व्यवहार कुशल, सत्कार करने वाले ओर लोगो से विनम्रता से मिलने वाले व्यक्ति थे। अंग्रेज़ी लिखने में भी उर्दू, हिन्दी लिखने जैसी दक्षता थी। इसलिए उदयपुर रियासत में बडे अहलकार माने जाते थे वस्त्रों में अधिकतर शैरवानी, मखमली टोपी और चूड़ीदार पायजामा पहनते थे। कोट पतलून कभी नहीं पहना। घर पर धोती का उपयोग करते थे। अपने मौहल्ले वालों के लिए ढाल थे। मुसलमान मित्रों से उन्हें अत्यन्त लगाव था। वैसे बोली भी उनकी उर्दू ए-मौअल्ला जैसी देहली शैलो की थी। दौरे सआदत में भी आपकी गणना बड़े कायस्तों में होती थी। आपके छोटे भाई रामलाल जी भी माल विभाग में पदाधिकारी थे। और अन्त में उप नाज़िम निम्बहेड़ा (मेवाड) परगना टोंक के थे.

अब्दुल क़ादिर खां साहिब मुन्शी फाज़िल सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस टोंक।

आप खान् साहिब आसिफ़ खाँ के पौते थे और अल्लामा खान् साहिब मोहम्मद युसुफ खाँ के बड़े सुपुत्र थे। पुरानी टोंक में मिया के चौक के विख्यात पठानों में आपका ननिहाल था। टोंक रियासत की सेवा में पहले थानेदार बने और फिर अपनी योग्यता व सुप्रबन्ध से सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाए गए। वैसे टोंक के प्रसिद्ध सुपरिन्टेन्डेन्टों में आपके अतिरिक्त खान् साहिब अहमद सईद खा साहिब, उन के भाई खान् साहिब अली हुसैन खाँ साहिब, खान् साहिब वली उल्ला खाँ साहिब, सैय्यद रहमत शाह साहिब, सैय्यद अज़गर शाह साहिब और सैय्यद अहमद अली साहिब की भी गणना की जाती है। इनमें से कुछ तो दौरे खलील के तलवार के धनी है और कुछ दौरे सआदत के। परन्तु अब्दुल क़ादिर खाँ साहिब दोनों दौर के क़लम के धनी, शिक्षित और तलवार के धनी सुपरिन्टेन्डण्ट थे। उनके सौतेले भाई मौलाना उबैदुल्ला खा साहिब उर्फ़ मौलाना मिया पुलिस सेवा के एक योग्य एवम् सफ़ल अधिकारी प्रमाणित हुए।

राजस्थान बन जाने पर मौलाना मिया ने और उन्नती की तथा वह डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस बनाए गए। खान् साहिब अब्दुल कादिर खाँ साहिब दौरै सआदत में रिटायर हो जाने पर अपने ससुराल के घर अर्थात हवैली मुख़्तारूद्दौला जनरल मेहमूद खां साहिब में रहने लगे और काफी समय तक जीवित रहकर हाथ में फ्रेक्चर हो जाने पर चिकित्सालय टोंक में ही देहान्त हुआ। मालपुरा दरवाज़े के बाहर क़ब्रस्तान में दफ़नाए गए। आपके आधे दर्जन से अधिक पुत्र थे जो बढ़कर सब योग्य बने और सब एक-एक करके पाकिस्तान चले गए। अब इस प्रसिद्ध परिवार की यादगार केवल मौलाना मिया[1] है।

साहिबज़ादे यासीन अली खां साहिब, नाज़िम सिरोंज--

आप अपना उदाहरण स्वयं ही थे। आपने अदालत अपील एहल्मदी लिपिक से अपना सेवा जीवन प्रारम्भ किया था, फिर रियासत की वकालत की परीक्षा में सम्मिलित होकर एजाज़ी नम्बरों से अर्थात डिस्टिन्कशन से उत्तीर्ण हुए। इसे पश्चात् वकालत प्रारम्भ की। वकालत में चमकने पर अधिकारियों ने आपको एक बुद्धिमान् युवक समझकर पहले नाज़िम, अलीगढ़ (रामपुरा) बनाया और वहा सुप्रबन्ध करने पर प्रसिद्धि हुई और रियासत की आय को बढ़ाया, तब मिस्टर ओजियर वाईस प्रेसिडेन्ट ने तत्कालीन नवाब की सहमति लेकर आपको नाज़िम सिरोंज (मालवा) बना दिया। वहां आप कई वर्षों तक रहे और अत्यन्त लोकप्रिय तथा सफल रहे। फिर राजस्थान बन जाने पर डिप्टी कलेक्टर बन कर निम्बाहेड़ा आए और कुछ समय पश्चात् इस पद से उन्नती करके डिप्टी डायरेक्टर बिना विभाग, बनाए गए और इसी पर जयपुर में कार्य करते हुए सेवा निवृत्त हुए।

इसके बाद टोंक आकर अपने पैतृक मकान हवैली किल्लदार साहिब मे रहते हुए आपने हवैली की सीमा में लकड़ियों की एक टाल और कोयले का डिपो मुलाज़िम रखकर खोल लिया ताकि कुछ व्यस्तता रहे और बेकारी से बचा जा सके।

---

[1] मौलाना मिया का दिनांक 2-3-94 को देहान्त हो गया है।

परन्तु कुछ समय पश्चात् ही हृदय गति बढ़ जाने पर चिकित्सालय में ठीक ईदुलफितर के दिन देहान्त हुआ।

आप अत्यन्त प्रसन्नचित्त, सुप्रबन्धक, हकीम, बुद्धिमान, प्रवीण तथा राजनीतिज्ञ थे। जहा भी अधिकारी रहे अत्यन्त सफल और लोकप्रिय रहे। आप उर्दू के अच्छे शायर थे, मुशायरों में अपनी नज़्में बिना गाए (तहतुल लफ्ज) में स्वय पढ़ते थे आप का काव्य नाम 'निशात' था। आपको मोतीबाग के कब्रस्तान में दफनाया गया। आप मध्यम श्रेणी क़द के, भरे हुए शरीर, ऊँचा ललाट और सफेद रग के व्यक्ति थे। चाल ढाल में आप को तेज़ी न थी, परन्तु सम्भली हुई और गभीरता युक्त थी। चेहरे पर मुस्कराहट हर समय रहती थी। आखें छोटी थी। परन्तु उनसे बुद्धिमानी झलकती थी। पान खाते थे और सिगरेट भी पीते थे। दाढ़ी भी मुडवाते थे परन्तु शुक्रवार की नमाज़ मस्जिद में जाकर नियमित रूप से पढ़ते थे।

आपके बड़े सुपुत्र यासीन अली खा साहिब ने मेडिकल कालेज जयपुर मे एम बी बी एस परीक्षा पास की और आँखो के ईलाज मे स्पेशियलाइज किया और शिक्षा से निवृत होकर मानसिह चिकित्सालय जयपुर मे आँखो के वार्ड के इन्चार्ज डाक्टर बना दिए गए। जहा आपकी सेवाए अत्यन्त अभिशसनीय रही और प्रसिद्धि भी खूब हुई। फिर आपने सऊदी अरब की हुकूमत की माग पर अरब जाने का निर्णय लिया और लम्बे समय तक वहाँ रहने पश्चात स्वय अपना क्लीनिक मक्के मे खोल लिया और वहीं आबाद हो गए। आपके दो छोटे भाई और भी हैं जो अभी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

मुमताज़ुद्दौला वज़ीरूलमुल्क नवाब मोहम्मद फारुक़ अली ख़ाँ साहिब बहादुर सौलेत जंग (1947-1948)

रियासत के कानून के अनुसार और टोंक की जनता की सहमति से गत नवाब के भ्राता (आप हाजिरा बेगम से थे) साहिबज़ादा मोहम्मद फारूक अली खां साहिब को हिन्दुस्तान की बरतानिया सरकार ने 31 मई 1947 को वैध उत्तराधिकारी स्वीकार करते हुए सिहासन आसीन किया। आपका जन्म 18 अगस्त 1885 ई. को हुआ था। इस प्रकार आप 62 वर्ष की आयु में सिहासन पर बैठे।

मुमताज़ुद्दौला वज़ीरूलमुल्क नवाब मोहम्मद फारूक़ अली खाँ साहिब बहादुर सौलत जंग (1947-1948)

मुमताज़ुद्दौला की सूरत।

आपकी सूरत, सीरत की द्योतक थी अर्थात् आप सुन्दर भी थे और आन्तिक सौन्दर्य अर्थात् गुणों से युक्त, दोनों प्रकार की विशेषताओं से सुसज्जित थे। आपका कद मध्यम श्रेणी से कुछ कम था परन्तु स्वरूप, आकार और रंग सुर्ख़ व सफ़ेद था। अर्थ यह है कि टोंक के समस्त नवाबों में आप सबसे अधिक सुन्दर थे आपका प्रारम्भिक लालन-पालन मच्छी भवन, नज़रबाग में हुआ। दुर्ग के सरकारी प्रासादों में आपने सामाजिक व्यवहार की शिक्षा ग्रहण की थी। कुरान शरीफ आपने हाफिज़ अली मोहम्मद साहिब से और हाफिज़ नूर मोहम्मद साहब से पढ़ा। उर्दू फारसी की शिक्षा मौलवी जान मोहम्मद साहिब से पाई.

ऑनरेरी (सम्मानार्थ) मजिस्ट्रेटी, दिल्ली।

उर्दू शिक्षा से निवृत होकर सन् 1904 ई में कानून की जानकारी ग्रहण करने के लिए और कार्यालय के कामकाज को समझने के लिए आपको दिल्ली भेजा गया। वहां आपके लिए मजिस्ट्रेटी का पद स्वीकृत हुआ। परन्तु नौकरी करने को आपके पिता ने पसन्द नहीं किया, इसलिए आपको देहली में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया और अपने इस पद के उत्तरदायित्व को आप ने सन् 1907 से 1912 ई तक अत्यन्त बुद्धिमानी से निभाया तथा प्रसिद्धि अर्जित की।

तसव्वुफ (सूफी मत की कला) का रंग।

प्रारम्भिक युवावस्था में आपने क़ादिरया सिलसिले के प्रसिद्ध मौलाना गौस अली खां साहिब (र अ) से और मौलाना गुल हसन शाह साहिब से जो तज़करा-ए-गौसिया (पुस्तक का नाम) के लेखक भी हैं, से बेअत (सन्त की धार्मिक मार्ग दर्शक की विधि) की।

मौलाना गुल हसन साहब आपके पिता नवाब इब्राहीम अली खां के भी पीर गुरु सन्त थे देहली में आवास के समय में आप निरन्तर उनके सत्संग से लाभान्वित होते थे और मुजाहदाना प्रक्रियाएं (रियाज़तें) भी करने लगे थे।

देहली से वापसी और टोंक में आवास।

देहली से टोंक आ जाने के पश्चात आपकी नवयुवक सामाजिक जीवन के प्रति अरुचि हो गई थी। तब एकान्त ग्रहण करके अपने पीर के निर्देश पर

व्यवहार आरम्भ किया और सन्तोष को अपनाया। अपने सत्संग में सम्भ्रान्तों, विद्वानों, सन्तों को रखा और कभी-कभी रियासत के अंग्रेज़ अधिकारियों से भी मिलते थे। परिणामस्वरूप सरसिल के मेजर कर्नल बारनेट, कर्नल एण्डरसन और डी ए. ओजियर प्रेसिडेन्ट से आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर थे।

सिंहासन रोहण।

23 मई, सन् 1947 ई को नवाब सआदत अली खा का देहान्त हुआ तब बरतानिया सरकार द्वारा रियासत टोंक के एग्रिमेन्ट अथवा ट्रीटी के अनुसार साहिबज़ादा मोहम्मद फारूक़ अली खॉ साहिब को शासन के सिंहासन का उत्तराधिकारी स्वीकृत किया गया।

स्वीकृति की आशा में वाईस राय बहादुर पोलिटिक्ल ऐजेन्ट, जयपुर ने 31 मई, 1947 ई को टोंक में सभा करके उक्त घोषणा की और 14 जुलाई को आपको ईदगाह कोठी में टोंक नवाब के आसन पर विधिवत् बैठाया। कर्नल आर आर बार्नेट साहिब रेज़िडेन्ट राजपूताना ने अपने भाषण में कहा कि—"मैं यह घोषणा करने आया हूँ कि हिज़ ऐक्सिलेन्सी क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव ने आला हज़रत मुल्के मोअज़्ज़म की ओर से टोंक रियासत के सिंहासन पर साहिबज़ादा मोहम्मद फारूक़ अली खा साहिब को बैठाने की स्वीकृति प्रदान की है। इसलिए इस शुभ अवसर पर मेरा सम्मिलित होना, इस दृष्टि से कि मेरे नीजि सम्बन्ध जो इस रियासत में वाईस प्रेसिडेन्सी अवधि में रह चुके हैं, मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है।"

नवाब ने अपने जवाबी भाषा में फरमाया कि रियासत के विकास के विषय में अपने पिता और स्व. भ्राता के पद चिह्नों पर चलने का प्रयास करूंगा। मेरा अथक प्रयत्न यह होगा कि मेरे शासनकाल में रियासत, जनता और अमीरिया खानदान हर प्रकार से उन्नती करे और उन्हें आर्थिक, सास्कृतिक, शैक्षणिक उन्नती एवम् कल्याण के अवसर प्राप्त हों। आगे भाषण में फरमाया कि मैं अतिशीघ्र अपनी कौंसिल में दो नए मंत्रियों को सम्मिलित करूंगा जो स्थानीय जनता से होंगे। मेरी जनता के सच्चे [illegible] और जिनको मेरी जनता में लोकप्रियता प्राप्त होगी।

इस शासनकाल की कौंसिल ऑलिया।

1 मार्च, 1947 ई. के अन्त में जब रियासत को, टोंक गर्वनामेन्ट और उसके मेम्बरान को मन्त्रियों का दर्जा प्रदान किया गया तो वाईस प्रेसिडेन्ट के पद को प्रधानमन्त्री पद का नाम दे दिया गया। रहमान बख़्श साहिब क़ादरी, एम ए, एल एल बी (एम पी ए) प्रधानमत्री को, 'मुशीरे-जंग' की पदवी प्रदान की गई। खान् साहिब मुज़्ज़फर मोहम्मद खॉन् (खुर्जवी) मिनिस्टर माल और साहिबज़ादा मोहम्मद तोफीक़ खां साहिब होम-मेम्बर पूर्वानुसार बने रहे।

हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता और जातिय विभाजन के फलस्वरुप शरणार्थियों का आगमन

पन्द्रह अगस्त 1947 ई. के विशाल आन्दोलन के अनुसार हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के विभाजन के क्रम में रियासत टोंक की मुपिग को संवेदनशील समस्या को इसी दौर में हल किया गया। पोलटिक्ल डिर्पार्मेन्ट और दोनों डोमिनियेन्स के अधिकृत व्यक्तियों तथा परिस्थितियों के जानकार रईसों से विचार-विमर्श करके नवाब साहिब ने हिन्दुस्तानी डोमिनियेन्स में सम्मिलित होने का निर्णय लिया और तत्कालीन नवाब के इस बुद्धिमता पूर्ण निर्णय से टोंक और उसके परगनात न केवल उसके निवासियों के लिए सुरक्षा स्थल बने रहे वरन् अलवर, भरतपुर, और अजमेर के परेशान मुसलमानों के समूह के समूह शरण लेने टोंक आने लगे। तत्कालीन नवाब की दानी व सहानुभुति प्रवृत्ति से लाभान्वित होकर ना केवल टोंक में रहने लगे वरन् उन्हें रियासत टोंक की और से रोज़गार के अवसर भी उपलब्ध करा दिए गए। बहुत सौं को वन साफ कराके कृषि पर लगा दिया गया। फ़ारुक़ नगर के नाम से एक ग्राम बसाया गया और साढ़े छः हज़ार के बजट से उनके खाने पीने और सर्दी से सुरक्षा की सामग्री भी उपलब्ध करा दी गई।

देहली में टोंक के जो लोग घिरे हुए थे उनको वहाँ से सुरक्षा पूर्वक टोंक लाना

जिस समय देहली में अव्यवस्था तथा अराजकता फैल रही थी तब जो टोंक वासी दिल्ली में शरणार्थी केम्पों में थे और अपनी कठिनाईयों के दिन व्यतीत कर रहे थे, ऐसे लोगों के सम्बन्धियों की प्रार्थना पर तत्कलीन दयालु नवाब ने रियासत के

अवध में ऐसे लोगों के विशेष ट्रेन में अत्यन्त सुरक्षा सहित टोंक लाने का प्रबन्ध करवाया और जिस ट्रेन से इन लोगों का दल निवाई स्टेशन पर आने वाला था उन्हें लेने के लिए [illegible] में अत्यन्त सर्दी होने के बावजूद नवाब स्वयं स्टेशन पर जा पहुंचे और रात भर स्टेशन पर ही व्यतीत की। फिर प्रातःकाल आगन्तुकों का स्वागत किया, उनको कलमा सुना और प्रत्येक को तसल्ली देकर अपने साथ टोंक ले आए। [illegible] के बहुत से घरों में जहाँ मातम हुआ करता था वहाँ ईद से अधिक खुशी मनाई गई। जनता की इस सेवा का असर इस सूफी प्रकृति के नवाब के [illegible] में [illegible] तक स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा और आखिरत में[1] इस नेक कर्मों के कारण ही अत्यन्त पुण्य नवाब को प्राप्त होगा।

राज्य प्रबन्ध।

सिंहासन आरूढ़ होने के पश्चात अपने निजी शौक का विकास किया [illegible] का [illegible] किया और नाच रंग को पूर्णतः बन्द कर दिया। इस कार्य में [illegible] के अतिरिक्त सब प्रसन्न हुए। [illegible] में भी इनको कोई दिलचस्पी न थी। इसलिए [illegible] के स्थानों को [illegible] कृषि भूमि [illegible] में सुधार हुए। [illegible] की संख्या [illegible] में परामर्श देना और रियासत के भूतपूर्व [illegible] में जनता में राजनैतिक चेतना जागृत करना था। उदाहरण स्वरूप हिन्दी और अंग्रेजी प्रचलित करना (उर्दू व फारसी पूर्व ही से) [illegible] के नियम समझने और उनपर अमल करने तथा रोजगार के कुछ साधन पैदा करने के अतिरिक्त जनता को शासन के करीब लाना था ताकि जनता की उचित मांग पर शासन कार्यवाही कर सके।

रात्रि को जनता के हालात देखना—

अपने पूर्वजों की भांति ही मुमताजुद्दौला भी एक कर्तव्यपरायण शासक थे इसलिए अपने राज्य की [illegible] रात्रि के समय गुप्त रूप में घूमा करते

[1] मरने के पश्चात अल्लाह तआला के सामने पेशी पश्चात का सम्भावी काल

थे। कभी अर्द्धरात्री से पूर्व कभी अर्द्धरात्री के पश्चात् ताकि अपराधों की रोकथाम के सम्बन्ध मे पुलिस के प्रबन्ध, जनता के हालात, और साम्प्रदायिक विषयों का स्वयं अवलोकन कर लेने पश्चात् फिर प्रबन्ध किया जासके।

दिल्ली की अन्तिम यात्रा—

रईसों की सभा में सम्मिलित होने के लिए खान बहादुर रहमान बख्श साहिब कादरी मुशीरेजंग और मुख्य मन्त्री सहित छ जनवरी को दिल्ली पधारे परन्तु दिल्ली स्टेशन पर पहुचते ही तबियत खराब हुई और मेडन होटल पहुचने के कुछ मिन्ट पश्चात् ही 7 जनवरी 1948 ई की रात को हृदय गति रुक जाने से उनका देहान्त होगया।

इस बड़ी घटना के समय मुख्यमंत्री साहिब ने अपनी बुद्धिमानी और समझ-बूझ से काम लेकर हिन्दुस्तान की राजधानी के कार्यालय मे सूचना दिए बिना ही तत्काल टोंक की ओर प्रस्थान उचित समझा और दूसरी रात्री तक शव टोंक पहुचा दिया गया। जहा प्रातःकाल समस्त सम्बन्धियो तथा असख्य जनता ने शव यात्रा में भाग लिया और फिर नवाब को मोतीबाग के कब्रस्तान मे दफना दिया गया।

रईस का चयन

इस समय नवाब के दावेदार खड़े हुए क्योंकि स्व नवाब फारुकअली खां साहिब के कोई पुरुष सन्तान नही थी और रियासत के विधान अनुसार साहिबजादा को सिहासन पर आसीन नही कराया जा सकता था।

सिहासन के एक मात्र अधिकारी साहिबजादा ईस्माईल अली खां साहिब थे जो स्व नवाब के मंझले भाई थे और रियासत के उत्तराधिकारी साहिबजादा अब्दुल हफीज खां साहिब (स्व.) के बड़े पुत्र साहिबजादा मोइनुद्दीन खां साहिब थे, जो दूसरे दावेदार हुए। परन्तु उनके पिता का देहान्त उनके दादा नवाब इब्राहीम अली खां के जीवन ही मे हो गया था इसलिए इस्लामी कानून से उन्हे उत्तराधिकारी नही माना गया। नवाब फारुक अली खां साहिब को अत्यन्त प्रातःकाल दफनाने से पूर्व ही [illegible] के समक्ष [illegible] [illegible] सहमति और रियासत कानून के अनुसार साहिबजादा

मोहम्मद इस्माईल अली खाँ साहिब को इण्डियन यूनियन ने वैध उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिया। और अज़ीज़ुद्दौला के खिताब से सिंहासन पर बैठाया।

अज़ीज़ुद्दौला वज़ीरुलमुल्क नवाब

मोहम्मद इस्माईल अली खाँ सौलते जगं

(सिंहासन रोहण फ़रवरी 1948 ई.)

जन्म व शिक्षा—

आपका जन्म सरकारी प्रासाद, नज़रबाग में हुआ। तब नवाब अमीनुद्दौला का शासनकाल था। उनको अपनी समस्त सन्तानों में नवाब मोहम्मद इस्माईल अली खाँ[1] से अत्यन्त प्रेम था इसलिए आप की शिक्षा-दीक्षा हेतु प्रारम्भ से ही उच्चस्तर के प्रबन्ध किए गए थे।

कुरआन शरीफ़ और उर्दू की शिक्षा तो अल्प आयु में ही प्रासाद में हुई। मौलवी अब्दुल्ला खाँ साहिब और अन्य हाफ़िज़ों की देखरेख में आपकी प्राथमिक धार्मिक शिक्षा भी होती रही। अंग्रेजी शिक्षा हेतु [illegible] तथा पाश्चात्य सभ्यता की शैली सिखाने बावत एक अंग्रेज मि. मेड की [illegible] नियुक्त किया गया। पाठ्यक्रम की अंग्रेजी तथा गणित सिखाने के लिए मि. मेयट, मोहम्मद हुसैन साहिब और [illegible] द्वितीय मास्टर दरबार हाई स्कूल टोंक की [illegible] में परिवर्तित कर दिया गया। स्थानीय प्राथमिक शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात आपको मेयो कालेज अजमेर में प्रवेश दिलाया गया। आपके आवास का प्रबन्ध [illegible] में हुआ। वहां आपने डिप्लोमा तक शिक्षा ग्रहण की।

फिर कालेज की शिक्षा से निवृत्त होकर भारत के न्याय विभाग के प्रशिक्षण हेतु [illegible] असिस्टेंट कमिश्नरी में कार्य सीखा, फिर हैदराबाद (दक्कन) के [illegible] कार्यालय में प्रशिक्षण लिया और यह सब कार्य पूर्ण करने के पश्चात् टोंक पधारे और यहीं रहे।

---

[1] नवाब इस्माईल अली खां का देहान्त 21-11-74 हो गया है।

अज़ीज़ुद्दौला वज़ीरुलमुल्क नवाब
मोहम्मद इस्माईल अली खाँ सौलते जंग

आन्दोलन काल—

यह वह ज़माना था कि रियासतों को हिन्दुस्तान की सरकार में सम्मिलित करने की समस्या विचाराधीन थी। दुर्भाग्यवश पिछले कुछ वर्षों से रियासत टोंक अव्यवस्था के दौर से गुज़र रही थी और इसके हालात केन्द्रीय सरकार के नोटिस में आ चुके थे अतएव सुधार हेतु हस्तक्षेप करना आवश्यक हो गया था।

अंग्रेज़ सरकार ने यू. पी. प्रान्तीय सेवा के एक सेवा-निवृत्त डिप्टी कलेक्टर को जो उस समय रियासत कोटा के प्रधानमंत्री थे प्रशासक बनाकर सन 1948 ई. में टोंक भेजा। आपका नाम राय बहादुर डॉ. रामबाबू सक्सेना था। आप एम. ए. एल. एल. बी. होने के अतिरिक्त उर्दू भाषा के डॉ. और प्रसिद्ध विद्वान भी थे और एक प्रमाणित पुस्तक (तारीखे उर्दू) भी लिखी है।

आपने रियासत के भीतरी हालात का अवलोकन कर हिन्दुस्तान को सूचित किया और कुछ अवधि तक रियासत की शासन व्यवस्था का संचालन किया।

सर्वप्रथम वित्तीय मंत्री को जो मुख्यमंत्री भी थे अर्थात रहमान बख्श कादरी साहब को उनकी पूर्व सेवा में यू. पी. सरकार में वापस भेज दिया गया और शेष दो मंत्रियों से कौंसिल का संचालन किया। इस दौरान डायरेक्टर आफ एजुकेशन टोंक के पद को समाप्त कर दिया गया, और शिक्षा का सम्बन्ध चीफ डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, कमिश्नर राजस्थान से होने वाला था इसलिए 20 अप्रैल 1949 ई. की कौंसिल में जिस में नवाब साहिब स्वयं तशरीफ फरमाते थे गृहमन्त्री साहिबज़ादा मोहम्मद तौफीक खाँ मरहूम मन्त्री प्रभारी शिक्षा विभाग के प्रस्ताव पर मेरा[1] स्थानान्तरण निम्बेहड़ा किया गया और हैडमास्टर निम्बहेड़ा को जो बाद में पाकिस्तान चले गये हैडमास्टर पद पर टोंक बुला लिया गया। इस कौंसिल में जो रियासत टोंक की अन्तिम कौंसिल थी और भी कई महत्वपूर्ण मामलात निर्णीत हुए।

[1] पुस्तक के लेखक मोहम्मद एजाज़ खाँ।

फ़ारमर राजस्थान राज्य की स्थापना और उससे रियासतों का सम्बद्ध (एफ़िलिएशन)

1 मई 1948 ई में 11 रियासतों के सम्मिलित होजाने पर राजस्थान यूनियन का जन्म हुआ। इन रियासतों में रियासत टोंक भी एक रियासत थी। टोंक को एक ज़िला मुख्यालय का स्वरुप प्रदान किया गया। जिसमें अलीगढ़ नैनवा और इन्द्रगढ़ की तहसीलें सम्मिलित की गई। इस प्रकार प्रशासक का अस्थाई दौर प्रारम्भ हुआ। कौंसिल के दो सदस्यों ने अपनी कौंसिल और अपनी रियासत को सरकार को खुदा हाफ़िज़ कहा तत्कालीन रईस ने 30,000 रुपये माहवार का वज़ीफ़ा स्वीकार करके रियासत के प्रबन्ध सम्बन्धी उत्तरदायित्व से मुक्ति पाई

इस प्रकार 131 वर्ष तक जीवित एवम् स्वर्णिम जीवन के पश्चात ज़माने के हालात के साथ यह अंग्रेज़ दौर की रियासत एकता एवम् अखण्डता तथा स्वतन्त्रता के दृष्टिगत जनतंत्रीय प्रबन्ध व्यवस्था में सम्मिलित हो गई। टोंक रईस का शासन केवल अपने प्रासाद नज़रबाग की चार दिवारी तक सीमित हो गया परन्तु इसपर भी नवाब शेरों के शिकार शतरंज, क्रिकेट, तथा टेनिस खेलने में रुचि लेते रहे और साहित्यिक गतिविधियां मात्र शायरी तथा मुशायरे तक सीमित रही।

फॉरमर राजस्थान के अस्तित्व में आने के कुछ वर्ष पश्चात् राजस्थान की बड़ी रियासतों के इसमें सम्मिलित हो जाने पर वृहत राजस्थान की जनतंत्रीय शासन व्यवस्था जो भारतीय सरकार दिल्ली के आधीन थी अस्तित्व में आई। जयपुर जोधपुर, बीकानेर जैसी बड़ी रियासतों के सम्मिलित हो जाने पर राजस्थान राज्य सम्पूर्ण माना गया और इनकी राजधानी नगर जयपुर को (इसकी सुन्दरता विशालता जल की सुलभता, दिल्ली से समीपता, जागृत एवम् शिक्षित रईस जयपुर के व्यक्तित्व एवम् उनकी महत्वता के कारण से) बनाया गया महाराजा साहिब उदयपुर के देहान्त पर और फॉरमर राजस्थान से वृहत राजस्थान बनने पर महाराणा साहिब जयपुर को राजप्रमुख के पद पर नियुक्त किया गया और सन 1957 ई

मे आबू का क्षेत्र जो पूर्व मे बम्बई मे था राजस्थान मे सम्मिलित किया गया था सिरोंज (मालवा) का क्षेत्र मध्य प्रदेश की सरकार को दे दिया गया

लगभग 55 वर्ष तक रियासत का जीवन व्यतीत कर और कुछ [illegible] अन्ना के केंसर मे ग्रस्त रहकर नवाब मोहम्मद इस्माईल अली खाँ 21 नवम्बर [illegible] को जुम्मेरात के दिन समय [illegible] बजे रात्रि को परलोक सिधार गए [illegible] शुक्रवार की नमाज़ मे पूर्व पूर्वजों के कब्रिस्तान जो मातवखाना मे है इनको दफ़ना दिया गया इनके कोई सन्तान नहीं थी [illegible] सरकार को [illegible] इनकी पत्नी श्रीमति मरजाना बेगम साहिबा और [illegible] बेगम जो सिरोंज वाली बेगम के नाम से प्रसिद्ध [illegible] सरकार मे आवश्यक माना गया। रियासत और रईस की समाप्ती पूर्व मे ही हो गई थी, इसलिए स्व. नवाब के दो सौतेले भाइयों मे से [illegible] नवाब रईस बनाए जाने के [illegible] सौतेले भाई [illegible][1] सर्वाधिक इनकी [illegible] [illegible]

अज़ीज़ुद्दौला के काल के प्रसिद्ध एवम् विख्यात व्यक्तित्व

रियासत [illegible] परन्तु [illegible] [illegible]

[1] नवाब मोहम्मद अली खाँ का रोजनामचा [illegible]

[illegible] का लावण्य प्रदान करती रहती है उसी प्रकार प्रसिद्धि का आसन भी रिक्त नहीं रहता है

इसलिए सन् 1916 ई में अर्थात इब्राहीमी शासनकाल की पराकाष्ठा के समय में अपने प्रकार का एक लोकप्रिय जन मानस टोंक में नहीं वरन् तहसील शुजाबाद ज़िला मुल्तान के एक ज़मींदार परिवार गोगया में 16 जनवरी 1916 में पैदा हुआ, उस समय कौन कह सकता था कि वह आगे चल कर हाड़ौती के पठार के बाग में **जिसे** बनास के जल ने तीन ओर से अपनी सफ़ेद बांहों में ले रखा है बुलबुल बनकर **चहकेगा।** उसकी [illegible] टोंक की बस्ती में, मुशायरों की महफिल में चन्दन **मार्केट** में और [illegible] पम्प पर सेठ चन्दन के नाम से पहचानी जाएगी।

रियासत टोंक के प्रसिद्ध व्यक्ति खानदान अमीरिया में अत्यधिक हुए हैं। [illegible] पर सबसे पहले **साहिबज़ादा सर उबैदुल्ला ख़ाँ साहिब (स्व.)** थे [illegible] नाईब रियासत के नाम से अब तक भी याद किया जाता है।

आपने रियासत के प्रारम्भिक काल में जहाँ दरबार हाई स्कूल व राजकीय चिकित्सालय [illegible] बाग के कलब व राजसी बंगले जो पहाड़ी पर स्थित हैं, रेडीवाश के सुन्दर भवन बनवाए वहां अपने आवासी प्रासाद भी निर्मित करवाए जो देखने योग्य हैं, जो [illegible] नाईब साहिब की हवेली के नाम से प्रसिद्ध हुई। इन दो में से एक कोठी चन्दन साहिब भारती के भाग्य में लिखी थी। किसी शायर ने सत्य कहा है

آگاہ اپنی موت سے کوئی بشر نہیں
سامان سو برس کا ہے پل کی خبر نہیں

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।

सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं।

अर्थ – *किसी व्यक्ति को अपनी मृत्यु का ज्ञान नहीं है फिर भी वह सौ वर्ष का प्रबन्ध करता है जबकि उसे एक पल के बारे में भी ज्ञान नहीं कि कब क्या हो जाएगा।*

इन भव्य हवेलियों के निर्माण के समय जो [illegible] के उत्कर्ष में निर्मित हुई और जिनके लिए बहुरंगी मकराना के पत्थर अर्थात संगमरमर मारवाड़ से अत्यधिक व्यय से उपलब्ध करवाए गए होंगे और सैकड़ों शिल्पियों, कारीगरों और श्रमिकों के हाथों से ये हवेलियां तैयार हुई होंगी। जिनमें नाईब रियासत सर फिरोज़ [illegible] भी कभी आवास करते थे और फिर उनके बाद उनके साहिबज़ादे अब्दुल अलीम खां साहिब और साहिबज़ादे अमानतुल्लाह खां साहिब ने आवास किया फिर इन के अब्दुल अलीम खां साहिब के साहिबज़ादे मोहम्मद अमीर खां साहिब ए डी सी [illegible] बॉर्नेट क्रिकेट क्लब ने आवास किया।

इन हवेलियों को जिन पर मुग़लिया महल भी रश्क करते थे तीसरी व चौथी पीढ़ी में इसी शुजाआबाद जिला मुल्तान के सुपुत्र के भाग्य से [illegible] कर लिया गया और आज वहीं भीतरी भाग में वह स्वयं रहते हैं तथा [illegible] भाग में सामान्य [illegible] है दूसरी हवेली में खादी भण्डार का कारखाना लगा हुआ है।

यह भी खूब हुआ कि भाग्यशालियों की [illegible] की और इसे जनता के लिए लाभकारी भी बनाया [illegible] विशालता तथा [illegible] की प्रशंसा भी [illegible] साहिब [illegible] में जहाँ [illegible] भी पर नहीं मारता था वहाँ आज प्रत्येक विशेष तथा [illegible] सरकार के कल्याणकारी कार्यों में [illegible] होते हैं चन्दन साहिब की इस विशालता ने ही उन्हें व्यापारी सेठों की परिधि से निकाल कर प्रसिद्ध व्यक्तियों की पंक्ति में ला खड़ा किया जो न्याय संगत है।

आप एक साहिब-ए-दीवान शायर थे और [illegible] और इस शमा के चारों ओर [illegible] परवाने की भांति [illegible] हैं।

सेठ उत्तम चन्द 'चन्दन'[1] [illegible] शुजाआबाद जिला मुल्तान (पंजाब) के एक [illegible] परिवार [illegible] के यहाँ पैदा हुए फिर इस कस्बे के स्कूल में शिक्षा पाई [illegible] जमादारी के कार्यों में हाथ बटाने लगे सन् [illegible] में [illegible] के देहान्त के पश्चात् जागीर का समस्त उत्तरदायित्व आप पर ही आ गया।

---

[1] दिनांक 4-9-1989 को इनका देहान्त हो गया है।

परन्तु शायरी का चस्का जो उन्हें अपने विद्यार्थी जीवन से ही लग गया था, यह मर्ज़ जीवन बढ़ता ही गया। आपने अपना काव्य नाम 'चंदन' सामयिक ही रखा।

चन्दन को उर्दू में सन्दल कहते हैं। इस का वृक्ष पंजाब या सिन्ध में नहीं लगता है। साहिल मालाबार की उच्च पहाड़ियों पर उगता है। इस वृक्ष की लकड़ी अपनी भीनी-भीनी सुगन्ध के कारण पसन्द और आदरणीय मानी जाती है। इसलिए इसका प्रयोग पूजनीय स्थानों, मन्दिरों, कब्रों और चिकित्सालयों में किया जाता है। किसी शायर के कथनानुसार—

درد سر کے واسطے سُنتے ہیں صندل ہے مفید

اس کا گھسنا اور لگانا درد سر یہ بھی تو ہے

दर्द सर के वास्ते सुनते हैं सन्दल है मुफ़ीद,

इसका घिसना और लगाना दर्दे सर यह भी तो है।

चंदन साहिब ने इस वृक्ष की लकड़ी के गुणों के दृष्टिगत अपना काव्य नाम 'चन्दन' रखा।

यह लकड़ी वैसे तो सुगन्ध देती है परन्तु घिसकर और पिसकर और भी अधिक सुगन्ध देती है। अन्यों के लिए लाभकारी और राहत देने वाली होती है। इसे जल में भिगोकर पीने से रक्त शुद्ध होता है और जलाने पर कमरे को सुगन्धित कर देता है। इस जैसे गुण अपने अन्दर पैदा करने के लिए चन्दन साहिब स्वयं के लिए तो कहते हैं—

میں کیسے نہ مہکوں محبت میں تیری

کرم سے مجھے تو نے چندن بنایا

मैं कैसे न महकूं मोहब्बत में तेरी,

करम से मुझे तूने चन्दन बनाया।

अर्थ— *इस शेर की दूसरी पंक्ति में करम का अर्थ कृपा से है।*

आपका व्यक्तित्व, शायर होने के अतिरिक्त शायर नवाज़ और उर्दू के क़द्रदान, जैसे गुणों से युक्त है।

सन् 1947 ई. के महान् आन्दोलन से दो-चार होने पर उन्हें अपनी प्रिय मातृभूमि छोड़ना पड़ी। पंजाब से पहले देहली आए और वहां से राजस्थान की ओर क्यों आकर्षित हुए और कैसे टोंक में आ बसे यह एक अलग विषय है।

सन् 1951 ई. में टोंक आकर पैट्रोल पम्प की ऐजेन्सी ली और मोटरों के क्रय-विक्रय का कार्य आरम्भ कर दिया। परन्तु रोज़गार अर्जित करने के साथ-साथ उन्हें टोंक-वासियों के उर्दू ज्ञान और शायरी का शौक़ भी पसन्द आया। इसलिए यहीं से आपकी शायरी ने भी प्रसिद्धि पाई। चूंकि शायरी में दक्षता के लिए कठिनाइयों और समस्याओं से भी गुज़रना आवश्यक है। इसलिए इसे भी बहुत कुछ सहकर और उसकी पूरी ट्रेनिंग लेकर ही टोंक आए होंगे। इसलिए यहा के शान्त जीवन में उनकी शायराना प्रकृति का रंग हिना के समान बस जाने के बाद खूब ही रचा। तब आपने उर्दू की एक साहित्यिक संस्था—'बज़्मे-चन्दन' के नाम से स्थापित की और जब वह समय अनुसार चल न सकी तो फिर अन्जुमन तरक्क़ी उर्दू की सेवा जीवन पर्यन्त करते रहे।

मैंने चन्दन साहिब के टोंक जीवन का अध्ययन कभी दूर से और कभी समीप से किया है। आपमें एक गुण यह पाया जो दूसरे सेठों में नहीं देखा जाता है और वह है आपके व्यक्तित्त्व का आकर्षण। प्रकृति से स्पष्टवादी, सादा जीवन और सत्य बोलने वाले हैं। व्यवहार उचित है। किसी भी प्रकार स्वयं की प्रशन्सा को अच्छा नहीं समझते और न अपने जैसे नियम वाले (हम मशरब) मित्रों को एकत्रित रखते।

आपका जीवन नियमित, पूजा-पाठ युक्त है। अपनी हलाल रोज़ी को पेट्रोल-पम्प के प्लान्ट से परिश्रम के साथ अर्जित करते हैं और शायरी की उड़ान रात्री में लेते थे।

अज़ीज़ुदौला नवाब मोहम्मद इस्माईल अली खां साहिब के संक्षिप्त दौर में उर्दू के शायरों की इतनी बहुतायत हो गई थी, जो कभी न थी। इसलिए इनमें से कुछ प्रसिद्ध शायरों के नाम तो लिखे जा सकते हैं परन्तु उनकी शायरी में विशेषता क्या है, यह तो कोई शायर ही लिख सकता है। स्व. नवाब स्वयं भी अच्छे शैर कह लेते थे और अपना काव्य नाम 'ताज' फरमाते थे।

इस काल के जीवित शायरों में है—बिस्मिल सईदी साहिब,[1] मख्मूर सईदी साहिब, साहिल साहिब,[2] खन्दा साहिब[3], दिल साहिब,[4] बज़्मी साहिब, फाख़िर साहिब[5], राशिद साहिब एवम् मुराद साहिब[6]।

इस दौर में जो महानुभाव अपने व्यापार या धनवान होने से प्रसिद्ध हुए हैं, वे ये हैं—हाजी सेठ ईद **मोहम्मद**[7] साहिब, हाजी सुल्तान मोहम्मद साहिब, सेठ धना लाल जी बम, पहलवान सेठ सुजान मल जी दासोत, सेठ बहादुर मल जी (बी. कॉम), सेठ प्यारे लाल जी उर्फ रेशमी सेठ, सेठ प्रहलाद दास जी चक्कीवाले,। शरणार्थी सिन्धी महानुभावों में सेठ खट्टन मल जी बीड़ी वाले प्रसिद्ध सेठों में हैं।

सेठों की श्रेणी में **हाजी सेठ ईद मोहम्मद साहिब** अपना उदाहरण आप थे। टोंक के मुसलमानों में सबसे अधिक धनवान और लाभकारी होने पर भी अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति थे। घर पर मोटरें होने के बावजूद पुरानी, टोंक से अपने कारखाने, बीड़ी निज़ाम फैक्ट्री तक सदैव पैदल आते थे। नगरपालिका के अब (नगर परिषद), टोंक के अध्यक्ष होने पर भी यही सादगी थी। मार्ग में प्रत्येक विशेष और साधारण व्यक्ति उन्हें रोककर अपना उद्देश्य बयान कर सकता था। वार्ता के दौरान एक व्यक्ति या कुछ आदमी उन्हें चाहे कुछ भी कह दें, वह कभी क्रोधित नहीं होते थे और ख़ामोश होकर अपनी रजवाड़ा शाही हिन्दी में 'बापडा **समझे कौने**' कहने पर ही सन्तोष करते थे।

टोंक के इस अत्यन्त लाभकारी एवम् लोकप्रिय साधारण व्यक्ति का देहान्त 75 वर्ष की आयु में 11 अक्टूबर, 1975 ई. को हो गया, जिसका गरीबों को अत्यन्त दु:ख हुआ।

---

[1] बिस्मिल सईदी का 1974 ई.,

[2] साहिल का 1988 ई.,

[3] खन्दा का 7-9-1991,

[4] दिल अय्यूबी का 13-4-1990,

[5] फाख़िर का 1-1-1986,

[6] मुरुद सईदी का 24-5-1989,

[7] सेठ ईद मोहम्मद 11-10-75, को देहान्त हो गया है।

कायस्तों की स्वर्णिम सेवाएँ

खुदा की कुदरत है कि इस रियासत की स्थापना के क्रम में जहा रायदाता राम साहिब वज़ीरे रियासत और मीर मुन्शी लाला निरंजन लाल जी साहिब वकीले रियासत (जिनके हाथों रियासत टोंक की स्थापना हुई) के नाम आते हैं। वहाँ इसके अन्त का सेहरा भी एक कायस्त राय बहादुर, डाक्टर रामबाबू सक्सेना के सर बंधा था।

रियासत के इतिहासकार भी लाला बसावन लाल जी थे। जिन्होंने "अमीरनामा"[1] फारसी में रचा था। (इसका उर्दू में अनुवाद हकीम सैय्यद सईद मिया ने किया)।

इनके अतिरिक्त माल विभाग, वित्तीय विभाग, कार्यालय सेना व पुलिस में कायस्त कार्यकताओं की योग्यता की छाप थी और इसलिए उनका महत्व था। यह क्रम उनकी दो-तीन पीढ़ियों तक चला।

परन्तु राजस्थान बन जाने पर उनकी नई नस्लों ने पहली बार टोंक से बाहर की लाभकारियों को अपने स्थानान्तरण के फलस्वरूप देखा और तभी से बाहर कहीं न कहीं बसते चले गए। उनके सभी परिवार यू. पी. से आकर टोंक में बसे थे और फिर यू. पी. न गए वरन् राजस्थान के विभिन्न नगरों में बस गए और कुछ घर अब भी टोंक में मौजूद हैं।

■ □ ■